

# ***Divine Revelations***

***Ram Naam Chitta Sadhana--1***

***राम नाम चित साधना-1***

***Inspirations from Teachings of  
Swamiji Satyanandji Maharaj  
(1868-1960)***

***स्वामीजी सत्यानन्दजी महाराज***

***की शिक्षाओं पर आधारित***

***(1868-1960)***

***Dr.Gautam Chatterjee***

***Series Editor: Sunita Ganjoo***

***Translation: Anupama Mahajan***

**DEDICATED TO**

**Param Guru Ram  
Sat Guru Swamiji Satyanandji Maharaj Shree  
Param Pujya Premji Maharaj Shree  
Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree**

**समर्पित**

**परम गुरु राम  
सद्गुरु स्वामी सत्यानन्दजी महाराजश्री  
परम पूज्य प्रेमजी महाराजश्री  
महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री**

## AT THY FEET

***In the journey of Ram Naam Chitta Sadhana, the divinity provides you with many visions, thoughts and words. Those are basically unknown to the self and gives unique perspective of learning about life, living and journey beyond body. These Divine Revelations cannot be of mine but just received as a medium.... at the feet of my Gurujans who possess my consciousness.***

**Gautam Chatterjee  
1st June 2015**

### ***आपके श्री चरणों में***

***राम नाम चित साधना की यात्रा में, दिव्यता आपको बहुत दृष्टान्त, विचार व शब्द प्रदान करती है। स्वयं उनसे आमतौर पर अनभिज्ञ होता है और वह जीवन को जानने, जीवन जीने व देह के पार यात्रा का एक अद्भुत सा परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है। यह दिव्य रहस्योद्घाटन मेरे नहीं हो सकते पर केवल एक यंत्र की भाँति इन्हें प्राप्त किया है..... मेरे गुरुजनों के श्रीचरणों में जिनके अधिकार में मेरी चेतना है।***

**गौतम चैटर्जी  
१ जून २०१५**

## **AUM GANESHAYE NAMHA**

*Attributes of Siddhi.*

*Ushers in Mangalik*

*Measure your intellect in AUM*

*Ganeshji is Shubha karma giver*

*All round Ananda HE provides.*

*No negations He tolerates*

*Emotional cleansing He provides*

*Shanti and Mangalik HE remains*

*He removes all stumbling blocks*

*Assures Shubhamaye life*

*Yield to Him for any worship.*

*Essence and symbol of Siddhi He is.*

*Namashar O lord Ganesha.*

*Aatmik submission to You*

*Maha Mangalik You are.*

*Hindrances you remove and put us on the track of intellectual excellence*

*All roads for mortal siddhi and eternal salvation start from you. ATMIK pranam O Ganesha*

## ॐ गणेशाय नमः

सिद्धि के गुण

मंगल का प्रवेशक

ॐ में आपश्री बुद्धि को मापिए

गणेशजी शुभ कर्मों के दाता

सम्पूर्ण आनंद प्रदान करने वाले।

कोई नकारात्मकता नहीं सेहन करते

भावनाओं का शुद्धिकरण प्रदान करते

शान्ति व् मांगलिक के प्रतीक

वे हर विघ्न हटाते

शुभमय जीवन का आश्वासन देते

किसी भी उपासना हेतु उनके शरणागत हो जाओ।

वे सिद्धि के प्रतीक व् सार हैं।

नमस्कार ओ भगवन गणेश

आपश्री को आत्मिक समर्पण आपश्री महामंगलिक हैं

विघ्नों के हर्ता हैं तथा हमें बुद्धिमता की

उत्कृष्टता के मार्ग पर प्रशस्त करते हैं

नश्वर सिद्धि और शाश्वत मुक्ति का मार्ग आपश्री से ही आरम्भ होता है।

आत्मिक प्रणाम ओ गणेशजी

\*\*\*

## RAM NAAM CONSCIOUSNESS

*Consciousness of self being kriya sheel and towing Ram Naam at first stage purifies the body and then mend jeevatman and its karma. Swamiji Maharajji informed us to do unstoppable ram naam jaap and to discharge all the duties which are assigned to jeevatman. Thus he meant churning of jeevatman with highly contemplative Ram naam ajapa jaap to allow the consciousness to travel from the state of jeevatman to pure consciousness of atman which has no baggage of karma and which is slowly transcending to the consciousness called paramatamaye or ramamayeness. For all this divine consciousness guides from within and outwardly an internally to eternity we are only to do ram naam jaap. Such a wonderful Ram Naam marga shown by our gurujans for our elevations. Such love of eternity Swamiji Maharaj spreads even today to heal all and facilitate all with emancipation from life and death. He awaits in Ram Loka.*

*Jai Jai Ram.*

## राम नाम चेतना

स्वयं की चेतना क्रियाशील है और पहले स्तर पर राम नाम का जपना देह का पवित्रीकरण करता है और फिर जीवआत्मान व उसके कर्मों का सुधार करता है। स्वामीजी महाराजश्री ने हमें अवगत करवाया कि सतत राम नाम का जाप हमें करना है और जो भी कर्तव्ये हमें निहित हैं वे पूर्ण तरह से निभाने हैं। उनका तात्पर्य था के जीवात्मन आलोड़न राम नाम अजपा जाप का बहुत ध्यानपरायण करके ताकि चेतना जीवात्मन के स्तर से होकर आत्मा के पावन चेतना पर जाए जहाँ कर्मों का कोई बोझ नहीं है और जो धीरे से राममय या परमात्माय चेतना पर पहुँचती है। इन सब के लिए यह दिव्य चेतना भीतर से मार्गदर्शन देती है और भीतर से शाश्वतता की ओर अग्रसर होने के लिए बाहर से हमें केवल राम जाप करना है। ऐसा सुन्दर राम नाम मार्ग हमारे गुरुजनों ने हमारे उत्थान के लिए दिखाया है। स्वामीजी महाराजश्री आज भी दूसरों को आरोग्य करने के लिए और सभी को जीवन मरण के चक्कर से मुक्त करने के लिए दिव्यता के लिए ऐसा प्रेम वितरित करते हैं। वे राम लोक में इंतज़ार करते हैं।

जय जय राम

\*\*\*

*Whenever serious pain and sufferings visit me, I feel God has not forgotten me and rather attending me with great attention. Thank you O GOD!*

जब भी गहन पीड़ा व वेदनाएं मुझसे भेंट करने आती हैं, मुझे महसूस होता है की परमेश्वर मुझे भूले नहीं हैं अपितु अत्याधिक ध्यान से मेरा खयाल रख रहे हैं। हे परमेश्वर आपश्री का अतिशय धन्यवाद।

\*\*\*

*Spiritualism is a matter of introspection and self talk. This is to fathom unknown inner atman swarup travelling on shraddha and viswas and end results are to be realized. Inner consciousness Need to be fathomed. Never argue it outwardly. RAM RAM*

आध्यात्मिकता स्वयं का मनन करना व स्वयं से वार्तालाप करना है। अज्ञात आत्मा स्वरूप श्रद्धा व विश्वास पर आरूढ़ होकर जानना है और अंतिम परिणामों को जानना है। भीतर की चेतना की गहराई को मापना है। कभी बहार बहस नहीं करनी। राम राम

\*\*\*

*O Yesterday I salute you for all that you gave and taught me. Yet you are past beyond my control. Dear Today I almost took half a day to realize its Today and now that beautiful day is half wasted I am left with few hours to work on today. Tomorrow I do dream but yet to see. So few hours of today is about making some changes which will script my tomorrow. Hurry up do paint your beautiful world. Ram Ram*

ओ मेरे कल जो भी तुमने मुझे दिया है व सिखाया है उसके लिए मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। पर तुम भूत हो और अब मेरे बस में नहीं। मेरे प्रिय वर्तमान मैंने आधा दिन लग भग लगा दिया यह अनुभव करने के लिए की यह वर्तमान है और क्योंकि यह अतिशय सुन्दर दिन बेकार हो गया है मेरे पास अब कुछ ही घंटे बाकी हैं कि मैं अपने वर्तमान पर कार्य कर सकता हूँ। कल के लिए मैं स्वप्न ज़रूर देखता हूँ पर वह अभी देखना है। सो कुछ ही घंटे हैं कि मैं अपने जीवन को बदल सकता हूँ ताकि मेरा भविष्य लिखा जा सके। आप भी अपना सुन्दर संसार रचने के लिए जल्दी करें। राम राम

\*\*\*

## **MELODY OF RAM NAAM**

*The melodious Ram Ram*

*Is the Celestial Hymn.*

*It's like nectar  
for the pious kin.*

*It's divine jaap Ram Ram deep within.  
Raaaauuummm.*

## **राम नाम की मधुर धुन**

*मधुरमय राम राम*

*एक दिव्य भजन है।*

*वह पवित्र आत्माओं के लिए*

*मधु की तरह है ।*

*वह गहराई में किया क्या दिव्य जाप राम राम है।*

\*\*\*

## **POWER OF RAM NAAM**

*Utterance which rings within is eternal Naad Ram Ram. The silence within has tides of various kinds---- Inter woven with noiseful chaos and silenced silence. Ram Ram is eternal silence and sound that smoothens the mind and inner Manas. So deeds of pious kind get pronounced as motivated sonic phenomenon. Tides of sacred thought surface with Ram Naam Jaap. Then noise within loses its chaotic voice and empattern various sub zero frequency of soundlessness. The zig zag mind is tied within. The naughty senses are put to sleep. Cunning mind sets are deleted With RAM NAAM. ENERGY OF CREATION with RAM NAAM uncreates the hindrances. Ram Naam Effaces mortal relation. Ram ram elevates one and all RAM RAM SIMRAN IS SALVATION FROM LIFE AND DEATH BEYOND SOUND AND SILENCE. This is power of Jaap. This is power of Ram Naam.*



## राम नाम की शक्ति

जो अंतर्मन में उच्चारण होता है वह दिव्य नाद राम राम है । अंतर्मन के मौन में भी विभिन्न तरह की तरंगें हैं -अराजकता के शोर में गूँथा हुआ मौन का भी मौन ।राम राम दिव्य मौन है और ऐसी ध्वनि जो मन व भीतरी मानस को शांति प्रदान करे सो इस ध्वनि के प्रतिभास से प्रेरित हमारे पावन कृत्य और उभर जाते हैं ।राम नाम जाप द्वारा पवित्र विचार ऊपरी तय पर आ जाते हैं । तब भीतर का जो शोर है वह अपनी अराजकता खो देता है और शून्य से भी नीचे विभिन्न मौन की आवृतियों को स्वरूप देता है ।नटखट इंद्रियों को सुप्त कर दिया जाता है ।कुटिल मानस विचार *राम नाम* द्वारा मिटा दिये जाते हैं । राम नाम व सृष्टि की क्रियात्मक शक्ति सभी बाधाओं को दूर कर देती है । राम नाम नश्वर सम्बंधों को भी साफ़ कर देता है तथा एक नहीं सब का उत्थान करता है । राम सिमरन ही मौन व ध्वनि के पार जीवन व मृत्यु से मुक्ति दान कर सकता है ।ऐसा बल है जाप में । यह शक्ति है राम नाम की ।

\*\*\*

*Excellence is realized in nostalgia! Beauty of a frozen time is relished from hind side. Best of all is realized in history. But if we look at life as a moving phenomenon then anticipate the best might be coming in FUTURE HISTORY!*

उत्कृष्टता का अनुभव बीती हुई बातों में होता है! समय जो जम चुका है उसकी सुंदरता उसके बाद से ही आनंद लिया जाता है। सबसे सर्वश्रेष्ठ इतिहास से ही अनुभव में आता है। पर यदि हम जीवन को एक गतिशील घटना मानें और आशा रखें कि अभी सर्वोत्तम तो भविष्य के इतिहास में आना है!

\*\*\*

*River never reverses  
Yet Water comes back.  
Life is all about RIVER  
On the move  
that never reverses.  
As young rivulet  
I rolled through mountain  
Took along stones and pebbels*

*Roared down the slope  
Never shared pain  
Rather spread love  
As if teen  
moving, splashing and flashing.  
Then became sonorous song  
Spread life and youthfully  
Spread green and cultivated life.  
But in return got back  
Dirts of civilization  
That made me filthy, dirty and slow  
Yet I smiled and moved.  
Down the journey I was even  
Iconized and religious left overs remains  
I was made to carry and pained.  
I was big, deep and nearing sea  
I thought quickly I merge with sea so that  
Soon I become cloud  
And come down to drench the earth  
And merge as river  
As again I have to serve  
The civilization make the world green  
With hope  
And again to carry the filth  
So that civilization can thrive  
As am a friend of all  
No matter only few remember  
me today  
As on time line all forget  
The friends of past and present acquaintances are dearer.  
But i must flow as river  
To serve all.  
None can reverse the river  
.... as I flow by  
I love you  
O civilization.*

*नदी कभी पीछे नहीं बहती*

*किन्तु पानी वापिस आता है।*

जीवन एक नदी की तरह है

सदा गतिशील

जो कभी पीछे नहीं मुड़ता।

जब एक छोटी सी नदी की भांति था

तो पहाड़ों से होता हुआ

पत्थरों व कंकड़ अपने संग लेकर

पहाड़ी के नीचे बहा

कभी दर्द नहीं बांटा

केवल प्रेम विस्तृत किया।

यौवन में जैसे

बहते हुए, छपाका मारते हुए चमकते हुए

एक मधुर संगीत बना

जीवन वितरित किया तथा यौवन में हरियाली

बखेरी तथा जीवन विकसित किया।

पर इसके फलस्वरूप

सभ्यता की मैल

जिसने मुझे मैला गन्दा और धीरे

कर दिया।

में फिर भी मुस्कुराता हुआ चलता रहा।

यात्रा के दौरान मुझे भी पिछले धार्मिकता  
के बचे कूचे अवशेष मिले जिनका मुझे बोझ  
उठाना पड़ा और पीड़ा सही।  
मैं विशाल था , गहरा तथा समुद्र के निकट  
मैंने सोचा की जल्दी से समुद्र में  
विलीन हो जाता हूँ  
ताकि बादल बन सकूँ  
और वर्षा बन कर नीचे  
उतारूँ धरती को सींचने के लिए  
और नदी में फिर से विलीन हो जाऊं  
क्योंकि मुझे फिर से सेवा करनी है  
सभ्यता को आशा से हरा करना है  
और फिर से गन्दगी लेनी है  
ताकि सभ्यता फले फूले  
क्योंकि मैं सभी का मित्र हूँ  
चाहे आज मुझे कोई ही जाने  
और समय रेखा में सब भूत के मित्र  
व वर्तमान के प्रियजन भूल जाएंगे।  
पर मुझे तो नदी की भाँती सभी की सेवा

में रत बहते रहना है।  
नदी को कोई पीछे मोड़ सकता  
..... जैसे मैं बहता जाता हूँ  
ओ सभ्यता में तुमसे प्यार करता हूँ।

\*\*\*

### **WALK TALK WITH MY RAM**

O'Lord who are you?  
"I am Ram".

O'Lord How do you look like?  
"I am eternal light  
---The Jyot of creation and uncreation".

O'Ram what's your Rupa?  
"I am formless sonic icon  
I transcend all the time line".

How can we reach you?  
"Through utterance  
And Naam Jaap.  
One can recite and utter  
and within dynamics of body  
I remain seated within silence".

Where do you dwell O my Ram?  
"I am in every living creature  
And even in non livings".

What's their identity?  
"They are also Ram".

How can Ram be many?  
"Omnipresent is Ram  
It may be me, you or in all infinity  
I am residing in all O dear Ram".

*How come I can be Ram as you are cosmic and me mortal?*

*"You are part of me  
You were made as mine by your  
Guru who is me only.  
Search within and feel me  
Within dynamics of sound and silence  
And in soundlessness.  
I am there O' my dear  
You are my Ramansha!"*

*Jai Jai Ram*

## **चलते हुए मेरे राम के साथ वार्तालाप**

हे प्रभु आप कौन हैं ?

मैं राम हूँ

हे प्रभु आप कैसे देखते हैं ?

मैं शाश्वत प्रकाश हूँ

-सृजन और विनाश की ज्योत

ओ राम आपका स्वरूप क्या है ?

मेरा चिन्ह निराकार ध्वनि है

जो समयातीत है

हम आप तक कैसे आ सकते हैं ?

सिमरन व नाम जाप से।

मैं शरीर की गतिशीलता के भीतर

मौन में विराजमान हूँ।

आप कहाँ रहते हैं मेरे राम ?

मैं हर जीवित व निर्जीव प्राणी में

वास करता हूँ।

उनका अस्तित्व क्या है?

वे भी राम हैं

राम इतने सारे कैसे हो सकते हैं?

राम सर्वव्यापी है

वे में, तुम और सभी अनंत में

विराजमान है, ओ प्रिय राम

मैं राम कैसे हो सकता हूँ, तुम शाश्वत हो और मैं नश्वर?

तुम मेरे अंश हो

तुम मेरे से ही बने थे

अपने गुरुदेव द्वारा

जो की मैं ही हूँ।

अंदर खोज करो

और मुझे महसूस करो

ध्वनि व मौन की गतिशीलता के भीतर

मैं वही हूँ मेरे प्यारे

तुम मेरे रमांशा हो

जय जय राम

\*\*\*

**Talk to the Self**

*Ask yourself 'Who are you' again and again. This will dress you down to your reality of inner self. Shake up the outer Lila so that we can start talking to the self. Let silence speak to you with deeper silence. RAM RAM*

*Pure thought, Sacred Karma, pious speech, heartfelt compassion, eternal love, undivided Shraddha for Gurujans are some of the pre requisites for salvation. It's not tough. If you feel its tough, then do a billion jaap then see How Param Guru smiles with you. SUCH IS THE POWER OF RAM NAAM. Culture it Cultivate it you will encounter Ram.*

*Like day and night, heat and cold, good and bad, pious and evil, black brown yellow white, likewise everywhere world is divided. So all of us. BUT HIS ETERNITY IS ONE AND SAME and all are equally loved by HIM unlike our created world divided we live and divided we die. Let us work to merge to HIS undivided world.*

## स्वयं से वार्तालाप करना

बार बार अपने आप से पूछिये "कौन हैं आप" यह आपको आपकी अंतरात्मा की यथार्तता से अवगत करवाएगा। बाहरी लीला को झकझोरिये ताकि हम स्वयं से वार्तालाप कर सकें। मौन को और गहरे मौन के साथ अपने से बोलने दीजिये। राम राम

पावन विचार, पवित्र कर्म, पावन वाणी, हृदय द्रवित करने वाली करुणा, दिव्य प्रेम, गुरुजनों के प्रति अविभाजित श्रद्धा कुछ अवश्यम्भावी तथ्य हैं मुक्ति के लिए। आपको लगता है की यह यदि कठिन हैं तो खरबों जाप करिये और देखिये कैसे परम गुरु आपके साथ मुस्कराते हैं। ऐसी शक्ति है राम नाम में। बीजिए, विकसित कीजिये और आप राम को पाएंगे।

दिन व रात्रि, गर्मी व सर्दी, अच्छाई व बुराई, पावन व दुष्ट, काला भूरा सफ़ेद और पीला, ऐसे ही सारा विश्व विभाजित है। और हम सब भी। पर उसकी शाश्वतता केवल एक ही है और बराबर है और वह सभी से एक समान स्नेह करता है, हमारी रची हुई दुनिया से भिन्न जहा हम बटे हुए रहते हैं और बटे हुए मरते हैं। आइए हम मेहनत करें ताकि हम उसकी अविभाजित संसार में विलीन हो सकें।

\*\*\*

*I was searching truth for all these decades but today I realize truth searched me much before I started the search! So truth is basically an "eternal consciousness" facilitated by my Param Guru. RAM RAM my eshta. YOU ARE MY ABSOLUTE TRUTH AND ABSOLUTE REALIZED CONSCIOUSNESS O MY MAAA.*



मैं सत्य की खोज में इतने दशक लगा रहा पर आज यह अनुभव हुआ कि मेरी खोज से भी पहले सत्य मुझे कब से खोज रहा था! सो सत्य एक ' दिव्य चेतना ' है जो मेरे परम गुरु द्वारा सुगम कर दी गई है । राम राम मेरे ईश्वर । आप मेरे परम सत्य व परम उदात्त चेतना हैं ओ मेरी मां ।

\*\*\*

### **SOUND OF MY FEET**

*I have to walk miles  
I cannot rest  
As neither sunlight or  
Darkness can slow me down.  
I must walk to the destiny  
Where Swamiji Maharaj  
Wanted us to take.  
He asked 24 x 7 simran  
And ajapa jaap in every fraction of seconds of our breath.  
He wished every part of our body  
Inner or outer must resound Ram Dhun in constantly  
And walk miles after miles  
In our karma bhumi.  
I realize when I walk  
There is a sound or aahat  
Of my stepping  
So I realized I have not silenced my stride of ego yet.  
I must step with more silence  
So that I can be silenced with only sound audible or inaudible  
Raaaauuummm.  
Mý Raaaauum  
And all my sound  
Must settle down in bottom  
And be reduced as earth  
Whereupon all sadhak or pious must walk for salvation.  
Hey Raaum reduced me to  
Those dust who will held all the feets on its head as pride.  
This is ramamayeness  
I seek O my lord, O my love, O my sakha Ram.  
Give me strength to merge into dust*

*Where upon all pious step will walk to Raam  
And attend Salvation*

## **मेरे पैरों की आहट**

*मुझे मीलों चलना है*

*में आराम नहीं कर सकता*

*न ही प्रकाश या अन्धकार*

*मेरी चाल को धीमा कर सकते हैं*

*मुझे अपनी मंज़िल तक चलते जाना है*

*जहाँ स्वामीजी महाराजजी*

*हमें लेकर जाना चाहते हैं*

*उन्होंने हमें 24x 7 सिमरन करने को कहा*

*और हर पल हमारी सांस में अजपा जप कहा*

*वे चाहते हैं की हर अंग हमारे शरीर का*

*अंदरूनी व बाहरी राम धुन की गूँज से नित्य गूँजे*

*मीलों चलना ही हमारी कर्म भूमि है*

*जब मैं चलता हूँ*

*में अनुभव करता हूँ*

*की मेरे चलने से भी आहट होती है*

*मुझे यह एहसास हुआ*

कि मैंने अपने अहंकार की प्रगति को अभी

मौन नहीं किया है

मुझे और शांति से कदम उठाना है

ताकि मैं श्रव्य व अश्रव्य ध्वनि के साथ

ही मौन किया जा सकूँ

राम

मेरे राम

मेरी हर ध्वनि नीचे बैठ जानी चाहिए

और धूलि के सामान मिट जानी चाहिए

जिसपर चल कर सभी साधक या पवित्र गण

मुक्ति के लिए अग्रसर हो सकें

हे राम मुझे ऐसी धूलि के सामान बना दो

जिसे सभी अपने सर पर गौरव के साथ लगाएंगे

यही राम भाव है

मैं प्रार्थना करता हूँ मेरे प्रभु, मेरे प्यारे, मेरे सखा ओ राम

मुझे शक्ति दें धूलि में विलीन होने के लिए

जहाँ से सभी पवित्रगण कदम लेंगे

राम तक जाने के लिए और मुक्ति पाएंगे

जय जय राम

\*\*\*

*Life is all about understanding and realizing. A spiritual step into the process of realization. Then after some journey we have to discard many of realizations, conscious realization of whatever around and inner conscious realization of within are quite different though there is small thread of consciousness. However in the process of realization we need to unlearn much and learn those emitting from inner sub conscious mind that is nearer to soul content. This is the secret of Ram Naam sadhana as I realize today*

*Jai Jai Ram*

जीवन समझने व अनुभव करने के लिए ही है । परम अनुभूति की प्रक्रिया में एक अध्यात्मिक कदम । तब कुछ यन्त्रों के पश्चात हमें बहुत से अनुभवों को गिराना पड़ता है, चेतन अनुभवों को, जो भी आस पास है और भीतर की चेतन अनुभव जो बहुत अलग हैं , जबकि वहाँ भी चेतना का एक हल्का सा सूत्र है । पर फिर भी परम अनुभव की प्रक्रिया में हमें, जो हमने सीखा है उसे त्यागना ज़्यादा है और जो भीतर से अवचेतनता से उभरता है वह आत्मा के बहुत निकट से आता है । आज मैं अनुभव करता हूँ कि यही रहस्य है राम नाम साधना का ।

जय जय राम

\*\*\*

### **NOSTALGIC ON ANTI EGO**

*Morning awakened today in nostalgic mode. I recalled Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji Maharaji always insisted to give up Ego. AHANKAR KA VISARJAN he has been teaching us. How much we follow him we all know. However, in context He wished us to be Humbler soul and VINAMRATA was his catch word. I always thought Ego he was referring in context of society and inter personal expressions and relationship. Today I got another dimension of his preaching.*

*Self within self we have an EGOISTIC person and A NEUTRAL person. Within, there is a great fight, as Ego says this is my name this is my society and this much respect and success I have earned and I have this and that and list goes on. "*

*Anti Ego or the neutral self then asked, "Yes you are a great achiever and everything you have what you have listed. But when this My self will die you will be a nameless dead body and 'shav ko jaldi le jao.' Will rent the air "koi pucheyga body kab ayegi? Then where your ego goes?"*

*Thus neutral self or anti ego says other than Ram what I really have in possession? Because after death self only becomes perishable 'nobody' BODY only.*

*Thus Maharishi advised us to win over the Ego even to the self (unexpressed imagined, internalized ego) because neutral being with complete surrender to RAM and having only possession of HIS name and tattwa can get emancipation and salvation. Even unexpressed ego is an illusion but that is realized at the last breath.*

*So please don't limit the concept of ego as an expression or social deed only. Secret nurturing of self ego is equally disastrous. MAHARISHI WANTED ALL TO BE HUMBLER EVEN TO THE VERY SELF WHERE EGO RESIDES. JAI JAI RAM*

## निरअहंकार पर कुछ बीती बातें

आज सुबह जब उठा तो पुरानी आप बीति में मन था । मुझे स्मरण हुआ महर्षि स्वामीजी डॉ विश्वामित्र जी सदा अहंकार को त्यागने के लिए आग्रह करते । अहंकार का विसर्जन वे हमें सिखाते रहे । कितना हम उनका अनुसरण करते हैं यह हम सब जानते हैं । वे चाहते थे कि हम विनम्र आत्माएँ बनें और विनम्रता उनका अतिप्रिय शब्द था । मुझे हमेशा लगा कि जिस अहंकार का वे उल्लेख कर रहे थे उसका तात्पर्य सामाज से था और आपस की अभिव्यक्तियाँ संबंध थे । आज मुझे उनके प्रवचन का एक और पहलू मिला ।

स्वयं के अंदर एक अहंकारी इंसान है और एक निरपेक्ष इंसान है । भीतर , वहाँ महा युद्ध चलता है , जब अहंकार कहता है यह मेरा नाम है , यह मेरा समाज है और इतना आदर व उन्नति मुझे मिली है और मेरे पास यह है और सूचि का अंत ही नहीं ।

निरअहंकार या निरपेक्ष स्वयं तब पूछता, " हाँ तुमने बहुत कुछ पाया है और तुम्हारे पास वह सब है जो तुम कह रहे हो। पर जब यह देह मर जाएगी और तुम एक बेनाम मृत देह होगे और ' यह शव जल्दी ले जाओ ' या कोई पूछेगा कि शरीर कब आएगा? यह सब बातें हो रही होंगी तब तुम्हारा अहम् कहाँ होगा?"

निरपेक्ष स्वयं बोला मृत्यु के पश्चात केवल देह का ही नाश होता है ।

इसलिए महर्षि ने कहा अहंकार पर विजय प्राप्त कीजिए आत्मा के स्तर तक क्योंकि निरपेक्ष स्वयं राम पर सम्पूर्ण समर्पण के संग केवल उसके नाम व तत्व को अपना निजी कह मुक्ति व उद्धार प्राप्त कर सकता है । अनाभिव्यक्त अहम् भी माया है पर यह अंतिम स्वाँस में ही ज्ञात होता है ।

इसलिए कृपया अहम का विचार सामाजिक कृत्य या अभिव्यक्ति तक ही सीमित न समझें । अहम का गुप्त पोषण भी उसी तरह विनाशकारी है । महर्षि चाहते थे कि हम आत्मा के स्तर तक विनम्र बनें जहाँ अहम् निवास करता है । जय जय राम

\*\*\*

### **RAM DHAM -FINAL ABODE**

*Ram Raauum----*  
*Wherever it resounds*  
*What ever is heard*  
*Becomes the Time and Space*  
*Of Sachitananda or*  
*Blissful eternal space.*

*Ram Raauumm....*  
*The eternal Nectar*  
*That unfolds the mystic*  
*Amritvani where amritdhara flows and*  
*Allows salvation*  
*Such is the gift of Swamiji Maharaj*  
*Where all soul emancipates.*

*Anananda and ananada*  
*Is to be internalised from*  
*Ram Raaaumm... the nectar*  
*Final abode or Ramm Dham*  
*Where with Param Guru*  
*All our Gurajans reside*  
*And they do come down on a single call*  
*Such is our loving RAM*  
*Such are GUNA of*  
*Caring Gurujans.*  
*RAM RAM Ram Dham*  
*Be our last utterance*  
*O Ram.*  
*Jai Jai Ram.*

## राम धाम - अंतिम गंतव्य

राम रामम--

जहां भी यह गूंजता है

जहां भी यह सुना जाता है

वह सच्चिजदानंद या

आनन्दमय दिव्य समय

व क्षेत्र बन जाता है ।

राम राममम...

दिव्य मधुमय जो रहस्यमय

अमृतवाणी को प्रकाशित करता है

जहां अमृतधारा बहती है

और मुक्ति का मार्ग

प्रशस्त करती हैं

ऐसा उपहार स्वामीजी

महाराज ने दिया

जहां सभी आत्माओं का उद्धार होता है ।

आनन्द और आनन्द

को राम राम .... मधुरस

से भीतर गहराई में अंकित करना है ।

अंतिम गंतव्य या राम धाम

जहां परम गुरु

और हमारे सभी

गुरुजन विराजमान हैं

और वे एक ही पुकार पर

आ जाते हैं

ऐसे हैं हमारे प्यारे राम

ऐसे गुण हैं हमारे करुणावान

गुरुजनों के ।

राम राम राम धाम

हमारा अंतिम उच्चारण हो

ओ राम ।

जय जय राम

\*\*\*

*Guru and God never UNFRIEND anyone! Because they are infinitively innocent and resides in eternity where one does not get affected with action and thought popping up on time line and space. This is pure Radha Bhava or daivya prem which human kind toil throughout life even to have it as pretentive possession. Radhey Radhey.*

गुरु और परमेश्वर कभी मित्रता तोड़ते नहीं हैं! क्योंकि वे अत्यन्त ही सरल हैं और शाश्वतता में विराजते हैं जहाँ कोई भी कृत्यों व क्षण क्षण विचारों के उभरने पर कोई असर नहीं होता। यह पावन राधा भाव या दैव्य प्रेम है जो मानवों को जीवन भर बहुत ही परिश्रम करने के पश्चात केवल एक निवारक। राधे राधे।



\*\*\*

*Whatever you are thinking RIGHT NOW is actually you are scripting the future. So be thoughtful in your Thinking and be prudent in expressing. So WRITE and BE RIGHT AS RIGHT AS DIVINE IS. JAI JAI RAM.*

जो भी आप इस समय सोच रहे हैं आप अपना भविष्य लिख रहे होते हैं। अपनी विचारधारा का मनन और अभिव्यक्ति विवेक पूर्ण करनी चाहिए। इसलिए लिखिए और दिव्यता जिस तरह ठीक है आप भी वैसे भी ठीक बनिए। जय जय राम

\*\*\*

*While thinking if you are in 'Doubt' then STOP THINKING, because confusion is an illusion. They say with EMPTY MIND you receive divine intervention. So be ready to receive.....and mind be THOUGHTLESS and Clean. Ram Ram.*

मनन करते समय यदि आपको लगता है की आप दुविधा में हैं तो सोचना बंद कीजिये, क्योंकि दुविधा माया है। कहते हैं की खाली मन से आप दिव्य हस्तक्षेप ग्रहण कर सकते हैं। सो तैयार रहिएगा ग्रहण करने के लिए.... मन को विचारशून्य व पावन रखियेगा। राम राम

\*\*\*

*If someone is OVERCAREFUL then do conclude that s/he is FULL OF FEAR. This may be out of one's past experience or being too inhibitive about the future. Nevertheless if one wants a STRONG MIND then do your MIND CULTIVATION IN DEEP SPIRITUALISM where you are taught to negotiate the reality and once reality is faced one learns to ignore it as well. Beyond our JEEVA TATTWA there is RAM TATTWA. Jai Jai Ram.*

यदि कोई ज़रूरत से जादा सजग है तो समझिए की वे भय से भरे हैं। यह उनके पिछले अनुभवों के कारण भी हो सकता है या फिर भविष्य के प्रति अति सतर्क। पर यदि आप मज़बूत मन चाहते हैं तब अपने मन को गहन अध्यात्म में उपजायें जहाँ आप वास्तविकता से जूझना सीखें और जब वास्तविकता का सामना करें तो उसे नज़रअंदाज़ करना भी सीखें। जीवतत्वा के पार राम तत्व भी है। जय जय राम

\*\*\*

*SPIRITUALISM is Ultra sensitive state of Mind. Who all are into this, will have prefix and suffix of problems, sufferings and even blames. As if there is a clandestine move to turnish even the*

*image and entity as well. Well these are ILLUSIVE MORTAL LILA at PLAY. Spiritualism is a matter of DIVINE LEVEL and one has to first get rid of all the Moha and Maya of Mortal Lila to climb the ladder. So spiritualism if you are cultivating just smile, love and ignore no matter whatever the quantum of suffering is! Ram loves you but before finally accepting you HE wants you should not be left with any worldly desires so that purest being is bestowed with ETERNITY OF SPIRITUALISM. JAI JAI RAM*

आध्यात्मिकता मन की अति संवेदनशील स्थिति है। जो भी इसमें हैं, उन्हें आगे पीछे से मुसीबतों, पीड़ाओं और कभी कभी दोषारोपण का भी सामना करना पड़ता है। जैसे कि मान व सम्मान को दाग लगाने के लिए कोई महान अभियान छेड़ा गया होता है। पर यह सब संसार की मायावी लीला अपना खेल खेल रही होती हैं। आध्यात्मिकता दिव्य स्तर पर होती है और सबसे पहले हमें संसारी मोह व माया की लीला से छुटकारा पाना होता है ताकि हम सीडी चढ़ सकें। यदि आप आध्यात्मिकता विकसित कर रहे हैं तो केवल मुस्कराएँ, प्रेम कीजिए और नज़र अंदाज़ कीजिए जो भी कष्ट आपके जीवन में आ रहे हैं। राम आप से प्यार करते हैं पर आपको पूर्ण रूप से अपनाएने से पूर्व वे चाहते हैं कि आप में किसी प्रकार की संसारी चाह न रह जाए ताकि पवित्र आत्मा में ही आध्यात्मिकता की शाश्वतता प्रदान की जाए। जय जय राम

\*\*\*

### ***GURU KRIPA --A Conceptual Revisit***

*We all refer to Guru Kripa more has a habit than a realized Bliss. Guru Kripa is a huge spiritual phenomenon where in a sadhak or sadhika undergoes multiple processes as in an assembly line of factory which is to create satwik HUMANE not Human.*

*The day of our initiation and cleansing of self and then planting the seed mantra RAM is first Guru Kripa. Guru kripa is to make us loving and compassionate being. Guru kripa is shelving hatred jealousy and become caring. Guru kripa makes us humbler and we need to do prayer and deeds to overall good for others and be secret and silence. Guru kripa controls our tongue so that we don't hurt others guru kripa is culturing the innerself and doing social duty as well. Guru kripa helps us to do sadhana to beget Ram Kripa. Likewise there are many elements. Today we are peeling off Guru Kripa to move at least an inch towards this holistic realization.*

***Guru is nobody but RAM***

***Ushers in Satwik chintan and karma***

***Resonance of sound and silence of RAM is the path and destiny.***

***Understanding subtle difference of Guru's deha tattwa and Guru tattwa.***

***Kripa is blessing realized as Bliss.***

***Inspiration for positive negotiation.***

***Patience Perseverance with Shraddha allows this introduction***

*Almighty in me and Ram in everyone  
Is taught by Guru Kripa.*

*Jai Jai Ram*

## **गुरु कृपा -- फिर से वैचारिक रूप की भेंट करें**

हम सब गुरु कृपा को एक आदत के तौर पर संकेत करते हैं अपितु एक अनुभूत आनन्द की तरह। गुरु कृपा एक विशाल आध्यात्मिक घटना है जहाँ साधक या साधिका बहुत से विभिन्न प्रक्रियाओं से गुज़रता है जैसे कि किसी फ़ैक्टरी की पंक्ति में जिसे सात्विक दयालु इंसान रचने हों न कि केवल इंसान।

जिस दिन हमारी दीक्षा होती है और आत्मा का शुद्धिकरण होता है और जब राम मंत्र का बीजारोपण होता है, वह हमारी पहली गुरु कृपा होती है। गुरु कृपा का कार्य हमें प्रेममय व करुणामय इंसान बनाना होता है। गुरु कृपा ईर्ष्या को हटा कर दयामय बना देता है। गुरु कृपा हमें विनम्र बनाता है और हमें प्रार्थनाएं व सार्वभौमिक सद्भावना के कृत्य करवाती है और छिपे हुए तथा मौन होना सिखाती है। गुरु कृपा हमारी जिहवा पर नियंत्रण करती है ताकि हम दूसरों को कष्ट न पहुँचाएँ; गुरु कृपा आत्मसात करती है तथा राम कृपा पाने के लिए साधना भी करवाती है। इसी तरह बहुत से अन्य अंग हैं। आज हम गुरु कृपा को एक एक करके देख रहे हैं ताकि हम कम से कम एक इंच ही समग्र दिव्य एहसास की ओर बढ़ सकें।

*गुरु और कोई नहीं केवल राम हैं*

*सात्विक चिंतन व कर्मों का आगमन करता है*

*ध्वनि की गूँज व राम का मौन पथ व गंतव्य है*

*गुरु देह व गुरु तत्व के बीच में सूक्ष्म अंतर समझना*

*कृपा आशीर्वाद है जिसकी आनन्द के रूप में अनुभूति होती है*

*सकारात्मक वार्तालाप के लिए प्रोत्साहन मिलना*

*श्रद्धा के संग धैर्य दृढ़ता इस मनन को अनुमति देती है*

*परमेश्वर मुझमें हैं और राम सब में हैं*

*यह हमें गुरुकृपा द्वारा सिखाया जाता है*

जय जय राम

\*\*\*

### **SACHITANAND—The Divine State of Bliss**

*Soundscape, where it ends there starts eternal light of landscape. This is seen and felt. Ananda is the state of bliss where happiness and unhappiness cease to have its impact. Smile of Buddha remains. Chetna is awakened and realization of DIVINE ONENESS DAWNS. Hind sight regrets and guilt get diluted and purified self comes to the fore. Inner self becomes sanctum sanctorum where SHREE RAM resides. Trance of Mind, Manas and Maan scales eternity in GURU TATTWA which is first highest frontier for sadhak. AM becomes He and He is Me and We all are HIS. This starts with GURU TATTWA and finally scales RAM TATTWA. Losing out self and searching eternal 'I' is the Lila. No creation is useless even the dust, as all are manifestation of DIVINE creation. Reverence to animate and inanimate comes in this state. Attributes of divinity is Healing the world both known and unknown becomes nature of the sadhak. No hiccups or problems of life can pose obstacles. No suffering can unleash a pain more than the pain of VIRAHA for Ram. This unites the Universal Mind. Darshan of RAM, Drishti of Maa, Divyata of Gurujans are the three elements of Sachitanand PROMISES which comes through Guru Kripa and Ram Kripa. JAI JAI RAM*

\*\*\*

### **सच्चिदानंद - आनन्द का दिव्य स्तर**

ध्वनि स्थल का जहाँ अंत होता है वहाँ प्रकाश का भू स्थल का आरम्भ होता है । यह देखा भी जाता है और महसूस भी होता है । आनन्द परमानंद का वह स्तर है जहाँ सुख व दुख का कोई भी एहसास होना समाप्त हो जाता है । बुद्ध की मुस्कराहट जरूर रहती है । चेतना जागृत होती है और दिव्य एकता की अनुभूति होती है । खेद व अपराध भाव कम हो जाते हैं और पावन आत्मा सामने आ जाता है ।

आत्मा वह पवित्र स्थान बन जाता है जहाँ श्री राम विराजते हैं ।

मन की समाधि, मानस और मान दिव्यता की ऊँचाइयों तक गुरु तत्व में पहुँचते हैं जो कि साधक के लिए पहला उच्च पड़ाव है । मैं तू बन जाता है और तू मैं और हम सब उसके । यह गुरुतत्व से आरम्भ होकर राम तत्व की ऊँचाई तक पहुँचता है । अपने आप को खो देना और दिव्य " मैं " की खोज ही लीला है ।

सृष्टि का धूलि का एक कण भी व्यर्थ नहीं है , क्योंकि सभी दिव्य रचना की अभिव्यक्तियाँ हैं । चेतन व अचेतन के प्रति श्रद्धा इस स्तर पर मिलती । दिव्यता के गुणों से संसार के ज्ञात व अज्ञात को आरोग्य करना , यही एक साधक का स्वभाव बन जाता है । जीवन की कोई भी समस्याएँ बाधा नहीं बन सकतीं । कोई भी वेदना उस पीडा को कम नहीं कर सकती जो कि राम के विरह की पीडा होती है । यह सृष्टि मन से संयोजक प्रदान करता है । राम के दर्शन, माँ की दृष्टि , गुरुजनों की दिव्यता ; यह तीन आधार हैं जो सच्चिदानंद गुरु कृपा व राम कृपा द्वारा देने का वचन देते हैं ।

जय जय राम

\*\*\*

*God challenges you by injecting Doubts in you. We challenge the God by trusting Him more even when we are amidst extreme odds. Because Trust or Shraddha can banish Doubt and illusions.  
Jai Jai Ram*

*परमेश्वर आप में संशय भर कर आपको चुनौति देता है । हम परमेश्वर को चुनौति देते हैं उनपर अधिक विश्वास करके जब हम चरम सीमा की परिस्थितियों से जूझ रहे होते हैं । क्योंकि श्रद्धा संशय व माया को समाप्त कर सकती है ।*

जय जय राम

\*\*\*

### **Walking upto HIM!**

*From a lonely road  
I walked... walked along  
And alone.  
Sankirtan  
Naam kirtan  
Scriptures I paged through  
Well I was kid  
None counted me  
In those scholarly discourse  
of Ramakrishna order  
Yet I counted all  
And I smiled  
Evening passed by  
And aesthetics*

*Drew in me  
STILL LIFE  
As I recollected  
Frozen wisdom of grand parents  
Both became ascetic  
Different orders and  
Apart.  
I grew  
Offered saffron robe  
Of an acclaimed order  
Around I was to be a graduate.  
Yet declined  
secretly.*

*I march passed life  
Mostly as if I was  
Mohd. Bin Tuglak  
Who lived future  
In his life time  
Historian called him  
ahead of times.  
So I mentored people  
When I was to  
Take off. I coached  
Knowing well I was  
Current striker.  
Veda Upanishad Hinduism  
I coursed as chanced upon  
Sages and saints of many schools.*

*But nothing echoed.  
I searched for path  
Encountered illusion  
I respected all  
I denied the respect to the self.*

*Finally I met my  
Friend philosopher and guide  
In the pinnacle of spiritualism  
In my zenith of agony.*

*My mentor was one  
My mother who gave back my memory when I lost all in 13  
She mentored me to be humane  
Until my friend my guru and  
My philosopher came.*

*Both empowered me  
and both knew I was there  
And I was not there really.  
Both left yet  
Standing by to pass  
Wisdom they earned  
And medium I remain.  
So loving relation they bestowed  
I started healing too  
silently secretly.  
Today they are scripting my future  
As am in tears  
Yet they assure the bliss  
And I do write  
What He wishes  
Rest He knows  
After all a friend of ETERNITY  
He remains.  
Raaaaaum.*

### **परमेश्वर तक चलना!**

*एक एकाकी सड़क*

*में चला... चला संग*

*और अकेला*

*संकीर्तन*

*नाम कीर्तन*

*ग्रंथ मेंने पढ़े*

*में मामूली बच्चा था*

*मेरी कोई मान्यता नहीं*

रामाकृष्ण मठ के

उन बुद्धिमानों के प्रवचनों

को सब सुना

और मुस्कराया

शाम हुई और सौंदर्य शास्त्र

ने मुझे स्वयं में खींचा

अचल जीवन

जैसे मुझे स्मरण हुआ

मेरे दोनो नाना नानी

जो संयासी बने

पर अलग अलग मठों के

और दूर ।

में बड़ा हुआ

जब ग्रैजुएट होने वाला था तो

मुझे एक बड़े स्तर का

चोला प्रस्तुत किया गया

पर धीरे व चुपके से मैंने

मना कर दिया ।

मैं ज़िन्दगी में आगे बढ़ता गया



ज्यादातर ऐसे जैसे कि मैं  
मोहम्मद बिन तुगलक हूँ  
जो भविष्य को अपने वर्तमान  
में जीता था  
इतिहासकारों ने उसे  
अपने समय से आगे माना ।  
सो मैंने सिखाना आरम्भ किया  
वेद उपनिषद हिंदुत्व  
सब अध्ययन किए  
और विभिन्न संतों व महात्माओं  
से स्वयमेव मिलन हुआ ।  
पर कुछ नहीं गुंजा  
मैंने मार्ग की तलाश की  
माया हाथ आई  
सबको सम्मान दिया  
पर स्वयं को सम्मान से वंचित रखा ।  
अंततः मुझे मेरे सखा दार्शनिक  
व मार्गदर्शक मिले  
आध्यात्म की चोटी पर

मेरी वेदना की चर्मसीमा पर ।

मेरी एक शिक्षक मेरी माँ

जिन्होंने मुझे मेरी स्मृति लौटाई

जो मैंने १३ वर्ष पर खो दी थी

उन्होंने मुझे करुणावान बनना सिखाया

तब तक जब तक मेरे सखा व दार्शनिक न मिले ।

दोनों से मुझे सशक्त किया

और दोनों जानते थे कि मैं वहाँ हूँ

पर फिर भी अभी नहीं हूँ ।

पर दोनों चले पर

अपना ज्ञान दे गए

और एक माध्यम में रहा ।

इतना प्यारा संबंध दिया

कि मैं स्वस्थ होने लगा

धीरे धीरे चुपके से ।

आज वे मेरा भविष्य

लिख रहे हैं

मेरे अश्रु बह रहे हैं

पर वे परमानंद का

आश्वासन देते हैं

और मैं लिखता हूँ

जो वे चाहते हैं

आगे वे जानें

वे अनंत के सखा जो ठहरे ।

राममममममम

\*\*\*

### **AM I THE I AM?**

*I AM a jeevatman. I am given a Name. Am born in a family and one day I will die and jeevatma will cease to exist. Then what happens to " I".*

*I am in reality is an infinite concept. When born as jeevatman I become a limited concept in terms of name, identity, karma content, and I have very limited memory bank and only few streaks of wisdom sparks. All these "I am the prisoners of body and stays till I become a dead body'.*

*But we are part of ETERNAL I AM which is not prisoner of Jeevatman and HE IS PARAMATMAN.*

*Guru creates this path of realizing the eternal " I AM" WHO IS RAM HIMSELF THE CAUSE AND EFFECT OF ALL THAT IS CREATED AND THAT WILL BE CREATED AND THE ALL THE UNCREATION HE WILL UNLEASH.*

*Life is to realize the eternal I and that starts with micro I called self. Dont get into the concept of my ego and His ego. Just surrender the micro self to the eternal I or cosmic ego. Then we realize what a big is this eternal deva tattwa or I or I of Ram that stays beyond the time and space. Jai jai ram.*

**क्या मैं 'मैं' हूँ ?**

मैं एक जीवात्मा हूँ । मुझे नाम दिया गया है । मैं एक परिवार में जन्मा हूँ और एक दिन जब मैं मर जाऊँगा तो मेरा अस्तित्व नहीं रहेगा । तो इस " मैं " का क्या हुआ फिर ।

मैं यथार्थ में हूँ जो कि एक अनंत धारणा है । जब मेरा जन्म हुआ जीवात्मा के रूप में तो मेरी धारणा अत्यंत संकुचित हो गई नाम, पहचान, कर्म और मेरी स्मृति बहुत ही सीमित है और कुछ ही ज्ञान का प्रकाश । यह सभी " मैं " देह का कैदी हूँ और रहता हूँ जब तक मृत शरीर न हो जाऊँ " ।

पर हम तो उस अनंत के अंश हैं जो जीवात्मा का कैदी नहीं है और वे परमात्मन् हैं ।

गुरु यह मार्ग प्रशस्त करते हैं जिससे हम अनन्त को अनुभव कर सकें " मैं हूँ " राम ही स्वयं हैं सर्वस्व जो रचा गया है और जो रचा जाएगा और जो नहीं रचा है उसको भी खोलने के कारण और प्रभाव हैं वे ।

जीवन इस दिव्य "मैं" को अनुभव करने के लिए है और यह आरम्भ सूक्ष्म मैं से होता है । मेरी मैं व उसकी मैं की धारणा मैं न जाएँ । केवल इस सूक्ष्म मैं का समर्पण उस अनन्त मैं में कर दीजिए । तब हम जानेंगे कि कितना विशाल यह अनंत देव तत्व हैं या " मैं " या राम की " मैं " जो समय व क्षेत्र के पार है । जय जय राम

\*\*\*

*Whisper of God can be heard from the sound of silence.*

परमेश्वर की धीमे से आवाज मौन की ध्वनि में सुनी जा सकती है ।

\*\*\*

*Prayer in deep silence is heard by My Ram.*

गहन मौन में की गई प्रार्थना मेरे राम द्वारा सुनी जाती है ।

\*\*\*

*Sadhana gives results when we sacrifice or at least ready to sacrifice the cosiness the world has given to us.*

साधना तब फलित होती है जब हम त्याग करते हैं या जीवन के सुख त्यागने के लिए तत्पर होते हैं ।

\*\*\*

*Guru speaks to your heart as you silence your mind.*

गुरु आपके हृदय में बोलता है जैसे आप अपने मन को मौन में ले जाते हैं ।

\*\*\*

*Guru Tattwa is eternal realization which starts from simple internalization mode.*

गुरु तत्व एक भीतरी एहसास है जो केवल साधारण अंतरमुखी होने से आरम्भ होता है ।

\*\*\*

*Param Guru Ram calls all but only few responds in time. Rest are caught in wondering process.*

परम गुरु सभी को आवाज लगाते हैं पर केवल कुछ ही प्रतिक्रिया देते हैं । बाकि तो सोच विचार की प्रक्रिया में ही लगे रहते हैं ।

\*\*\*

*Guru Tattwa or divine entity of Gurujans can be nursing million souls at one time. This is eternal universality of Ram Naam Moksha--- the abode of Param Guru.*

गुरु तत्व या गुरुजनों की दिव्य सत्ता करोड़ों आत्माओं की एक साथ एक समय में देखभाल कर रहे होते हैं ।  
यह राम नाम मोक्ष की सारवभौमिक सनातनता है --- परम गुरु का धाम ।

\*\*\*

*When we ask Gurudev any question He answers though His jeevatman ceased to exist and only gurutattwa remains which is all pervading and blessing all with knowledge and wisdom of univetsal kind. Just speak out and see how lovingly He answers. But your call should be of purest form and intention.*

जब हम गुरुदेव से कोई प्रश्न करते हैं तो वे उत्तर देते हैं जबकि उनका जीवात्मा का अब कोई अस्तित्व नहीं है और केवल गुरुतत्व ही शेष रह जाता है जो कि सर्वव्यापक है और सम्पूर्ण सार्वभौमिक ज्ञान की कृपा बरसाता है । बस उनके साथ बात चीत कीजिए और देखिए कैसे प्यार से वे उत्तर देते हैं । पर आपकी पुकार पूर्ण रूप से पवित्र होनी चाहिए व उसकी नीयत भी अच्छी होनी चाहिए ।

\*\*\*

*Naam Sadhana is the process of purification. There is a time line. SO RAM is yours when you complete your journey.*

पवित्रीकरण के पश्चात नाम साधना एक प्रक्रीया है । यहां समय रेखा है । सो राम आपके हैं जब आपकी यात्रा समाप्त होती है ।

\*\*\*

*I heard the sound of HIS presence which no logic of science can explain. Kripa to be around.*

मुझे परमेश्वर की उपस्थिति की ध्वनि सुनाई पड़ती है जो विज्ञान का कोई तर्क नहीं समझा सकता । कृपा निकट ही है ।

\*\*\*

*Swamiji Maharaj gave the eternal mantra RAM and announced the destiny of this Naam Sadhana. Can you recollect? Well He wanted that we who have been travelling for several hundred birth and deaths must get salvation from this process of birth and rebirth. Such was the lofty goal He set up for us. Then Maharishi wanted that we should stop pouring oil to our wish lamps of mortal craving. Do realize this perspective.*

*Sometime in life one carries the guilt too long and becomes a bad baggage. It happens if one does not know how to completely surrender to RAM and cry in repentance unless pardoned. God allows mid way corrections. So why wait MY RAM IS PARAM DAYALU. HE LOVES YOU TOO. Go for Sadhana and sankalpa right away and see How HE loves you.*

स्वामी जी महाराज ने दिव्य मंत्र राम दिया और नाम साधना की नियति की उद्घोषणा की । क्या आप स्मरण कर सकते हैं? वे चाहते थे कि हम जो कितने ही जन्म व मरण में यात्रा करते जा रहे हैं, उन्हें जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति अवश्य मिलनी चाहिए । ऐसा उदात्त गंतव्य उन्होंने हमारे लिए रखा । फिर महर्षि ने चाहा कि हमें अपनी इच्छाओं के दीपक में संसारी लालसाओं का तेल डालना बंद करना चाहिए । इस दृष्टिकोण को अनुभव करें ।

जीवन में अपराध भाव हम कुछ ज़्यादा देर के लिए अपने ऊपर लेते जाते हैं और वह एक अमान्य बोझ बन जाता है । यह तब होता है जब हमें राम पर समर्पण करना नहीं आता और पश्चात्ताप में रोते रहना जब तक क्षमा प्राप्ति नहीं हो जाती । परमेश्वर मध्य पथ के सुधार की अनुमति प्रदान करते हैं । अब

इंतज़ार किस बात का, मेरे राम परमदयालु हैं। वे आपसे भी प्यार करते हैं। साधनारत होइए, संकल्प इसी समय लीजिए और देखिए कैसे वे आपसे प्रेम करते हैं।

\*\*\*

*Fear makes one religious. Brave and innocent become Spiritual. Swamiji Satyanadji Maharaj taught all Ram Naam sadhak to be brave and innocently pure.*

भय हमें धार्मिक बना देता है। शूरवीर और सरल आध्यात्मिक बनते हैं। स्वामीजी सत्यानंद जी महाराज ने हम सब साधकों को शूरवीर व अति सरल भाव से पवित्र होना सिखाया।

\*\*\*

*To culture spiritualism one must have a sense of self respect, self love, innocence and subdued non attacking ego. And sublime harvesting is assured.*

आध्यात्मिकता का संवर्धन करने के लिए हमारे पास स्वाभिमान, स्वयं से प्रेम, सरलता और झुका हुआ बिना आक्रमण करता हुआ अहंकार होना चाहिए। उदात्त खेती फिर निश्चित है।

\*\*\*

## **RAUM--ULTIMATE OF ANANDA**

*Hey Ram  
You are Param Pita Parameshwars  
O my Ram you are  
Complete Lord with all Divine Grace.  
You are embodiment of Eternal  
ANANDA.  
You are the ultimate symbol  
Of Loving Piousness  
That weaves the world  
O My Raam.  
You are Eshwar of all the Divine  
You are omnipotent  
O my loving Raaaum.  
You are Sachitananda----  
BLUSS OF ALL BLISSES  
O my Raaaaaum.*

## **राम- परमानन्द**

हे राम

आप परम पिता परमेश्वर

ओ मेरे राम

आप दिव्य कृपा के सम्पूर्ण परमात्मा हैं

आप सनातन आनन्द के अवतार हैं ।

ओ राम आप प्रेममय पवित्रता

जो संसार को गूँथती है

उसके परम चिन्ह हैं ।

ओ मेरे राम

आप सर्व दिव्यता के ईश्वर हैं

ओ मेरे प्यारे राम

आप सर्वशक्तिमान हैं

ओ मेरे प्यारे राममममम

आप सच्चिदानंद हैं

सभी आनन्द के आनन्द हैं

ओ मेरे रामममममम

\*\*\*

## **PARAMDAYALU RAM**

*O my most Innocent and pure Ram*

*You are the giver*

*You are ultimate of all*

*You bestow upon us,*

*All that we get*



*You are the ultimate donor  
O my Raaaaum.  
You are the friend of those  
Who has nothing in possession  
But all have your love  
As they have you  
O my Ram you are lord of Lords  
You pardon all  
Take away paap, pain and agony  
And assure salvation  
O my Ram  
such loving kripa  
you shower on all  
You are the epitome of divine compassion and love  
O my Raaum  
My paramdayalu Ram.*

### **परम दयालु राम**

*ओ मेरे सर्वोच्च सरल और पावन राम*

*आप दाता हैं*

*आप सबसे परम हैं*

*जो भी हमें मिलता है*

*वह आप ही की देन है*

*आप सर्वोच्च दाता हैं*

*ओ मेरे राममममम ।*

*आप उनके सखा हैं*

*जिनके पास अपना कुछ नहीं*

*पर सभी के पास आपश्री का प्यार है*

*क्योंकि उनके पास आपश्री हैं*

*ओ मेरे राम आप देवों के देव हैं*

आपश्री सब को क्षमा प्रदान करते हैं  
उनके पाप, ताप व पीड़ा लेकर  
मुक्ति का आश्वासन देते हैं  
ओ मेरे राम  
ऐसी प्रेममय कृपा  
आप सभी पर बरसाते हैं  
आप दिव्य करुणा व प्रेम के प्रतीक हैं ।  
ओ मेरे रामम  
मेरे परम दयालु राम ।

\*\*\*

### **AUM---BEYOND TIME AND SPACE**

O MY RAAUUUM  
You are power of Universal intelligence  
That runs the Cosmos.  
You are knowledge of all wisdom  
That translates into Ananda  
The eternal shiva internally posited with ultimate guna of peace and tranquil divine.  
O my Raam  
You are beyond TIME N SPACE  
Boundary--less and unboundable  
O my Eshta O my Raam.

ओम्--- समय और क्षेत्र के पार

ओ मेरे रामममम

आप सारवभौमिक ज्ञान की शक्ति हैं

जो इस ब्रह्माण्ड को चलाती है ।

आप सर्व बुद्धिमता के ज्ञान हैं

जो आनन्द में परिवर्तित हो जाता

सनातन शिव भीतर विराजमान हैं

सर्वोच्च शांति व दिव्य सुख के संग

ओ मेरे राम

आप समय व क्षेत्र के पार हैं

सीमातीत व असीमित हैं

ओ मेरे ईश्वर ओ मेरे रामममम ।

\*\*\*

*WHATEVER I am told I hear. WHATEVER I am shown I see. WHATEVER am asked to feel and realize that I do. But it's nothing I can claim as I do. I am entityless tool beyond body rest HE knows.*

जो भी मुझे बताया जाता है मैं सुनता हूँ । जो भी मुझे दिखाया जाता है मैं देखता हूँ । जो भी मुझे महसूस करने को कहा जाता है मैंने महसूस किया कि मैं करता हूँ । पर मैं किसी का दावा नहीं कर सकता कि मैं यह सब कर रहा हूँ । मैं एक यंत्र हूँ देह के पार जिसका अपना अस्तित्व नहीं है , बाकि परमेश्वर जानें ।

\*\*\*

*Eternal Truth is omnipotent and all pervading. You don't need to prove it or defend it. You are part of that eternal truth. INTERNALIZE AND REALIZE RAUM within. Bliss is around you, enveloped you. This is Truth ...I AM THAT. THAT IS ME. Raaaauuuum.*

सनातन सत्य सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक है । आपको उसे साबित या रक्षा करने की आवश्यकता नहीं । आप उस सनातन सत्य के अंशी हैं । जाइए गहराई में और राम को भीतर अनुभव कीजिए । आनन्द से ओत प्रोत हैं आप । यही सत्य है ... वह मैं हूँ । मैं वह हूँ । राममममम

\*\*\*

*SHRADDHA for Guru, Lord, Elders have magical power. My Guru Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitter Ji Maharajji had actually shown me the magic and named it JADUI RAM. It's not a title but a slogan and mantra to feel the miracle of Shraddha which became ALAUKIK RAM. This is the functional dimension of Shraddha.*

गुरु, परमेश्वर व बुजुर्गों के लिए श्रद्धा में एक चमत्कारी शक्ति है । मेरे गुरु महर्षि स्वामी जी डॉ विश्वामित्र जी महाराज जी ने मुझे यथार्थ में यह चमत्कार दिया और उसे जादुई राम नाम दिया । यह कोई शीर्षक नहीं है अपितु एक नारा व मंत्र है श्रद्धा के चमत्कार को महसूस करने के लिए जो आलौकिक राम बन गया । यह श्रद्धा का कार्यात्मक आयाम है ।

\*\*\*

## **RAMA CONSCIOUSNESS**

*My thoughts are in consciousness  
My consciousness is in my brain  
My brain works as thoughts  
My thoughts are my samaskars  
My smaskars has its past  
My samskars are carried by atma  
My atma is my consciousness.  
But I can attend realized consciousness by Guru Kripa and Ram Kripa.  
Ramaconsciousness is beyond time and space.  
He is Eternal Consciousness and  
The universal consciousness.  
To reach HIM easily  
One needs to do only  
RAM NAAM SADHANA  
As Param Guru Ram declared  
That our beloved*

SWAMIJI SATAYANDJI MAHARAJI preached.

Raaaaaaaa Simran

Ram naam jyoti rup avataran

That is Rama consciousness!

## राम चेतना

मेरे विचार चेतना में हैं

मेरी चेतना मेरे दिमाग में

मेरा दिमाग विचारों से चलता है

मेरे विचार मेरे संस्कार हैं

मेरे संस्कारों का अतीत है

मेरे संस्कार आत्मा ढोता है

मेरा आत्मा मेरी चेतना है।

पर मैं जागृत चेतना को गुरु कृपा और राम कृपा

द्वारा ध्यान दे सकता हूँ।

राममय चेतन समय व क्षेत्र के

पार हैं

वह सनातन चेतना है और

सार्वभौमिक चेतना।

परमेश्वर तक पहुँचने के लिए

हमें केवल

राम नाम साधना करनी है  
जैसे परम गुरु ने उद्घोषणा की  
और जो हमारे परम प्यारे  
स्वामी जी सत्यानन्द जी महाराजजी ने  
प्रचार किया  
राम सिमरन  
राम नाम ज्योति रूप अवतरण  
यह राममय चैतन्य है।

\*\*\*

*Fortunes are made by few fortunate who unfortunately leave behind an elaborate mortal legacy  
where future will battle over.*

*Real fortunate are those whose life values are celebrated and bliss gets distributed in an  
unending manner to all...hereafter forever.*

*Mortal fortune@spiritual fortune  
Choice is yours.*

धन सम्पत्ति कुछ भाग्यशाली बना पाते हैं जो दुर्भाग्य से पीछे एक विशाल नश्वर विरासत छोड़ जाते हैं जहाँ भविष्य उस पर युद्ध करेगा। असली भाग्यशाली वे हैं जिनकी जीवन के मूल्य विख्यात होते हैं और सब में अनन्त भाव से आनन्द वितरित होता है .. अभी और सदा। नश्वर धनराशि या आध्यात्मिक धनराशि

चुनाव आपका है

\*\*\*

**MY RAUM -ETERNAL POSITIVITY**

*Mahan Mantra Raam  
Dwells in three lokas  
And radiates eternal energy  
That lights up universal intelligence!  
HE is the cause and effect of cosmos  
Raam is the energy of Universe.*

*Ram at both acoustic and jyoti level  
comes down as Rain--  
-The Celestial Varshan.  
For a Sadhak who  
Surrendered to Him at atmik level  
And does constant remembrance  
of HIS name  
Do experience this cosmic rain  
through naked eyes  
that powerful is Naam Sadhana.  
One sees sparking rain  
without water  
pouring from sky  
in a diagonal manner  
making the sadhak soak.  
This is kinetic cosmic energy  
that heals, listen to our prayers,  
Allows realization of wisdom.  
Mortally this is positive energy  
and if sadhak is perfectly tuned  
then all can receive this  
RAM KRIPA.*

*RAM KRIPA is no  
Symbolic expression of bliss but  
is Devi Shakti  
or eternal energy  
raining down all the time.  
But it can be observed and received  
only when are clean enough  
and develop sadhana capacity  
to vision an absorbe His Lila.  
Raam the Devi Shakti  
Creates all divine literature  
and shower Brahma gyan.  
Raaaaaaaauuuuuuuummm.*

## **मेरे राम- सनातन सकारात्मकता**

महा मंत्र राम

तीनों लोकों में बसते हैं

दिव्य शक्ति विस्तृत करते हैं

जो सार्वभौमिक बुद्धिमत्ता

को प्रकाशित करते हैं!

वे ब्रह्माण्ड के कारण व प्रभाव हैं

राम ब्रह्माण्ड की शक्ति हैं।

राम ध्वनि व ज्योति

के स्तर पर

वर्षा के रूप में बरसते हैं

दिव्य वर्षा।

जिस साधक ने राम को अपना समर्पण

आत्मिक स्तर पर कर दिया है

और सतत सिमरन उनके नाम का करता है

इस तरह की दिव्य वर्षा का अनुभव

नग्न नेत्रों से करते हैं

ऐसी शक्तिशाली है नाम साधना।

चमकती हुई वर्षा



बिना पानी के  
आकाश से बरसती हुई  
तिरछे रूप में एक साधक  
को भिगो देती है ।  
यह दिव्य गतिशील शक्ति है  
जो आरोग्यता प्रदान करती है,  
प्रार्थनाएं को सुनती है  
और ज्ञान का अनुभव करवाती है ।  
नश्वर स्तर पर यह  
सकारात्मक शक्ति है  
और यदि साधक के तार  
पूर्ण रूप से मिले हुए हैं  
तब सभी यह राम कृपा प्राप्त  
कर सकते हैं ।  
राम कृपा कोई आनन्द की  
प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति नहीं है  
पर देवी शक्ति है  
जो हर क्षण बरस रही है ।  
पर यह अनुभव व प्राप्त तभी की

जा सकती है

जब हम में शुचिता हो

और

उसकी लीला को देखने व

अवशोषित करने की साधना

की क्षमता हो ।

राम देवी शक्ति

सभी दिव्य साहित्य

की रचयिता हैं

और ब्रह्म ज्ञान बरसाती हैं ।

राममममममममममममम

\*\*\*

*All spiritualists must have deep quest to know the unknown. But never question the very idea as you will be delinking from the purpose of knowing eternity. Answer is within. The process of encountering layers after layers of facts by just saying "I think not this" and again go deeper with the same process until you cease to question.... this interlizations for years of tapasya will fulfill your quest.*

*And surely Eternity will be realized within. Begin the journey....loving God is waiting inside you!*

सभी आध्यात्मवादियों को अज्ञात को जानने की गहरी पिपासा होनी चाहिए । पर इस पर कभी प्रश्न चिह्न न लगाएँ क्योंकि आपका संपर्क दिव्यता को जानने के लिए अवश्य टूटेगा । उत्तर भीतर है। विभिन्न तथ्यों की एक के बाद एक परत का सामना करना और कहना " मुझे नहीं लगता यह है" और फिर गहरे जाते जाना उसी प्रक्रिया के संग तब तक जब तक आपके सभी प्रश्न शांत न हो जाएँ .... यह वर्षों की तपस्या की आंतरिक प्रक्रिया आपकी खोज को अंजाम देगी ।

दिव्यता अवश्य ही भीतर अनुभव होगी । अपनी यात्रा आरम्भ कीजिए ... परम प्रिय परमेश्वर आपका भीतर इंतज़ार कर रहे हैं ।

\*\*\*

*Ek Chintan hi Chetna la sakti hai. Sakaratmak Chetna janha Chinta nahi hai, siraf ek prarthana ki soch hai, wahi Chaitanya hai.*

एक चिंतन ही चेतना ला सकता है। सकारात्मक चेतना जहाँ चिंता नहीं है , सिर्फ एक प्रार्थना की सोच है, वही चैतन्य है ।

\*\*\*

*I wished to douse my Wish Lamp. But I was not waiting for a wind to blow it off rather I opted for stopping the supply of oil in it. Slowly withdrawing from unending and ever increasing wish list was my option. This was taught by my Guru Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji Maharajji.*

मैं अपने कामना रूपी दीपक को बंद करना चाहता था । पर मैं हवा की इंतज़ार नहीं कर रहा था कि वह उसे बुझा दे पर मैंने दीपक को तेल न देना ही ठीक समझा । धीरे धीरे अनंत और सदा बड़ती जाने वाली कामनाओं से पीछे हटने का ही मेरा विकल्प था । यह मुझे मेरे गुरु महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी ने सिखाया था ।

\*\*\*

*Silence in isolation do have its own sounding. A spiritualist tries to silence that...to encounter divinity*

अलगाव में मौन की अपनी ही ध्वनि होती है । एक आध्यात्मिकवादी उसे भी शांत करने का प्रयास करता है .... दिव्यता से मिलन के लिए ।

\*\*\*

*Vital energy is up kept in the power of soul. And vital energy is awakened or energized with constant remembrance of Ram Naam.*

आत्मा की सत्ता में महत्वपूर्ण शक्ति समाहित होती है । वह महत्वपूर्ण शक्ति सतत राम नाम से जागृत होती है ।

\*\*\*

*Spiritualism is an art of soul. There are many pit falls and failures on the way. But never contemplate about failures only do create a falling ground on LORDS lap. No one can trust you more than your own Lord... My Raam.*

आध्यात्मिकता आत्मा की चित्रकारी है । इस मार्ग में बहुत सी असफलताओं का भी सामना करना पड़ता है । पर कभी भी असफलताओं का चिंतन नहीं करना, अपने गिरने का स्थान केवल परमेश्वर की गोद में ही बनाइएगा । आपके अपने परमेश्वर से अधिक आप पर कोई और विश्वास नहीं कर सकता.... मेरे राममममम

\*\*\*

*I looked up as I was measuring the sky with my eye. Actually I got measured by Divine.*

मैंने ऊपर देखा और आकाश को अपने नेत्रों से माप रहा था । पर असलियत में मुझे परमेश्वर ने ही माप डाला ।

\*\*\*

*Quest and Questions; Senses and sense of belonging. All are my ESTA--- My Raam*

प्रश्न व खोज ; इंद्रियाँ व अपनेपन की भावना .... सभी मेरे ईष्ट हैं --- मेरे राम

\*\*\*

*My lord wants nothing from me just HIS name lovingly remembered and uttered. Such loving is my Raam.*

मेरे परमेश्वर मुझसे कुछ नहीं चाहते, केवल उनका नाम प्यार से स्मरण करना व उच्चारण करना । ऐसे प्यारे हैं मेरे राममम ।

\*\*\*

*Love is not physical chemistry its soul content and eternally immortal attributes of divine. So never narrow it down. Ram Ram*

प्रेम कोई भौतिक रसायन नहीं है , वह आत्मा की सामग्री है और परमेश्वर के सनातन अनश्वर गुण । कभी इसे संकुचित नहीं बनाना ।राम राम

\*\*\*

*Weakest Mortal like me feels the POWER.. As we can wish for others without any expectation of 'return gift', I am a proud family member of Swamiji Satyanandji Maharajj. Pray for others (secretly) is the Mantra for RAM NAAM Sadhak. Pranam Param Guru.*

मेरी तरह कमजोर नश्वर इंसान शक्ति महसूस करता है .... जब हम निष्काम भाव से दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं ; मैं स्वामी जी सत्यानंद जी महाराजजी का एक बहुत गौरवांगित सदस्य हूँ । दूसरों के लिए गुप्त रूप से प्रार्थना करना राम नाम साधक का मंत्र है । प्रणाम प्रणाम गुरु

\*\*\*

*Sakaha Bhava is purest feeling for lord. But it's only feasible when we travel to the eternal plane of bhakti sadhana.*

सखा भाव सबसे पवित्र भाव है परमेश्वर के लिए । पर यह तभी सम्भव है जब हम भक्ति साधना के दिव्य स्तर पर यात्रा करते हैं ।

\*\*\*

*Corrective measures are way of life. O lord keep my mind always open-ended and ready to unlearn.*

सुधारक उपाय एक जीवनशैली है। हे प्रभु मेरा मन सदा खुले विचारों का रखिएगा और सदा नया सीखने व पुराना छोड़ने के लिए तत्पर ।

\*\*\*

### ***Maa You are cosmic Maa***

*You are epitome of creation  
Care and nurturing O Maa.  
You are shield and most*

*Patient Teacher of the cosmos.  
Maa you punish us  
Only for our elevation and salvation.  
Maa you take all our guilt and pain  
Yet you pardon us  
So loving You are O my MAA.  
I cry to repent  
I cry for my guilt  
I cry in your Viraha  
Yet you stand by tell me only  
"You remember me acknowledge me is enough I am your Maa".  
Maa you are prakriti  
You are my destiny  
Just call me Maa  
I live upto u O Maa.  
You are my ever loving Maa.*

**मां आप दिव्य मां हैं**

ओ मां आप सृष्टि में

करुणा व दया की

सर्वोच्च हैं

आप कवच हैं तथा ब्रह्माण्ड

अति धैर्य शिक्षक ।

मां आप केवल हमारे उत्थान

और मुक्ति के लिए

हमें दण्ड देती हैं ।

मां आप हमारी

अपराध भावएं व पीडाएं

ले लेती हूँ

और फिर भी क्षमा करती हूँ

इतनी प्रेममयी हूँ आप ओ मेरी मां ।

मैं पश्चाताप में रोता हूँ

मैं अपराध भावनाओं के कारण रोता हूँ

मैं आपश्री के विरह में रोता हूँ

'तुम मेरा स्मरण करते हो, मुझे मानते हो, यह बहुत है, मैं तुम्हारी मां हूँ'

मां आप प्रकृति हूँ

आप मेरी नियती हूँ

बस मुझे आप बुला लीजिए

मैं आपश्री के अनुसार ही जीता हूँ

आप मेरी परम प्यारी मां हूँ ।

\*\*\*

*Everybody says "I am on the move". But nobody tells me till now where they have reached! I am telling on spiritual context.*

सभी कहते हैं 'कि मैं सदा चला रहता हूँ' पर मुझे यह कोई नहीं बताता कि वे कहां पहुंचे हैं ! मैं आध्यात्मिक प्रसंग में बात कर रहा था ।

\*\*\*

*Somebody is watching me! Yes I am under constant surveillance of Ram. All Ram Naam Sadhaks realize this so elevation is assured. Dhanya ho Swamiji Maharaj for such beautiful Gift to us in the shape of Naam Daan which assures SALVATION. Akaran pyar prabhu, akaran kripa. Aatmik pranam Guruvareshu.*

मुझे कोई देख रहा है ! जी हां मैं राम की सतत निगरानी में हूं । यदि यह सभी राम नाम साधक अनुभव करें तो उत्थान का तो आश्वासन है । धन्य हो स्वामी जी महाराज इतने सुंदर राम दान उपहार के लिए जो मुक्ति का आश्वासन देता है । अकारण प्यार प्रभु , अकारण कृपा । आत्मिक प्रणाम गुरुवारेशु ।

\*\*\*

*All GODS are one all GURUS are mirror reflection of God.  
We DIVIDE them.  
We make them and call them  
My God  
My Guru...such narrow,  
we devotees are!  
UNIVERSAL CONSCIOUSNESS DIVIDES NONE.*

*सभी भगवान एक हैं और सभी गुरु परमेश्वर के प्रतिबिंब हैं*

*हम सभी को बांट देते हैं*

*हम बनाते हैं उन्हें*

*और बुलाते हैं*

*मेरा प्रभु*

*मेरा गुरु ... इतने संकुचित*

*हम उपासक हैं!*

*सार्वभौमिक चेतना किसी को बांटती नहीं है ।*

\*\*\*



*You don't need to have beautiful eyes to see the beauty of Prakriti. Beautiful mind can see these as spiritualism within teach us to appreciate and move ahead. Ram Naam Sadhana gives you this sublime vision.*

आपको प्रकृति की सुंदरता देखने के लिए सुंदर नेत्रों की जरूरत नहीं है। सुंदर मन यह सब देख सकता है क्योंकि आध्यात्मिकता हमारे भीतर हमें सराहना व आगे बढ़ना सिखाती है। राम नाम साधना आपको यह उदात्त दृष्टि देती है।

\*\*\*

*Sound is the CONSCIOUS SKETCH on the Canvas Called SILENCE.*

मौन के कैनवस पर ध्वनि एक चेतन चित्रकारी है।

\*\*\*

*Sound sustains on the Chaos of SILENCE. And Silence is also loud if we hear them deep.*

ध्वनि मौन के अराजकता पर निर्भर होती है। यदि हम मौन को गहरे सुनें तो मौन बहुत ऊंचा सुनाई पड़ता

है।

\*\*\*

*When you do prayer for someone even the whisper is heard by the other then you can be victim of many questions. It's better to PRAY in SILENCE and Keep it absolute SECRET as human being questions your goodness for sure. So My Maharishi told me to be silent and live secluded otherwise one can chance upon courting conflict of interests spiritually. We all are together and pray for each other but we are finally ALONE.*

जब आप दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं तो यदि दूसरे को आपकी प्रार्थना की भनक भी पड़ जाए तो आप कितने प्रश्नों के शिकार बन सकते हैं। इसलिए हमेशा मौन होकर प्रार्थना करें और पूर्ण तरह उसे गुप्त रखें क्योंकि लोगों को अच्छई पर प्श्न चिन्ह लगाने आते हैं। मेरे महार्षि ने मुझे मौन होने के लिए कहा और

एकांत में रहने के लिए कहा नहीं तो आध्यात्मिक स्तर पर समान शौक में परस्पर विरोधी भावों का सामना करना पड़ सकता है । हम इसमें एक साथ हैं तथा एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं पर अंततः अकेले ही हैं ।

\*\*\*

*Search your INNOCENCE and discover your TRUE SELF. Through Naam Jaap it is possible, as within the TRUE SELF is posited the Sanctum Sanctorum of RAM. MERGE WITHIN.*

अपनी सरलता को खोजिए और अपने आत्मा को प्रकट करिए । यह नाम जाप से सम्भव है , क्योंकि आत्मा में राम विराजमान हैं । भीतर विलीन होइए ।

\*\*\*

*AKARAN KRIPA AND AKARAN PREM goes only with LORD and not among the HUMAN.*

अकारण कृपा व अकारण प्रेम केवल परमेश्वर के साथ सम्भव है मनुष्यों के साथ नहीं ।

*Systematic thinking at the conscious level can unlock the inner silences which do speak out as INNER GUIDE. So please don't crowd your thought with trifling matters of life as reflections of inner 'Ignorance' and outer wisdom. TIME TO UNWIND....*

चेतना के स्तर पर नियमित चिंतन भीतर के मौन के ताले खोल सकता है ; मौन जो एक भीतरी मार्गदर्शक के भाँति बोलते हैं

इसलिए अपने विचारों को जीवन के बेफजूल के कार्यों जैसे भीतर की अज्ञानता और बाहरी ज्ञान के प्रतिबिम्ब की भीड़ से न भरिए । यह आपको खोलने का समय है अपने ...

\*\*\*

*INNOCENCE of Child is closest thing to depict the divine attributes. Learn what is divine love from the Child. IT'S PURE SELF LESS AND MOST PIOUS AS MY RAAUUUM!*

दिव्यता के गुण दर्शाने के लिए बच्चे की सरलता सबसे निकटतम चीज़ है । बच्चे से सीखिए कि दिव्य प्रेम क्या है । वह पवित्र, निस्वार्थ और राम की तरह सबसे पावन है ।

\*\*\*

*If you realize GOD is in you then why question HIM! He is within since ever and would remain forever.*

यदि आप परमेश्वर को अपने अंदर अनुभव करते हैं तो उसपर प्रश्न क्यों उठाते हैं ? वे सदा से ही भीतर हैं और वहाँ ही रहेंगे सदा ।

\*\*\*

*How long we will be creating BOUNDARIES of ME and MINE THEY and THINE.*

कब तक हम मैं और मेरा तू और तेरा की सीमाओं की रचना करते रहेंगे?

\*\*\*

Sounding an utterance punctuated with silence is an EXPRESSION. Talk to divine this way...

ध्वनि का उच्चारण मौन के विराम के साथ एक अभिव्यक्ति ही है । परमेश्वर के साथ ऐसे बातचीत कीजिए ...

\*\*\*

### ***Playing With "Time"***

*We all are in Time Line. In this time line we think, act and express which grossly becomes Karma or endeavour, yet when time-line is non-active physically then we only think and wonder whether this is right time or not. Some people who dwell in superstitions world do think about auspiciousness of time or otherwise. Likewise "Non-Action" in time line makes us over conscious which leads to erosion of confidence level and even make people timid at the time of initiation and action. The time smiles at our wondering attitude and quickens its traverse leaving us far behind and lagging.*

*Life is all about playing with Time called "NOW". Time is precious as our breath it passes off fast as every second we loose from our life"s time-line meaning our given life-span. Think backward and realize that how our "time line" of past was wasted by not putting our thought and act together. Think how our inhibitions led to "held up" of our many un-cherished plans. Right now look at the watch and try to objectively realize how you have handled the day in its term of time*

*line and think how you could have avoided the waste of huge potential and promises you cherished.*

*It is true; in the "time-line" every time is not that friendly. But how to make it friendly must also be realized by altering, pre-poning or even postponing. "Time" is a playground of life. Here we have come to play even pre-supporting it is "pre-destined". Because time allows a space for you to voice, act and create. Because life is all about endeavour acted upon in time line and given space.*

*In "Time-line" one must jump in, and with time one would get returns in leaps and bound, just act on time and wait. Time gives you back in equal term as waves of sea takes nothing and sends the thing back which is thrown in the sea. Time reciprocates to our words thinking and action.*

*Time be read as "scope", if we are healthy, straight thinker and unharmed. Time also gives us dividend in coming time. Time appreciates the law of nature and punishes those who are anti-nature.*

*So revere the Time and put your ideas, thought and action together and dedicate it to Time-line. Once the Time line is activated with a purpose or mission then one is bound to play on the lap of time line.*

*Think no more and brood never. Wonder no more as your time is NOW. Be a strategist to take the Time on your side, be pragmatic to evaluate time and think time as "Divine" and dedicate yourself fully with your perseverance to reap the fruit from the Time. Talents are to be showcased in "Time line" so why wait! Act now and right now. Your mantra to tame the time is "Doing the thing at Right Time". So anticipate time and put together your all efforts as Time will give back everything. Because Time keeps nothing with it and pays back what we sow.*

## समय के साथ खेलना

हम सभी समय रेखा में हैं। इस समय रेखा में हम सोचते हैं, कृत करते हैं और अभिव्यक्ति करते हैं जो कि कर्म बन जाते हैं, पर फिर भी जब समय रेखा शारीरिक रूप से सक्रीय नहीं होता तब हम केवल सोचते हैं और विस्मय होते हैं कि क्या यह समय सही है कि नहीं। जो व्यक्ति अंधविश्वास में जाते हैं वे शुभ समय या नहीं

विचारेंगे। इसी तरह असक्रियता हमें जरूरत से ज्यादा सजग कर देती है जो कि आत्मविश्वास का अपरदन कर देती है। समय हमारे विस्मयकारी भावों पर मुस्कराता है और अपनी रफतार तेज करके हमें पीछे छोड़ जाता है।

जीवन उस समय जिसे हम 'वर्तमान' कहते हैं उसका नाम है। समय बहुमूल्य है जिस तरह हमारी श्वास और वह हर पल हम अपने जीवन काल से गवां देते हैं। जरा पीछे मुड़ कर देखिए और अनुभव कीजिए कि कैसे हमारी समय रेखा सब व्यर्थ हो गई केवल इस कारण कि हमने अपने विचार और कृत्य एक साथ नहीं कए। सोचिए कैसे हमारी कमजोरियों ने हमें रोका तथा कितने सपने नहीं पूर्ण हुए। अभी अपनी घड़ी पर नजर डालिए और विचार कीजिए कैसे आपने अभी दिनचर्या सम्भाली समय रेखा के अनुरूप और कैसे आप कार्यक्षमताव अपने सपनों को नष्ट होने से रोक सकते थे।

यह सत्य है कि समय रेखा में, हर समय अनुकूल नहीं होता। पर उसे अनुकूल कैसे बनाया जा सकता है बदलाव ला कर, पहले कर के या फिर बाद के लिए छोड़ कर, यह भी अनुभव कपना अति आवश्यक है। समय जीवन की क्रीडास्थली है। यहां हमें खेल खेलना होता है इसके बावजूद कि वह पूर्व निर्धारित है। समय आपको क्षेत्र देता है कि आप कह सकें, कर सकें तथा रचना कर सकें। क्योंकि जीवन समय रेखा व क्षेत्र में एक प्रयास है।

समय रेखा में हमें खूद पडना चाहिए और समानुसार हमें बहुत अच्छा फल प्राप्त होगा, केवल समय पर निर्णय लीजिए और इंतजार कीजिए। समय सब कुछ वापिस लौटाता है उसी तरह जिस तरह समुद्र की लहरें कुछ नहीं रखती हैं और सब कुछ वापिस ले जाती हैं। समय हमारे शब्द विचार व कृत्य सब लौटाता है।

समय को एक क्षेत्र समझना चाहिए यदि हम स्वस्थ, सीधा सोचने वाले तथा कष्ट नहीं देते। समय हमें आने वाले समय में सूद भी देता है। समय प्रकृति के नियमों की सराहना करता है और दंडित भी करता है जो प्रकृति के विरुद्ध हैं।

इस लिए समय से सचेत रहिए और अपने विचार, कल्पनाएं व कृत इकट्ठे कीजिए और समय रेखा पर समर्पित कर दीजिए। एक बार समय रेखा किसी उद्देश्य से सक्रीय हो गई तो हम समय रेखा की गोद में ही खेलेंगे।

कुछ न सोचिए और कभी रोन धोना न करें। विस्मय होकर भी न सोचें क्योंकि आपका समय अब है। समय को अपने साथ रखिए, समय का अवलोकन करिए और समय को दिव्य समझ कर पूर्ण निष्ठा व दृढ़ता से समय को फलित करें। प्रतिभाओं का प्रदर्शन करना है समय रेखा में, सो क्यों रुकें। अभी कदम उठाइए। समय को अपने अनुसार चलाने के लिए आपका मंत्र है 'सही समय पर सही कार्य करना'। समय

का पहले से ही विचार करना और अपनी पूरी मेहनत से कार्य करना , आपकी मेहनत समय लौटाएगा । क्योंकि समय अपने पास कुछ नहीं रखता और वही देता है जो हम बीजके हैं ।

\*\*\*

*Offering a space to others is building the dream bridge of togetherness.*

दूसरों को जगह देना ऐसे जैसे एकजुटता का सपनों का सेतु बना रहे हों ।

\*\*\*

*Intuition is the mode of inner wisdom deliberations. Capitalize it with RAM BHAVA.*

प्रतिभज्ञान ( intuition) भीतरी ज्ञान की विवेचना का साधन है । राम भाव से इसको पूँजी बनाइए ।

\*\*\*

*Offer your patience and hear others. Who knows where from inspiration can surface? Well spiritual inspiration I hear in HIS name... Raam.*

दूसरों को धैर्य से सुनिए । कौन जाने कहाँ से प्रेरणा जागृत हो जाए ? आध्यात्मिक प्रेरणा में परमेश्वर के नाम में ही सुनता हूँ.....

\*\*\*

*Measure your own spiritual strength to amass the troops inside and then wage the war.*

अपनी आध्यात्मिक शक्ति का अवलोकन कीजिए ताकि भीतर सेना एकत्रित कर सकें और फिर करिए युद्ध ।

\*\*\*

### ***Within RAM --Mine and Thine***

*Tu aur Tera. Mey aur Mera. These two merges become tera mera.  
So eternally in all OF YOU Ram stays. MINE AND THINE MERGES HERE.*

O RAM AM YOURS  
O "I" AM OF RAM.

THIS BLISSFUL STATE IS OUR GOAL MAHARISHI SWAMIJI  
DR VISHWA MITTER JI MAHARAJI ONCE TOLD US.

*Be in this bhav for Ram Naam vandana.*

## राम में -- मेरा और तेरा

तू और तेरा । मैं और मेरा । यह दोनों मिल कर तेरा मेरा बन जाते हैं ।

सनातन रूप से आप सभी राम में ही रहते हैं । मेरा और तेरा यहाँ विलीन हो जाता है ।

ओ राम में आपका हूँ

और राम का "मैं"

महार्षी स्वामीजी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी

ने एक बार हमें यह बताया कि यही परमानंद स्तर हमारा लक्ष्य है ।

राम नाम वंदना के लिए इसी भाव में रहिए ।

\*\*\*

*More we INTERNALIZE then the outside sound would sound like Whispers. Naam sadhana is to touch the inner most depth of silence with a conscious reduction of expressive noise outside.*

जितना हम भीतर जाते जाएँगे उतनी ही हमें बाहर की ध्वनि हल्कि महसूस होगी । नाम साधना से मौन की सबसे गहन तह को चेतनता से कम हुई बाहर के शोर की अभिव्यक्ति को छूना है

\*\*\*

*Whenever our INNOCENCE makes us Loud we are misinterpreted.*

जब भी हमारी सरलता आडम्बर बनेगी , हम हमेशा गलत समझे जाएँगे ।

\*\*\*

*I look upto Day after tomorrow, as I toil today, do count yesterday. I know If I plant a spiritual tree say mangoes this will be enjoyed by generation next. RAM NAAM we are enjoying today as SADHANA because our GURUJANS TOILED AND DID TAPASYA with the Name and we reap the fruits.*

मैं कल के बाद का दिन देखता हूँ, क्योंकि मैं आज मेहनत करता हूँ, बिता हुआ कल ज़रूर गिनता हूँ। मुझे आभास है कि यदि मैं आध्यात्मिक पेड़ कहिए आम का लगाऊँगा, अगली पीढ़ी इसका आनन्द ले सकेगी।  
राम नाम जिसका हम आज साधना के रूप में आनन्द ले रहे हैं वह इसलिए क्योंकि हमारे गुरुजनों ने मेहनत की, नाम की तपस्या की और आज हम फल खा रहे हैं।

\*\*\*

*Whatever be our mortal calling if we nurture the sound and silence of RAM NAAM within then all around success is assured.*

चाहे नश्वर रूप से हम जो भी कार्य करें, यदि हम राम नाम की ध्वनि व मौन का भीतर परिपोषण करते हैं तो हर तरफ़ से हमें सफलता ही प्राप्त होने का आश्वासन है।

\*\*\*

*Why people are so possessive which lead to their sufferings.  
Do ask yourselves  
Who are you or What you are and what all you have?!  
Who I am! What I am!  
How does it matter that what you have or you don't have!  
We all have no other possession than our Legacy of Eternity.  
Whatever we possess is MAYA for US  
and LILA for RAM.  
Maya is upto our gross body entity only.  
Beyond it is eternity or subtle entity.  
So be possessive about our eternity and*



*prepare yourself for the final merger with RAM.  
Again we go there without any material possession.  
I smile when I am poor  
and  
I would cry if I would have plenty.  
BE FULL with Plenty of RAM NAAM!*

लोग इतने अधिकार संबंधी क्यों होते हैं जिनके कारण उन्हें इतना सहना पड़ता है ?

अपने आप से पूछिए

कौन हैं आप या क्या हैं आप और क्या कुछ है आपके पास?

कौन हूँ मैं! क्या हूँ मैं!

इससे क्या फर्क पड़ता है कि आपके पास क्या है या क्या नहीं!

हमारे पास अपनी शाश्वतता की धरोहर के अलावा कुछ नहीं है।

जो भी हमारे पास है वह सब माया है और राम की लीला।

माया केवल देह तक ही सीमित है।

देह के पार तो दिव्यता है या सूक्ष्म दिव्यता

सो अपनी दिव्यता के प्रति आधिपत्य जमाइए

और स्वयं को राम में विलीन होने के लिए तैयार करिए।

हम वहाँ भौतिक चीजों के बिना जाते हैं।

मैं मुसकराता हूँ जब मैं गरीब हूँ

मैं रोता यदि अमीर होता

*असंख्य राम नाम द्वारा अपने आप को भर दीजिए !*

\*\*\*

*WHY IS When?  
Where Are Why?  
How is When?  
Why comes where!  
When becomes Why?  
CAN you Say Why I wrote this!  
Because we move around these and get nothing finally...  
There is a beautiful world BEYOND  
WHY WHEN WHERE HOW .....Explore it with Shraddha and Trust.*

*कब क्यों है?*

*कहाँ क्यों है ?*

*कैसे कब है?*

*कैसे कहाँ आया ?*

*कब कैसे बन गया?*

*क्या आप बता सकते हैं कि मैं यह क्यों लिखा?*

*क्योंकि हम इन्हीं के आस पास घूमते रहते हैं और कुछ हासिल नहीं होता ...*

*एक बहुत सुंदर जगत है जिसे कहते हैं ' पार'*

*कैसे कब कहाँ क्यों .... श्रद्धा और विश्वास के साथ समन्वेषण कीजिए*

\*\*\*

*Why there is a Battle in life to get anything? Life is lone, we are seriously Alone and we came to this world alone and our journey beyond this body is also alone. So why we have warring factions and groups battling out for WE as none would die and none came to this world as WE. So find the TRUCE in life and try to evolve conflict resolution. And if there is any battle alone to be fought with the SELF. Desire, Perversion, Want, of self are to be won over. LIFE IS ALONE AND LONELY and life is not worth a battle only peace must prevail*

जीवन में कुछ पाने के लिए इतना संघर्ष क्यों है? जीवन एकाकी है, हम सच में अकेले हैं और हम यहाँ अकेले ही आए थे और हमारी यात्रा यहाँ के पार भी अकेली ही है। क्यों हमारे पास संघर्ष की टुकड़ियाँ और युद्ध के समूह हैं? क्योंकि हम 'हम' होकर मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे और हम 'हम' बनकर इस संसार में नहीं आए थे। यदि कोई युद्ध है, तो वह स्वयं के साथ ही लड़ना है। कामनाएँ, विकृति, स्वयं की लालसाओं पर विजय प्राप्त करनी है। जीवन एकाकी है और अकेला और यह जीवन युद्ध के लायक नहीं है केवल शांति अभिभावी होनी चाहिए।

\*\*\*

*We being JUDGEMENTAL by nature and give reactions to every issue instead of RESPONDING remain core of conflict in life.*

हमारी प्रवृत्ति ही दूसरों पर अनुमान लगाने की होती है और हर बात पर प्रतिक्रिया करने की न कि केवल उत्तर देने की और यह ज़्यादातर हर संघर्ष का मूल कारण बनता है।

\*\*\*

*Bring positivism by understanding others and respect all no matter who they are can surely change the micro scenario.*

दूसरों को समझ कर सकारात्मकता लाइए और सब का आदर करिए चाहे जो कोई भी वे हों; ऐसा भाव सूक्ष्म दृश्य बदल देता है।

\*\*\*

*It's our beautiful world of Illusion. Just one should not become victim of this MAYA. One needs to negotiate beyond this mala of Maya and beget eternity the only truth in Lord's world!*

यह हमारा अति सुंदर संसार माया का है । बस हमें माया का शिकार नहीं बनना है । हमें माया की माला के पार बात चीत करनी है और दिव्यता को पाना है , जो कि परमेश्वर के जगत में केवल सत्य है ।

\*\*\*

*Criss crossing the maya is the cause, effect and goal of Ram Naam Sadhana. Give the world your divine smile and be in your own space and time where only sublimity can be encountered and nowhere else and surely not in any person. Ram Ram.*

माया को निशेध करना ही राम नाम साधना का करण, प्रभाव व गंतव्य है । संसार को अपनी दिव्य मुस्कराहट दीजिएगा और अपने क्षेत्र व समय में सदा रहिएगा वहां ही केवल दिव्यता का सामना हो सकता है और कहीं नहीं और निश्चित रूप से किसी इंसान से तो बिल्कुल नहीं ।

\*\*\*

*There is A Social Self. There is a Self of Relations given and man made both. There is ecclesiastical or religious self. There is personal secret self. Beyond it there is spiritual self which is created and sanctified by guru. Be in that divine spiritual space where you encounter your lord. Rest of them are mortal and purely temporary. Nothing would give anything for elevation of your soul. So soul content is Guru and Eshta and nothing else and nowhere else.*

एक सामाजिक व्यक्तित्व है । एक व्यक्तित्व सम्बंधों का है जो हमें दिया गया है और जो हमने स्वयं बनाया है। और एक धार्मिक व्यक्तित्व है । एक निजी गुप्त व्यक्तित्व भी है । उसके पार आध्यात्मिक व्यक्तित्व जो कि गुरु द्वारा रचा व पवित्र किया गया है । उस दिव्य आध्यात्मिक क्षेत्र में रहिए जहां आप अपने परमेश्वर से भेंट करते हैं । बाकि सब नश्वर हैं और पूर्ण रूप से अस्थाई । आपके आत्मा के उत्थान के लिए वे सब कोई सहयोग नहीं देंगे । आत्मा के अन्तर्वस्तु तो केवल गुरु व ईश्वर हैं और कुछ नहीं और कोई नहीं ।

\*\*\*

*You live for everyone and do all your duties. But thats all. Here you stop your own expectations will begin now. Please hold your breath. Never expect RETURN GIFT and not even a smile of acknowledgement.*

*This is why while discharging all mortal duties one must develop a relation with eternity by NAAM SIMRAN and complete surrender to Guruvachan so that you are not let down by mortality rather lifted by eternity.*

आप सब के लिए जीएं और सब कर्तव्य करें। बस। यहां आप रूक जाइए आपकी अपनी स्वयं की अपेक्षाएं अब आरम्भ होंगी। अपनी सांस रोकिए। कभी भी वापिस कुछ पाने की अपेक्षा नहीं करनी, एक मुस्कराहट तक की भी स्वीकृति नहीं।

इसीलिए जब सभी भौतिक कर्तव्य निभा रहे हों तो हमें राम नाम सिमरन द्वारा दिव्यता से सम्बंध स्थापित करना चाहिए और गुरुवचनों पर सम्पूर्ण समर्पण ताकि आप नश्वरता के कारण फिसल न जाएं अपितु दिव्यता के कारण उत्थान हो सके।

\*\*\*

*Ram Loves YOU And He Is Asking No Service No Puja No Extravaganza Of Prashad But Just Take His Loving Name. That Much For Eternal Merger With Ram Declared By Swamiji Maharajji. Realize Your Vaikuntha right now in this mortal world.*

राम आपसे प्यार करते हैं और वे आपसे न कोई सेवा न पूजा न प्रसाद का आडम्बर की माँग कर रहे हैं पर केवल उनका प्यारा नाम लेना ही चाह रहे हैं। केवल उतना ही दिव्यता में राम से विलीन होने के लिए ..ऐसी स्वामीजी महाराजश्री ने उद्घोषणा की है। अपने वैकुण्ठ को यहीं इस नश्वर जगत में अनुभव कीजिए।

\*\*\*

*Ram is Maa; He is kanha He is Radha. HE HAS ATTRIBUTES OF Brhama AND Shiva. HE IS ONE ETERNAL BE IN HIS WORLD so that no mortal woes or kashta can break you. You be in sublimity 70 % rest 30% do your duty and never seek happiness there. BLISS LIES IN DIVINE 70%. Ram Ram*

राम माँ हैं, वे कान्हा हैं, वे राधा हैं। उनके पास ब्रह्मा व शिव के गुण हैं। वे ही केवल एक दिव्यता हैं, उनके जगत में रहिए ताकि कोई भी नश्वर पीडा या कष्ट आपको तोड़ नहीं सके। ७०% उदात्त भाव में रहिए बाकि ३०% अपने कर्तव्य करिए और कभी वहाँ सुख की तलाश न कीजिए। आनन्द केवल ७०% दिव्यता में है।  
राम राम

\*\*\*

*Our HEEL make us walk and run.  
And our HEALing venture can make many on to MOVE , who otherwise were immobile for long!  
You can Heal all.  
Just by a deep silent secret prayer for others.  
Here GLORY OF RAM NAAM PREVAILS.*

*हमारी ऐड़ी हमें चलने व दौड़ने में मदद करती है ।*

*और हमारा आरोग्यता का अभियान बहुतों को आगे बढ़ा सकता है, जो कि बहुत देर से स्तब्ध थे ।*

*आप सब को आरोग्य कर सकते हैं ।*

*केवल दूसरों के लिए एक गहरी गुप्त प्रार्थना करके ।*

*यहाँ राम नाम की महिमा रहती है ।*

\*\*\*

*Having done huge ram naam sadhana, enormous naam jaap, lead a pious life. Then question comes have I become closer to my RAM. Are my Gurujans around! Put yourself to test. Pray for any life form or even Nature. Your prayers will be answered. So you know the proximity with your lord. This self tests be kept secret barometer of your spiritual progress and allows more rigorous sadhana.*

इतना राम नाम साधना की, असंख्य नाम जाप किया , अब पवित्र जीवन व्यतीत करिएगा । फिर यह प्रश्न उठता है कि क्या मैं अपने राम के निकट आया हूँ । क्या मेरे गुरुजन आस पास हैं ? अपना इम्तिहान लीजिए । किसी भी तरह के जीव या फिर प्रकृति के लिए प्रार्थना कीजिए । आपकी प्रार्थनाएँ स्वीकार होंगी । तब आप को अपने परमेश्वर से समीपता का पता चलेगा । यह स्वयं का इम्तिहान एक गुप्त मीटर होगा आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए और फिर कठोर साधना के लिए प्रेरित होंगे ।

\*\*\*

*State of silence in mind does not mean you have ceased to think and nothingness is prevailing. It's wrong. Silencing the mind is to reduce silent noise emitting out of conflicting thought, ideas on different subjects, criss crossing each other in the mode of riot of noise yet in unexpressive and non utterance state is prevelant.*

*To encounter this focussed themed and harmonious thought will flow and roaring and conflicting thought will subside considerably. Again you will realize those harmonious focussed thoughts are further subsiding in sub conscious level. Here consciousness is emptying itself to receive new wisdom in silence. And wisdom when struck becomes jyoti and that is universal intelligence. Here comes d conscious play of silence and your mind gets in touch with brilliance lighted up which is jyoti swarup Raum. This is Rama consciousness which can be realized through Maun Sadhana of Ram Naam Sadhana. Jai jai Ram*

मन के मौन का तात्पर्य यह नहीं है कि आपने सोचना ही बंद कर दिया है और कुछ भी नहीं हैं वहाँ । यह ग़लत है । मन को शांत करने का मतलब है कि उस शोरगुल को शांत करना जो कि विचारों के संघर्ष से निकलती हैं, विभिन्न विषयों पर विचार आना , विचारों का शोर के उपद्रव के रूप में एक दूसरे को काटना पर फिर भी न अभिव्यक्त और न उच्चारण का स्तर बना रहता है ।

इस एकाग्रचित्त विषय और सामंजस्यपूर्ण विचार का बहाव होगा और गरजते हुए व संघर्ष पूर्ण विचार थम जाएँगे । आप महसूस करेंगे कि यह सामंजस्यपूर्ण विचार अचेतन स्तर पर भी थम जाएँगे । यहाँ चेतना नए ज्ञान को ग्रहण करने के लिए मौन में स्वयं को खाली कर रही है । और यह ज्ञान जब जागृत होता है तो ज्योति बनता है और वह सार्वभौमिक ..... यहाँ मौन का चेतन रूप समक्ष आता है और आपका मन प्रकाशित प्रतिभा से जग जाता है जो कि ज्योति स्वरूप राम हैं । यह राममय चेतना राम नाम की मौन साधना से अनुभव की जा सकती है । जय जय राम

\*\*\*

*Ahankar ka hunkar khatam kar do Maa.  
Ahankar ki krodh, dwaish, abhiman  
Meeta de Maa.  
Ek shishu bhav jaga de Maa  
Fir sey rona tereliye bilakna  
Bapis de dey mere Maa.  
Mere hasthi mita dey Maa  
Terey goud mey le ley he Maa.  
Maa tere goud mey roney de Maa*

अहंकार का हंकार खत्म कर दो माँ  
अहंकार का क्रोध, द्वेष, अभिमान  
मिटाने माँ  
एक शिशु भाव जगा दे माँ  
फिर से रोना तेरे लिए बिलखना  
वापिस दे दे मेरी माँ  
मेरी हस्ती मिटा दे माँ  
अपनी गोद में ले ले माँ  
माँ अपनी गोद में रोने दे माँ

\*\*\*

### **MOST PIOUS JANAMASHTAMI IS BEING CELEBRATED.**

*KRISHNA FROM BAL LILA TO HIS BRAJ LILA OF RADHA BHAV TO ETERNAL GITA RUN THROUGH THE MIND. THIS TIME AND SPACE IS FEELING KRISHNA EXPERINCING KRISHNA AND FATHOMING KRISHNA BHAVA. KOTI KOTI PRANAM TO LORD KRISHNA.*

*Other day I met Kamal Mahajan ji and asked him what was today's pravachan. He with deep bhava narrated that*

*Maharajji talked about chapter 15 sloka 5 and said this one sloka of Gita is enough for life time for learning.*

*Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree said that lord Krishna called sadhak to be free from false prestige and asked to distance from association of dosha. He referred to a state who is above the pride and understand eternity and get freed from dualities of happiness and sorrow and know how to surrender to the supreme to beget eternity. This is the essence of Gita Shree Maharishi declared. I have tried to re understand it with Sankaracharyas commentary on Gita.*

### **परम पावन जन्माष्टमी मनाई जा रही है**

*कृष्ण बाल लीला से राधा भाव की ब्रज लीला से दिव्य गीता तक मानस में घूम रहे हैं। यह समय व क्षेत्र कृष्ण को महसूस कर रहा है अनुभव कर रहा है और कृष्ण भाव को समझ रहा है। भगवान श्री कृष्ण को कोटि कोटि प्रणाम।*



अभी पीछे मेरी कमल महाजन जी से भेंट हुई और मैंने पूछा कि आज का प्रवचन क्या था । उन्होंने गहरे  
भावविभोर होकर सुनाया कि

महाराजश्री १५ अध्याय का ५ वां श्लोक पर चर्चा की । और कहा कि यह एक श्लोक ही जीवन भर के ज्ञान के  
लिए पर्याप्त है ।

महर्षि स्वामी जी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री ने कहा कि भगवान कृष्ण ने साधक से झूठे मान मर्यादा तथा  
दोषों से दूर रहने को कहा । उन्होंने ऐसे स्तर का वर्णन किया जो कि मान से ऊपर है और दिव्यता की समझ  
है तथा सुख दुख के द्वन्द्व से मुक्त है और जहां परमेश्वर के आगे सम्पूर्ण समर्पण करके दिव्यता को पाना  
आता है । यही है गीता का सार, महाराजश्री ने समझाया । मैंने इसे फिर से शंकराचार्य जी की गीता पर टीका  
से समझने की कोशिश की है।

\*\*\*

### **ULTIMATE ETERNAL SURRENDER**

*The man with wisdom  
Devoid of delusion  
Remain the Wise Man.  
He is free from pride  
And discriminates none.  
He who has conquered over  
Evil of association,  
devoted life in devotion  
And spirituality is the wise man.  
That wise man  
For ever reflected  
On the nature of supreme self  
Remain engrossed in that.  
He is free from desire  
And no trace of want is left in Him.  
He is person with self control  
A monk above the likes and dislikes  
Happiness and sorrow  
Reaches the UNDECAYING STATE  
of eternal Merger with Supreme.*

## परम दिव्य समर्पण

ज्ञानी

जिससे माया दूर है

सदा बुद्धिमान रहता है ।

वह मान से मुक्त

तथा निरपेक्ष होता है ।

वह जिसने सभी दुष्टों के

संग पर विजय प्राप्त कर ली हो,

जीवन अपना भक्ति व आध्यात्मिकता

को समर्पित कर दिया हो

वह बुद्धिमान इंसान है ।

उस बुद्धिमान इंसान ने सदा

परमात्मा के स्वरूप पर ही

विचार किया

तथा उसी में मग्न रहा ।

वह कामना शून्य है

और इच्छा का एक कतरा

भी उसमें शेष नहीं ।

उसमें संयम है

और वह योगी है राग द्वेष

व सुख दुख के पार

वह परमेश्वर से विलीन

होने के लिए

अक्षय अवस्था पर पहुँच जाता है ।

\*\*\*

Harey Krishna, harey Rama  
Rama Rama, harey harey.

*Maharishi wanted us to understand, internalize and inculcate the essence of Gita. Pranam  
Gururuvareshu.*

*I am celebrating Krishna janmastomi by remembering your wisdom Hey Param Guru.*

हरे कृष्णा, हरे रामा

रामा रामा हरे हरे

महर्षि चाहते थे कि हम समझें, भीतर उतारें व गीता की टीका को अंतरनिर्विष्ट करें । प्रणाम गुरुवारेषु ।

हे परम गुरु मैं कृष्ण जन्माष्टमी आपश्री के ज्ञान को स्मरण करके मना रहा हूँ

\*\*\*

*Today the Day of CONSCIOUSNESS. Self within is me and mine. Within me HE resides. So when I  
say I AM THAT then the consciousness of atman and paramatman unifies which body can realize*

*for few seconds. That is Satchitananda or Bliss of Rama Bhava. Be in this consciousness of oneness. Inch towards eternal consciousness.*

आज चैतन्य दिवस है। आत्मा मुझ में है और मेरा है। मुझ में परमेश्वर विराजमान हैं। जब मैं कहता हूँ कि मैं "वह" हूँ तब आत्मा और परमात्मा की चेतना एक हो जाते हैं जो यह देह कुछ क्षणों के लिए वह अनुभव कर सकता है। यही सच्चिदानंद है या राम भाव का परमानन्द। इस एक्य चेतना में रहिए। दिव्य चेतना की ओर अग्रसर होते रहिए

\*\*\*

### **Mahachaitnya Bhava**

*Shree Shree Swamiji Satyanand ji Maharaj Shree declared for Ram Naam sadhak the methodology of sadhana is MANTRA YOG! He proclaimed Mantra is icon its SHAKTI and this facilitates Bhagavat Kripa. In this naam opens windows within one by one and light of bliss appears involuntarily.*

*Swamiji said some people believe that to control the heart or chetna or maan one can stop this process, for a halt or withdraw from ved bhava(inner contradiction of Bhava) or alter and even suggest a process of chetna. All these mean when mind tools our chetna and try to control our mind or maan in conscious manner.*

*He said its untrue and suggested one should loosen the maan otherwise mind become restless. He said by allowing SHITHIL BHAVA one can control mind or maan. Swamiji wrote " vyvharik maan ki upeksha karni chahiye essey antaratma ki sphurti hoti hai. Jis prakar neend ke chintan sey neend nai aati, balki bhav ko shithil kar deyney sey(neend) jaldi aati hai. Esi prakar bahot sey sochney sey....maan adhik chanchal hota hai..... esi prakar antarman ki jagriti tatha vybharik maan ki bashi karan sey maan key ananad ka utpanna karta hai. Maan ko jabardasti kabhi anandit nai kiya ja sakta".*

*Thus swamiji maharaj gave us direction of realizing consciousness of Ananda in Chaitnya bhava.*

*In Raam naam mantra sadhana one does encounter "maan" that poses problem to sadhana. Its fear, desire, psychological pretention, mortal perception of divinity or seeing eternity with the glass frame of lower religious taboos or rituals which engage our mind and sadhana halts and often negatively manifests.*

*Thus in Ram naam mantra sadhana Chinta or Chintan must be minimized. Its pure bhav contemplation of Ram Naam Gun or attributes that opens up vistas of consciousness where brilliance of light emits which is eternal wisdom. One should learn to swim in it without applying a conscious thinking to conclude or to derive enjoyment. Consciousness is not what you think consciously but it is realizing and experiencing the unrealized and unknown. This chaitnya avastha comes when we do not engineer what is to appear rather appreciating the appearance of kripa which is ananda of chaitnya bhava.*

*So maha chaitnya bhava comes when we submerge or down play our thinking and contrmptation and allow maha chaitnya to get awakened involuntarily which is beyond our mind and thinking.*

*So let we do our sadhana, mantra of naam will bring the chaitnya bhava and we must roll back all our fear inhibition and mortal expectations. As chaitnya shakti is mantrik and matrik shakti where our mind, thought and ego have no role. Do gig away chinta and downplay chintan one can encounter ANANDA or be in Maha Chaitnya which is nothing but Ramattwa or Rama consciousness!*

## महाचैतन्य भाव

श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री ने राम नाम साधक के लिए मंत्र योग ही साधना पद्धति घोषित की है। उन्होंने उद्घोषणा की कि मंत्र चिन्ह है और उसकी शक्ति भगवत् कृपा को सुगम बना देते हैं। यह नाम भीतर की खिड़की एक एक करके खोलता है और परमानंद का प्रकाश अनैच्छिक रूप से प्रकट हो जाता है।

स्वामीजी ने कहा कि कई लोग ऐसा सोचते हैं कि हृदय को या चेतना को या मन को नियंत्रण करके इस प्रक्रिया को रोक दिया जा सकता है, या वेद भावना से हटाया जा सकता है, या चेतना की कोई प्रक्रिया। इन सबका यही तात्पर्य कि यह मन हमारी चेतना पर नियंत्रण करता है या मन चेतन अवस्था में।

पर स्वामीजी ने कहा यह सत्य नहीं है और सुझाव दिया कि इस मन को ढीला करना चाहिए नहीं तो मन बेकाबू हो जाता है। उन्होंने कहा कि शिथिल भाव करने से हम मन का नियंत्रण कर सकते हैं। स्वामीजी ने लिखा " व्यवहारिक मन की उपेक्षा करनी चाहिए इससे अंतर्मन की स्फूर्ति होती है। जिस प्रकार नींद के चिंतन से नींद नहीं आती, बल्कि भाव को शिथिल कर देने से (नींद) जल्दी आ जाती है। इसी प्रकार बहुत से सोचने से ... मन अधिक चंचल होता है ... इसी प्रकार अंतर्मन की जागृति तथा व्यवहारिक मन के वशीकरण से मन का आनन्द उत्पन्न होता है। मन को ज़बरदस्ती कभी आनन्दित नहीं किया जा सकता।"

इस तरह स्वामीजी महाराज ने हमें चैतन्य भाव में आनन्द की चेतना को अनुभव करने के लिए निर्देश दिये ।

राम नाम मंत्र साधना में " मान" से भेंट होती है जो कि साधना में बाधा बनता है । उसका भय, कामना, ढोंग , नश्वर दृष्टिकोण से दिव्यता का आकलन या दिव्यता को निम्न धार्मिक अनुष्ठान द्वारा देखना , यह सब हमारे मन को बाँध लेते हैं और साधना रुक जाती है और नकारात्मकता उपजती है ।

राम नाम मंत्र साधना में चिंता या चिंतन को कम करना चाहिए । भाव विभोर होकर राम नाम के गुणों का मनन , चेतना के वह स्तर खोल देता है जहाँ प्रकाश की प्रतिभा दिव्य ज्ञान के रूप में विस्तृत होती है । हमें उसमें तैरना सीखना चाहिए बिना अपने चेतन विचारों के निष्कर्ष निकाल कर या उससे कोई सुख प्राप्त करने की अपेक्षा से । चेतना वह है जो आप स्वयं चेतन भाव से नहीं सोचते बल्कि वह जब उस अज्ञात को अनुभव व महसूस किया जाता है । । यह चैतन्य अवस्था तब आती है जब हम योजनाएँ नहीं बनाते कि क्या सामने आएगा बल्कि सराहना करते हैं उस कृपा की जो चैतन्य भाव आनन्द है ।

महाचैतन्य भाव तब आता है जब हम अपने विचारों के मनन को कम करते हैं और महाचैतन्य को अनैच्छिक तौर पर जो हमारे मन व विचारों से पार है उसे जागृत करने देते हैं ।

चलिए हम अपनी साधना करें , नाम का मंत्र चैतन्य भाव लेकर आएगा और हमें अपने सभी भय तथा नश्वर अपेक्षाएँ भुला देनी चाहिए । चैतन्य शक्ति मंत्रिक है और मैत्रिक शक्ति, जहाँ हमारा मन, विचार और अहम् का कोई योगदान नहीं है । चिंता व चिंतन को कम कीजिए ताकि आनन्द को पा सकें या महा चैतन्य में रहें जो और कुछ नहीं बल्कि रामतत्व है या राम चैतन्य !

\*\*\*

*I Think.....*

*I think and my mind works  
Thought and Idea emerge.  
Who thinks before my mind think  
And whose thoughts are anyway!  
The thinking soul  
The thoughtful karma  
Thoughtfully bottling wisdom  
All that Atman does.  
Again who tools atman  
And atmik samskars.*

*Well atman is guided  
By Guru and that  
Transcends many birth!  
Ram Naam when  
Sowed by ANUBHUT Guru  
Results are different.  
There Ram Himself  
Gets seated on your Vivek.  
The thought of healing  
And working for universal good  
Becomes our Thought  
That I Think  
By virtue of Guru Kripa  
RAM Kripa.  
Let all thoughts stream  
Towards universal good  
And help each other  
With karmik deeds or  
Doing good by submerging  
Self for atmik manifestation for all.  
Guru sharanam gachami  
Ram sharanam gachami.*

*में सोचता हूँ.....*

*में सोचता हूँ और मेरा मानस कार्य करता है*

*विचार और कल्पना उभर कर आते हैं*

*मेरे मानस के सोचने के पूर्व कौन सोचता है*

*और यह विचार किसके हैं?*

*विचारयुक्त आत्मा*

*विचारशील कर्म*

*ध्यानपूर्वक ज्ञान*

यह सब आत्मा करता है !  
फिर से आत्मा और  
आत्मिक संस्कारों  
को कौन  
उपकरण बनाता है?  
आत्मा का मार्गदर्शन  
गुरु द्वारा होता है  
जो कितने ही जन्म  
अतिक्रमण करते हैं !  
अनुभूत गुरु द्वारा जब  
राम नाम बीज दिया जाता है  
फल बहुत ही निराले होते हैं  
यहाँ राम स्वयं आपके विवेक  
पर विराजमान हो जाते हैं ।  
सार्वभौमिक सद्भावना और  
आरोग्यता प्रदान करने का विचार  
हमारा विचार बन जाता है  
मैं सोचता हूँ  
कि यह गुरु कृपा व राम कृपा



से ही सम्भव है ।

सभी विचारों को

सार्वभौमिक सद्भावना की

ओर अग्रसर कीजिए

एक दूसरे की मदद कीजिए

कृत्यों से

या स्वयं को मिटा कर

दूसरों के लिए

आत्मिक अभिव्यक्ति कीजिए ।

गुरु शरणम् गच्छामि

राम शरणम् गच्छामि

\*\*\*

*Ramakrishna Paramhans told to "Hiss as snake yet don't bite". This was a socio psychological way of asserting and not mellowing down our self esteem when threatened by powerful people around. Divine people always give importance to self esteem as sadhana is possible with this body when we can save ourselves from adversaries of life. Assertion is also spiritual shield one can use discreetly.*

रामाकृष्ण परमहंस ने कहा " साँप की तरह फुँकारों पर डसो नहीं " यह एक सामाजिक- मानसिक तरीका था जोर देने का और अपने स्वाभिमान को नीचा न करने का जब शक्तिशाली व्यक्तियों से खतरा महसूस हो । दिव्य मानुष सदा स्वाभिमान को महत्व देते आए हैं क्योंकि साधना इस देह से तभी सम्भव है जब हम स्वयं को जीवन के उताव चढ़ाव से बचा सकें । अभिगमन एक आध्यात्मिक कवच के रूप में भी बुद्धिमत्ता से उपयोग में लाया जा सकता है ।

\*\*\*

*When TIME hurts then wait for TIME that heals.*

जब समय पीड़ा देता है तो उस समय का इंतज़ार करें जो आरोग्यता प्रदान करता है ।

\*\*\*

*Purity and genuinity is for the self not to be shown but to be relished and internalized.*

पवित्रता व सत्यता आत्मा के लिए है, दिखाने के लिए नहीं अपितु अंतर्मुखी होकर उसका स्वाद लेने के लिए ।

\*\*\*

*You do merit a chance for REALIZATION. Use your body for this spritual bliss. Its temple where HE is seated and what you give the world by way of your expression and deeds are Prashad. Keep it pure and pious.*

आपको परमअनुभूति के लिए योग्य मौका अवश्य मिलेगा । अपनी देह इस आध्यात्मिक आनन्द के लिए उपयोग करें । यह मंदिर है जहाँ परमात्मा विराजमान हैं और जो आप संसार को अपनी अभिव्यक्ति व कृत्यों से दोगे वह प्रसाद है । इन्हें पवित्र व पावन रखिए ।

\*\*\*

*Life is a tourism. Travel light. Deeds must have minimum guilt as luggage. Spirituality provides you this blessing.*

जीवन एक यात्रा है । हल्का होकर यात्रा करें । कृत्यों को कम से कम अपराध भाव का बोझ होना चाहिए । आध्यात्मिकता यह कृपा बरसाती है ।

\*\*\*

*When you find you are deprived mortally then you beget that spiritually. Ram Ram*

जब आपको लगता है कि आप संसारी रूप से अभाव में हैं तब आपको वह आध्यात्म से प्राप्त होता है । राम  
राम

\*\*\*

*Conflicts and criss cross misunderstanding eats away you eternity. Be in Ram Bhava to cross over the givens of conflicts. Ram naam provides conflict resolution this must be acted upon otherwise life show its ugly mortal face.*

संघर्ष व गलतफहमियाँ आपकी दिव्यता को खा जाते हैं । राम भाव में रह इन संघर्षों से पार हो जाइए । राम नाम संघर्ष के समाधान प्रदान करती है और इन पर अनुचित क्रदम उठाना चाहिए नहीं तो जीवन अपना घृणित संसारी चेहरा दिखा दे गा ।

\*\*\*

*Deprive the Desire. You are empowered.*

कामनाओं का अभाव कीजिए । आप सशक्त हैं ।

\*\*\*

*Human being is best amongst all life forms not because it can cleverly negotiate life, discover and invent but it has its Bhav with intellect governance which leads to spiritual emancipation. Bhava or huge focussed eternal love provides avenues for salvation in all spiritual themes. RAM  
RAM*

मानव योनि अन्य योनियों से उच्चतर मानि जीती है इसलिए नहीं कि वे जीवन मे अच्छे से बात चीत, पता लगा सकते तथा आविष्कार कर सकते हैं बल्कि इसलिए कि उनमें भाव हैं और अपनी बुद्धि के संग वे आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं ।भाव या अति केंद्रित दिव्य प्रेम मुक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है ।राम राम

\*\*\*

## **RAM IN YOU**

*Behave as  
NIRAKAR SHREE RAM has possessed you.  
Solace and eternal love  
you wear in your heart  
as if Ram in you.  
Others will see divinity in you.  
Such is loving Raaauum. Attributes of Ram  
emits through your words,  
silence, thoughts, action and behaviour of sacred character.  
Pious RAM is in you and in All.  
Be conscious of this  
So nothing wrong is done by you.  
Be in saguna Ram bhava and heal the world.  
Raaaaaaaaaaaaaum.*

## **आप में राम**

*अपने को ऐसा समझिए  
जैसे कि निराकार श्री राम ने  
आप पर आधिपत्य जमा लिया हो।  
शांति व दिव्य प्रेम आप अपने हृदय  
में ऐसे ओढ़ें जैसे कि राम आप में हों।  
दूसरे आप में दिव्यता देखेंगे।  
ऐसे प्यारे राम हैं। राम के गुण आपके  
वचनों, मौन, विचारों, कर्मों तथा  
पावन व्यवहार से विस्तृत हों।*

पावन राम आप में हैं और सब में हैं

इस बात का एहसास करिए

तो कुछ भी आपने गलत नहीं किया है राम के सगुण भाव में रहिएगा

और संसार को आरोग्यता

प्रदान करिएगा ।

रामममममममम

\*\*\*

*The TWO most beautiful creations by DIVINE ARE....*

*Human being is blessed to appreciate beauty of the nature or Prakriti and allowed to recreate....*

*And*

*Human being has option of correcting and mending the self.*

*I think no other living being has these gifts of the God.*

परमेश्वर की दो सबसे सुंदर रचनाएँ हैं ...

मनुष्य पर कृपा है कि वह प्रकृति की सुंदरता को सराह सकता है और उसकी फिर से रचना कर सकता है...

और मनुष्यों के पास यह विकल्प होता है कि वे स्वयं को ठीक कर सकें व सुधार सकें ।

मुझे लगता है कि किसी और जीव के पास परमेश्वर के ऐसे उपहार नहीं होंगे ।

\*\*\*

*We have a 2 and 1/2 inch tongue. It is symbolic eternal creative space for Naad.*

*We use "dhai inch jeeva" or tounge to utter holiest name RAAM with an element of love called "dhai shabd pyar."*



*Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj wrote in the context of "Hidden dynamics...from Shree Amritvani" on 29 July 2008*

*"To get the taste of what is in store in this book, I would like to quote Gautam's own words which would reveal how Ram Naam is Mangal Dhaam".*

*Most benefic abode of vaikuntha is name of RAM*

*Assures growth and all round progress who seeks Him with utmost dedication*

*None of the evil force can disturb the Ram Naam Sadhak*

*Glory of this and the other world meets with His name*

*Assures peace to all seekers like a child on the lap of mother*

*Lighter we become as we intensify the chant within.*

*Doubts would never haunt those who surrender to HIM*

*Himalaya of celestial kind is the Ram Naam Dhaam*

*Allow to experince the Heaven, right on this earth*

*Also, bestows Salvation and the final beautitude....paramgati, paramdhaam*

*Melts the ego which otherwise stops our growth. It provides an egoless flight.*

*Jai jai ram  
Jai Jai Param Guru  
Jai jai Shree Amritvani  
Jai Jai guruvareshu.*

*Antarik avam atmik pranam Hey mere Ram---- hum sab key taraf se sewekaro merey  
Raaaaaaaaaam.*

### **राम नाम' मंगल धाम'**

*महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराज ने 'hidden dynamics..... श्री अमृतवाणी से जुलाई २९, २००८, के संदर्भ में लिखा*

इस किताब का रसपान लेने के लिए, मैं गौतम के ही शब्दों को उद्धृत करूंगा कि कैसे राम नाम मंगल धाम है

सबसे लाभकारी वैकुण्ठ का निवास राम का नाम है ।

जो उनकी गहन श्रद्धा से प्रार्थना करते हैं उनका वह विकास व हर ओर से प्रगति का आश्वासन देते हैं ।

कोई भी नकारात्मक शक्ति राम नाम साधक का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती ।

इस लोक व परलोक की महिमा परमेश्वर के नाम से मिलती है ।

जिस तरह मां की गोद में विश्राम मिलता है उसी तरह हर शरणार्थी को शांति का आश्वासन देते हैं ।

जैसे हम नाम का उच्चारण भीतर गहन करते हैं उतने ही हम हल्के होते जाते हैं ।

जो परमेश्वर पर पूर्ण रूप से समर्पित हैं उन्हें संशय कभी भयभीत नहीं कर सकते ।

राम नाम धाम हिमालय की भांति दिव्य है ।

वे धरती पर ही स्वर्ग की अनुभूति देते हैं ।

वे मुक्ति तथा अंतिम परमसौंदर्य... परमगति, परमधाम की कृपा बरसाते हैं ।

अहंकार को पिघला देते हैं जो कि हमारी प्रगति को रोक देता है । वे एक अहंकार शून्य उड़ान देते हैं ।

जय जय राम

जय जय परम गुरु

जय जय श्री अमृतवाणी

जय जय गुरुवारे शु

आन्तरिक एवं आत्मिक प्रणाम हे मेरे राम... हम सब की तरफ से स्वीकारो मेरे रामममममममममम

\*\*\*

**SHREE AMRITVANI SIDDHI**



*Today morning I was talking to a very senior sadhak who has been doing Maun sadhana during Navarartras for last 27 years and he remains a humblest soul I ever met. He said that in his dream Maharajji guided that "all SADHAKS should Read Shree Amritvani with Vyakhya to beget Siddhi". Yes its sadhu vachan. I am hiding his name for now as He must not be disturbed.*

*Shree Amritvani scripted by our beloved Swamiji Satyanandji Maharaj Shree was no ordinary grantha. But a divinely scripted content which if read, applied in life then Moksha is assured such is the divinity of Shree Amritvani.*

*For many years I have delved into this ENCYCLOPAEDIC work so I was used by Supreme to write the Hidden Dynamics.... and it was not mine Its there in Shree Ram Sharanam Site. I personally feel each of the words of Shree Amritvani all through its 96 stanzas has all the answer of life and beyond.*

*Singing Shree AMRITVANI is BHAKTI YOGA.*

*READING and Contemplating Shree Amritvani is Gyan Yoga or Path of Knowledge.*

*APPLYING the content of Shree Amritvani in life is KARMA YOGA.*

*Now to beget SIDDHI of SHREE AMRITVANI we can take a vow of 96 days. Each day one Stanza be read, felt, chanted, applied in life and realized. And next day the stanza is first repeated and then next stanza is contemplated. While reading do read the interpretation given by Maharishi Swamiji Dr VISHWA MITTERJI Maharaj Shree.*

*Just in 96 days of real tapasya revolving in and around the thoughts scripted by Swamiji Maharaj shree can make our elevation to a different order for sure. Just spend one hour...free hour but a focussed hour on one stanza and see the result in our traverse of 96 days through 96 stanzas of Shree Amritvani. Its purest form of DAIVYA CHINTAN which can make us closer to RAM.*

*Should we not try to look at Shree Amritvani bit differently and try to apply in our day to day life so that we imbibe piousness and Ramamaye bhava? It can bring a sea change in life. Should we try!*

*Rauuuuuuum*

## श्री अमृतवाणी सिद्धि

आज सुबह मैं एक बहुत ही वरिष्ठ साधक से बात कर रहा था जो नवरात्रों में मौन साधना पिछले २७ वर्षों से कर रहे हैं और मैंने उन्हें अति ही विनम्र आत्मा पाया। उन्होंने कहा कि उन्हें स्वप्न में पूज्य श्री महाराज श्री

ने सिद्धि पाने के लिए श्री अमृतवाणी व्याख्या का पाठ करने का निर्देश दिया। जरूर ये साधु वचन हैं। मैं उनका नाम छिपा रहा हूँ ताकि उन्हें परेशान न किया जाए।

श्री अमृतवाणी जिसके रचैता हमारे प्यारे स्वामीजी सत्यानन्द जी महाराज श्री हैं कोई आम ग्रन्थ नहीं है। परन्तु एक ऐसी दिव्य सामग्री है जो अगर पढ़ी जाए ,जीवन में उतारी जाए तब मोक्ष निश्चित है।

कितने वर्षों से मैं तल्लीन रहा इस विश्वकोश के कार्य में ,मुझे परमात्मा ने एक यन्त्र की तरह उपयोग किया Hidden Dynamics.... .लिखने के लिए। वह मेरा नहीं है। वह श्री राम शरणम् की Site पर पाया जा सकता है।

मैं व्यक्तिगत तौर पर सोचता हूँ की श्री अमृतवाणी जी के एक एक शब्द में , उसके सभी 96 पद्यों में जीवन व परलोक के जवाब हैं।

श्री अमृतवाणी जी का गाना भक्ति योग है।

श्री अमृतवाणी जी को पढ़ना व मनन करना ज्ञान योग है।

श्री अमृतवाणी जी को जीवन में उतारना कर्म योग है।

श्री अमृतवाणी जी की सिद्धि को पाने के लिए हम 96 दिनों का संकल्प ले सकते हैं। हर एक दिन एक पद्य पढ़ें , महसूस करें ,उच्चारें , जीवन में उतारें व अनुभव करें। हर अगले दिन पहला पद्य दोहराएं और अगला पद्य मनन करें। पाठ करते समय पूज्य श्री महर्षि स्वामीजी डॉ विश्वामित्र जी महाराज द्वारा दी गयी व्याख्या जरूर पढ़ें।

केवल 96 दिनों की असली तपस्या जो की स्वामीजी महाराज की रचना के विचारों से ओत प्रोत हो , वह हमारा उत्थान एक अलग ही स्तर तक कर देगा, यह सुनिश्चित है। केवल एक घंटा निकालिये ,उस पर ध्यान केंद्रित करिये और परिणाम देखिये 96 दिनों में जैसे जैसे आप 96 पद्यों का पाठ करेंगे। यह सबसे पवित्र रूप है दैव्य चिंतन का जो हमें राम के और निकट कर देगा।

क्या हमें थोड़ा अलग से श्री अमृतवाणी जी को नहीं देखना चाहिए और उसे अपने रोज के जीवन में उतारने की कोशिश नहीं करनी चाहिए ताकि हम उसकी पवित्रता व राम भाव अपना सकें। वह हमारे जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकता है। क्या हम कोशिश करें?

## राम राम

\*\*\*

*Ram Naam chintan is as if a connect between two galaxies one is our world and other is divine realized world. The route is Funnel Galaxy... where one has to reduce d self as if a head of pin to pass the passage between two galaxies and then experincing Amrit or Nectar of Wisdom of Raam Naam as 'realized soul'. So "I" must Crash before Divine I dawns in our Atman Chintan. Raaam Raaaaaaaauuuuuuuuum*

राम नाम का चिंतन ऐसा है की वह दो आकाशगंगाओं के बीच में सम्बन्ध स्थापित करता है , एक हमारी दुनिया और एक जो दिव्य अनुभव की हुई दुनिया है। उसका रास्ता एक कीप के सामान आकाशगंगा का है ... जहाँ एक साधक को अपने आप को एक सुई के सर जितना छोटा बनाना होगा ताकि वह दो आकाशगंगाओं के बीच से निकल सके और फिर राम नाम के ज्ञान का अमृत चख सके, एक प्रभुद्ध आत्मा की तरह। इसलिए आत्मा चिंतन में "मैं" का अंत अनिवार्य है उस दिव्य "मैं " के अवतरण के लिए।

\*\*\*

*Vishesh mat baniye es sansar mey. Aap sey vishesh apekhshaye hongi. Eshwar key liye vishesh baniye kyon ki eshwar apna naam bhi app pey nichawar karengey. Ram Ram*

विशेष मत बनिए इस संसार में ।आप से विशेष अपेक्षाएं होंगी ।ईश्वर के लिए विशेष बनिए क्योंकि ईश्वर अपना नाम भी आप पर न्योछावर करेंगे। राम राम

\*\*\*

*Kab mey kiska tha; aur ab mey kiska hun, malum nahi.*

*Nahi! mey to sabka hun aur sab merey hain lekin mey to kisika nahi. Sab sey prit hai aur dwesh ki jagaha bhi nai.*

*Mey to anant mey hun --sagun sey nirgun tak ka padaw mujey par karna hai---EK ATMAN NEY KAHA.*

कब मैं किसका था ; और अब मैं किसका हूँ, मालुम नहीं ।

नहीं ! मैं तो सबका हूँ और सब मेरे हैं लेकिन मैं तो किसी का नहीं । सबसे प्रीत है और द्वेष की जगह भी नहीं  
। मैं तो अनन्त में हूँ - सगुण से निर्गुण तक का पड़ाव करना है --- एक आत्मा ने कहा ।

\*\*\*

*Remember GOD in GOOD TIMES so that good time can be extended.*

*If you remember GOD in fear or in Rainy days you may come out of it, yet you may forget to  
remember God for longer times.*

*Let RAM be in you all the time be that good or bad times because final refuge is just beyond  
happiness and unhappiness.*

*Ram Ram.*

परमेश्वर को अच्छे दिनों में स्मरण करिए ताकि अच्छे दिनों की अवधि बड़ सके ।

यदि आप परमात्मा को भय से या दुख में स्मरण करते हैं तो आप उसमें से निकल तो आएँगे , पर परमेश्वर  
का लम्बे समय तक स्मरण करना भूल जाएँगे ।

राम को हर समय सुख व दुख में अपने में समझिए क्योंकि परम शरणागति तो सुख व दुख के पार है ।

राम राम

\*\*\*

### **O PARAM GURU RAAUM --AATMIK PRANAM**

*Hey my Ram*

*You are my mortal utterance*

*You are my eternal silence!*

*You are my cause and effect*

*Your wish and lila I breath upon.*

*You are all powerful*

*You are most merciful*

*param dayalu MAA.*

*You are dynamic and sporting  
You create lila and your signature we see  
Yet we fail to realize you  
O my Raam.  
You are purest form of absoluteness  
Yet you are manifestive.  
But O my Raam  
You are all pervading.  
You are the eternal light  
You dance upon as ethereal sound  
And float to ANANTA as  
Lighted up silence.  
O my Ram  
Your name is Pilgrimage  
In sacred corridor of many lokas.*

*Hey my Raam  
Remove our ignorance  
And enlighten us.  
Open our vision of Ataman  
O my Raam.  
You are eternity  
You do question our deeds  
And put us on test  
For all our cravings  
All the time.  
And we blame to others  
Else to Time.  
Such ignorant we are!  
For once  
Please STOP our mortal craving  
And allow to play  
On your Lap  
O my Ram O my Maa.*

*I pray to you all the time  
I hold the eternal thread  
Of your Name and breathe  
On your name  
Such kripa you bestowed.  
Now please come please come  
Give me refuge at your feet  
O My Raam.  
I shall wait forever*

*I know you will come  
And rescue us from this maya  
For sure  
O my loving Raam  
Aatmik pranam O my loving Ram.*

## **ओ परम गुरु राम-- आत्मिक प्रणाम**

*हे मेरे राम*

*आप मेरे नश्वर बोल हैं*

*आप मेरे शास्वत मौन हैं*

*आप मेरे कारण व प्रभाव हैं*

*आपकी इच्छा व लीला पर ही मेरी सांस चलती है*

*आप सर्वशक्तिमान हैं*

*आप परम कृपालु हैं*

*... परम दयालु माँ*

*आप गतिशील व खेल हैं*

*आप लीला रचते हैं और आपका हस्ताक्षर हमें दीखता है*

*पर फिर भी आपको अनुभव करने में हम विफल हो जाते हैं*

*ओ मेरे राम*

*आप मुक्ति का सबसे शुद्धतम रूप हैं*

*पर फिर भी आप प्राकट्य हैं*

पर ओ मेरे राम

आप सर्वव्यापी हैं

आप ही शाश्वत ज्योति हैं

आप शाश्वत ध्वनि पर नृत्य करते हैं

और अनंत पर प्रकाशमय मौन पर तैरते हैं

ओ मेरे राम

आपका नाम ही तीर्थ है

कितने ही लोकों के पवित्र गलियारों में

हे मेरे राम

हमारी अज्ञानता दूर करें

और हमें प्रबुद्ध करें

हमारी आत्मा के प्रति दृष्टि खोल दें

ओ मेरे राम

आप अनंत काल हैं

आप हमारे कर्मों पर प्रश्न जरूर उठाते हैं

और हर समय परीक्षाएं भी लेते हैं

हमारी वासनाओं की

और हम सदा दूसरों को दोष देते हैं

या फिर काल को

ऐसे अज्ञानी हैं हम !

एक बार के लिए

कृपया हमारी नश्वर वासनाओं पर रोक लगा दीजिये

और हमें खेलने की अनुमति दीजिये

अपनी गोद में

ओ मेरे राम ओ मेरी माँ

मैं हर समय आपसे प्रार्थना करता हूँ

मैं आपके नाम का

शाश्वत धागा पकड़ता हूँ

व आपके नाम पर ही सांस लेता हूँ

ऐसी कृपा आपने मुझ पर की है।

अब कृपया आजाईये कृपया आजाईये

मुझे अपने चरणों में शरण दीजिये

ओ मेरे राम

मैं सदा आपका इंतज़ार करूंगा

मुझे पता है आप आएंगे

और हमें इस माया से बचाएंगे

यह पक्का है

ओ मेरे प्यारे राम



*आत्मिक प्रणाम ओ मेरे प्यारे राम*

\*\*\*

### **RAM NAAM VANDANA**

*Japo Ram Japo Ram  
Bhajo Ram Bhajo Ram  
Ram Ram Ram Ram*

*Ram Naam Simran has one mission  
Love one and Love all-this be passion.  
Shelve hatred or impure thoughts  
Wash your mortal ills with divine thoughts*

*Simro Ram Simro Ram  
Bhajo Ram Bhajo Ram  
Ram Ram Ram Ram*

*Ram Naam is Divine navigator  
It takes across the maya corridor  
Ram Naam has eternal vision  
RAM spreads love and compassion.*

*Japo Ram Japo Ram  
Bhajo Ram bhajo Ram  
Ram Ram Ram Ram*

*Ram Naam is the primal perennial sound  
Within this Naad, Raauum is found.  
Naam Jaap emits divine compassion  
'Forgiving' and pardoning are Ram's mission*

*Nirakar Ram, Jyoti Swarup Ram  
Bhajo Ram Bhajo Ram  
Ram Ram Ram Ram*

*RAAUM is nirakar Naad Icon  
Guru initiates and activates divine electron  
Shree Ram personifies eternal power  
HE is Sachitananda and bless HE showers.*

*Shree Ram Shree Ram  
Jai Jai Raum  
Ram Bhajo Ram Bhajo  
Ram Ram Ram*

*Ram Naam travels beyond time and space  
Param Guru accompanies you*

*with pace  
Diminish mortal greed, want, desire and lust  
ETERNAL RAAUM is only thing that lasts.  
Pray for others in Ram Durbar  
Be a dispenser of love and care  
Spread Ram Naam everywher forever.*

*Jai jai Ram Jai jai Raum  
Ram Ram Ram  
Ram bhajo Ram Bhajo Simro Raum.*

## **राम नाम वंदना**

*जपो राम जपो राम*

*भजो राम भजो राम*

*राम राम राम राम*

*राम नाम सिमरन का एक लक्ष्य है*

*एक से प्रेम व सब से प्रेम - ऐसा जन्म होना चाहिए*

*घृणा व अपवित्र विचारों से किनारा*

*अपने नश्वर कुसंस्कार दिव्य विचारों से धो डालिये*

सिमरो राम सिमरो राम

भजो राम भजो राम

राम राम राम राम

राम नाम एक दिव्य नाविक है

ये माया के गलियारे से पार ले जाता है

राम नाम की सोच अनंत है

राम नाम प्रेम व करुणा फैलाता है

जपो राम जपो राम

भजो राम भजो राम

राम राम राम राम

राम नाम बारहमासी मौलिक ध्वनि है

ध्वनि के नाद में राम पाया जाता है

राम नाम दिव्य करुणा उत्सर्जन करता है

क्षमा करना ही राम का लक्ष्य है

निराकार राम ज्योति स्वरूप राम

भजो राम भजो राम

राम राम राम राम

राम नाम निराकार नाद का चिन्ह है

गुरु आरम्भ व सक्रिय करते हैं दिव्य विद्युदणु को

श्री राम अनंत शक्ति के भण्डार हैं

वे सच्चिदानंद हैं और कृपा बरसाते हैं

श्री राम श्री राम

जय जय राम

राम भजो राम भजो

राम राम राम

राम नाम समय व स्थान के पार है

परम गुरु आपकी चाल के साथ चलते हैं

सांसारिक तृष्णा, लालसा, इच्छाओं व काम वासनाओं को काम करें

अनंत राम ही हैं जो अंत में रह जाते हैं

दूसरों के लिए राम दरबार में प्रार्थना कीजिये

प्रेम व करुणा के अनुयायी बने

राम नाम का सदा हर जगह विस्तार करें

जय जय राम जय जय राम

राम राम राम

राम भजो राम भजो सिमरो राम

\*\*\*

*When feeling fragmented. Halt, collect all the pieces that got fragmented to weave a new garland with the beads (fragmented parts) as life must go on and your lips must not know about the pains. (Keep smiling:) raum raum*

जब अपने आप को बिखरा हुआ महसूस कर रहे हों , तो सभी टुकड़ों को एकत्रित करके एक नई माला बनाइये, क्योंकि जीवन को चलते रहना है और आपके होंठों को दर्द का नहीं पता चलना चाहिए । मुस्कराते रहिए । राम राम

\*\*\*

*Viraha for RAM makes me restlessly closer to HIM even when mortal tormentation is on.*

यदि मुझे नश्वर वेदनाएँ प्रताड़ित कर रही हों, राम के लिए विरह मुझे बेचैनी से राम के समीप कर देती है, ।

\*\*\*

*Through the AATMIK Vision RAM is seen and perceived.*

आत्मिक दृष्टि से राम को देखा व महसूस किया जा सकता है ।

\*\*\*

*Corest of core of Cosmos manifests with the Naad ----RAAUM.*

नाद से ब्रह्माण्ड का आंतरिक मूल प्रकट होता है ।

\*\*\*

*The JYOT that lights up million Suns in million galaxies is Raam.*

राम वह है ज्योत जो करोड़ों सूर्यों को करोड़ों आकाशगंगाओं में प्रकाशित करती है ।

\*\*\*

*If want to close in to the ETERNITY and APPRECIATE HIGHER SPIRITUALISM --- Then never become JUDGEMENTAL.! Say to urself WHO I AM TO JUDGE As I can't even JUDGE myself... !*

यदि आप दिव्यता के समीप होना चाहते हैं और ऊँचे स्तर के आध्यात्मिकता को सराहना चाहते हैं तो ... कभी भी दूसरों के प्रति अपना अनुमान न लगाएँ ! अपने आप से कहिए मैं कौन होता हूँ दूसरों को आँकने वाला क्योंकि मैं तो स्वयं का ही नहीं निर्णय ले सकता ।

\*\*\*

*Best way to feel RAM is to keep HIM witness to all our deeds and thoughts. It will help you to feel HIS presence. RAM is Nirakar Energy Field and He weaves the cosmic fabric of Jyot. Experince HIS eternity in all Naad, in all taste, in all vision of light to enlightenment. Be in this RAMAMAYENESS.  
Raaaauuuuuuuum.*

राम को महसूस करने का सबसे बेहतर ढंग है की उन्हें अपने हर कृत्य व विचारों का साक्षी बनालें। यह आपको उनकी उपस्थिति महसूस करवाएगा। राम एक निराकार शक्ति का क्षेत्र है और वह जोत का एक ब्रह्माण्डीय कपडा बुनता है। प्रबुद्धता की ओर बढ़ते हुए उनकी शाश्वतता सभी नाद में, सभी स्वाद में और सभी प्रकाशमय दृष्टि में अनुभव कीजिये। इस राममय भाव में सदा रहिये।

\*\*\*

*In spiritualism one must keep in mind that peer group is positive and reinforcing that will help your endeavour. Because its better to be alone than with a jealous person in the grab of friends who wants to pull you down. Remember SPIRITUSLISM is postive stride rest can be discarded!*

आध्यात्मिकता में यह सदा स्मरण रहना चाहिए कि हमारी संगति सदा सकारात्मक हो और पुनः प्रयास करने से यह आपके प्रयास में सहायता प्रदान करेगी। क्योंकि मित्रों के वेश में ईर्ष्यालु व्यक्तियों से अकेले होना बेहतर है जो आपको सदा नीचे गिराने में ही लगे रहते। स्मरण रहे कि आध्यात्मिकता एक सकारात्मक कदम है बाकि सब छोड़ा जा सकता है।

\*\*\*

### **RAM MANTRA Sada Sahayak and Sukhdayak**

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree wrote the divine Shree Amritvani, which is a practical living encyclopaedia of RAM NAAM PHILOSOPHY. HE proclaimed RAM NAAM or (Mantra) is sada Sahayak. Its true the Eternal Mantra Ram stand by us all the time. This is the grace one has to realize beyond the simple looking word. Small effort to fathom the depth of the divine message is being made.*

*RAM ratifies your divine journey and allows Naam Jaap within always. An endorsement of Him is found when our negative nature takes the back seat. Mystic HE is but HE HIMSELF demystifies before HIS seekers.*

*Mentor HE is, He guides you to course ahead in life. Aloud HE speaks; HIS language and expressions are different than yours. Never suffer from illusion. HE has distinct voice and expression. Trying to doubt HIM makes the roads full of blunders. RAM Mantra goes beyond your utterance. A deep insight within the sound every time will surprise you with new perspectives.*

*Seekers of HIM always find HIM closer to them. Aura of RAM NAAM Besmeared one and all without discrimination. Delicate HE is, so take care of HIM as HIS dear ones – you should never indulge in amoral activities. Always feel HIM to ward off loneliness.*

*Sahara or Helping Being HE is provided we know how to depend upon HIM. Attitude to reach out and Help others are divine attribute. Hymns called RAM RAM not only purify but inspire. Allow the self-character building which is of great self-help. You are the seed and sprouting comes with the spray of RAM NAAM. Amalgamate your nature or guna with HIM then see how HE helps. Karma of the self is the friend of our future. So make our karmic line sound.*

*and*

*Sukh is not happiness but a sense of bliss (ananda) HE bestows upon. Unknown power makes you smile. Smile back and make others happy. Kripa of Ram is a feeling beyond the pleasure. He smiles and that translates into a blissful experience. Doing RAM NAAM is actually being possessed by HIM. Associates, near and dear ones are also blessed by HIM. Your sense of contentment can be begotten through NAAM. Allow an empowerment which makes you serve the society better! Karma of yours be chanting HIS name which would fuel happiness.*

*Thus we have tried to rediscover the DIVINE ATTRIBUTE OF RAM and ITS APPLIED APPROACH for the Sadhak leading to SALVATION. JAI JAI RAUM Aatmik Pranam TO PARAM GURU RAM and Gurujans....Raaaam.*

## राम मंत्र सदा सहायक और सुखदायक

श्री श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज श्री ने दिव्य श्री अमृतवाणी की रचना की जो राम नाम दर्शनशास्त्र का एक व्यवहारिक विश्वकोश है। उन्होंने उधोषित किया की राम नाम सदा सहायक होता है। यह पूर्णतया सत्य है कि दिव्य राम सदा हमारे संग रहते हैं। एक सरल राम शब्द के पार, यह कृपा हम सब को अनुभव करनी है। एक छोटा सा प्रयास किया जा रहा है उस दिव्य सन्देश की गहराई तक पहुँचने के लिए।

राम आपकी दिव्य यात्रा का पुष्टि करते हैं और अंदर नाम जाप की सदा अनुमति देते हैं। जब नकारात्मकता से सामना होता है तब उनका समर्थन हम प्राप्त करते हैं। वे स्वयं रहस्यमय हैं पर अपने साधकों के आगे अपने पूर्ण भेद खोल देते हैं।

वे संरक्षक हैं और आपके जीवन को दिशा देते हैं। वे ऊंचा बोलते हैं पर उनकी भाषा व अभिव्यक्ति हम सब से भिन्न है। भ्रम से ग्रस्त नहीं होना। उनकी अलग आवाज़ व अभिव्यक्ति है। उनके प्रति संशय हमारा रास्ता पत्थरों से भर देता है। राम मंत्र तो मात्र उच्चारण के बहुत पार है। ध्वनि में एक गहरी अंतर्दृष्टि समय नए दृष्टिकोण से आश्चर्य चकित करेगी।

उसको पाने के इच्छुक साधक सदा उसको अपने अंग संग पाएंगे। राम नाम की आभा सभी को बिना भेद भाव के अपने में ओत प्रोत कर लेती है। वे अत्यंत नाजुक हैं अतएव उनका व के प्यारों का ध्यान रखें और कभी नीतिहीन गतिविधियों में नहीं घुसना। उन्हें महसूस करके अपने अकेले पण को दूर भगाएं। वे एक सहारा हैं यदि हमें उन पर निर्भर होना आता है। उनके दिव्य गुण हैं दूसरों की मदद करना। राम राम की धुन न केवल पवित्र करती हैं बल्कि प्रेरित भी करती हैं। अपने स्वयं का चरित्र निर्माण एक बहुत स्व-सेवा है। आप बीज हैं और राम नाम के छिड़काव से आप अंकुरित हो जाते हैं। अपना व्यक्तित्व व गुण उनसे मिला दो और देखो वे कैसे सहायक बनते हैं। स्वयं के कर्म भविष्य के मित्र हैं इसलिए अपने कर्मों को अच्छे बनाइये।



और

सुख खुशी नहीं है पर आनन्द है जो वे बरसाते हैं। एक अज्ञात शक्ति से आप मुस्कराते हैं। वापिस मुस्कराइए और दूसरों को खुशी दीजिये। राम कृपा खुशीकी भावना के पार है। वे मुस्कराते हैं उसका अनुवाद एक आनंदमय अनुभव में रूपांतरित हो जाता है। राम नाम लेते रहने का मतलब है राम के ही कब्जे में होना। निकट सम्बन्धी व बंधू पर भी उनकी कृपा फिर बरसती है। आप में संतुष्टि उससे आती है। अपने आप को सशक्तिकरण की अनुमति दें जिससे आप समाज की अच्छे से सेवा कर सकें। राम नाम जपन को अपना कर्म बनाइये जो की खुशी का स्तोत्र बनेगा।

हमें राम के दिव्य गुणों का अन्वेषण करने की आवश्यकता है जिससे साधक अपनी मुक्ति तक पहुँच सकता है। जय जय राम। आत्मिक प्रणाम परम गुरु राम को व गुरुजनों को .....राम

\*\*\*

### **RAM NAAM SADHANA**

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree had given us the IMMORTAL GIFT OF RAM NAAM SADHANA. But time and again we should contemplate and reunderstand our BEING SADHAK with right perspective or not or our sadhana is going right or not. So I am a sitting beneath the feet of Gurujans to learn on RAM NAAM SADHANA today. Pranam Param Guru. Ram is our Supreme Lord. Be-getting HIM in NIRAKAR and Jyoti Swarup is our mission. Attributes of Ram is love for all and healing the world with HIS Naam shakti. Mantrik Shakti Ram allows SALVATION for Sure. Its in Ram Jaap Simran and Ram Dhun HE RESIDES.*

*NAAM DHAM RAM DHAM can be achieved with purest Bhav and love for Guruvachan and DARSHAN. Be yourself the TEMPLE of RAM.*

*Assure yourself that your SPIRITUAL JOURNEY is alone and Gurutattwa holds your hand to RAM LOKA. Work towards with your ATMA SHAKTI not social ethos.*

*Aradhya is Ram, Aradhana is Ram. Arogya is Ram and Mukti is Ram.*

*Maun sadhana helps us to reach in the deepest core of self where RAM resides and talk to you.*

*Sahaj yog is Ram Naam. It needs no renouncement yet all the correction it does for elevation and salvation. Such is Ram-- the greatest purifier of all the Divine.*

*Anubhuti of alauki Ram is within the deep shradha swaroop aradhana of Ram Naam jaap and contemplation. Be in the RAMAMAYE Bhava so that even Ram can dis-associate Himself from you.*

*Dharma of life is SU-Karma. Pure thought and Pure Duties and being one with RAM even in mortal life n karma is RAM NAAM DHARMA.*

*Holiest of Holy word is encoded in the HEART. It emits love for all or otherwise it withdraws in silence. Ram loves only loves to weave and bridge Divine Manas with our Manas.*

*Asshraddha, abagun, ku sanskar, ku chintan, get repelled with RAM NAAM. Its final refuge and assures reformation of soul of all kind.*

*Naman and arpan of all the Ram Kaaj and Aradhana at Guru Charan is the goal of Ram Naam Sadhak. Neutrality in life, respect for all and surrender to RAM with constant Rememberance empowers a Sadhak towards Ram Naam Sadhana.*

*Aradhya Ram taught us. Express and love all and see Ram in all. But when conflicts comes then contemplate on ARADHYA RAM NAAM, the remover of ETERNAL IGNORANCE. Ram RAM is treasure trove of Wisdom and paves the path for MUKTI as ONE becomes JYOTI OF RAM in Body and without as well.*

JAI JAI RAM . RAAAAUUUUUUUUUM

## राम नाम की साधना

श्री श्री स्वामीजी सयानन्दजी महाराज श्री ने हमें नाम साधना का अमर उपहार दिया है। पर बार बार हमें ये मनन करना चाहिए और समझना चाहिए की क्या हम सही मायने में साधक हैं की नहीं या क्या हमारी साधना सही दिशा में जा रही है या नहीं। मैं गुरुजनों के श्री चरणों में बैठ कर आज राम नाम साधना सीखूंगा। प्रणाम परम गुरु।

राम हमारे परम परमात्मा हैं। उन्हें निराकार व् ज्योति स्वरूप में पाना ही हमारा लक्ष्य है।

राम के गुण हैं उनका सभी से प्रेम और अपने नाम की शक्ति से संसार को आरोग्य करना।

राम नाम मंत्र की शक्ति पक्का मुक्ति देगा। वे राम जाप के सिमरन व राम धुन में ही विराजते हैं।

नाम धाम राम धाम पूर्ण पवित्र भाव और गुरुवचनों के प्रेम और दर्शन से पाया जा सकता है। आप अपने आप में इस राम मंदिर में रहिये।

अपने आप को आश्वासन दें की आपकी आध्यात्मिक यात्रा आप अकेले की है और गुरु तत्व आपका हाथ पकड़े हुए राम लोक तक जायेंगे। अपनी आत्मा शक्ति के साथ परिश्रम कीजिये न की सामजिक लोकाचार के साथ।

राम ही आराध्य हैं , आराधना ही राम। राम ही आरोग्य हैं और राम ही मुक्ति।

मौन साधना हमारे लिए सहायक होती है हमें अपनी गहराई में ले कर जाने के लिए जहाँ राम विराजमान हैं और बात करते हैं।

राम नाम एक सहज योग है। उसके लिए कोई त्याग आवश्यक नहीं पर फिर भी ऊंचाई तक जाने के लिए व मुक्ति के लिए यह सुधार करता है। ऐसे है राम - सबसे बड़ा शुचिता प्रदान करने वाला।

अलौकिक राम की अनुभूति गहरी श्रद्धा स्वरूप, राम नाम जप आराधना व मनन में पायी जाती है। राममय भाव में रहे।

ज़िन्दगी का धर्म सत्कर्म हैं। पवित्र विचार और पवित्र कर्तव्य और राम से एक हो कर रहना इस नश्वर जीवन का राम नाम धर्म है।

पवित्र से पवित्र शब्द हृदय में एकांकित है। वह सबके लिए प्रेम उड़ेलता है या फिर मौन में सिमट जाता है। राम को हमारे मानस व अपने दिव्य मानस के संग प्रेम का पुल ही बुनना पसंद है।

अश्रद्धा , अवगुण, कुसंस्कार , कुचिंतन सब राम नाम से दूर भाग जाते हैं। वही अंतिम शरण है और हर प्रकार की आत्मा के सुधर का आश्वासन देते हैं।

सभी राम काज व आराधना गुरु चरणों में नमन और अर्पण करना ही राम नाम साधक का लक्ष्य है। ज़िन्दगी में समता , सबके लिए आदर और राम पर पूर्ण समर्पण उसका सतत समरण साधक को राम नाम साधना की ओर प्रेरित करता है।

आराध्य राम ने सिखाया प्यार कीजिये व व्यक्त कीजिये उसे और सब में राम देखिये। पर जब मुश्किलें आएँ तब आराध्य राम पर चिंतन कीजिये। वे अनंत ज्ञान को मिटाने वाले हैं। राम नाम तो ज्ञान का भंडार हैं और मुक्ति का रास्ता अवगत करते हैं जब कोई सशरीर या उसके बिना राम की ज्योति बन जाता है।

जय जय राम

राम

\*\*\*

*Spiritualism has inner logics and beyond the mundane perceptions of our human mind and understanding. Reach out to this ETERNAL WISDOM with Shraddha and Trust. Keep Ram in your side and Guru as your Vision then we realize the eternal world as Sublime not as conflicting as our own life and perception thereof. Ram Ram.*

आध्यात्मिकता में भीतर के तर्क होते हैं और मानवीय मन व समझ के बेकार के अनुभवों से पार होते हैं । इस सनातन ज्ञान को श्रद्धा व विश्वास से पाइए । राम को अपने समीप व गुरु को अपनी दृष्टि में रखिएगा, तब हम सनातन जगत को उदात्त अनुभव करेंगे और न कि विवादग्रस्त , अपने स्वयं के जीवन व दृष्टिकोण के भाँति । राम राम

\*\*\*

### **RAM RAM interactive JAAP**

*I am ignorant and not so ardent sadhak. And I over the decades found my mind wondering while I was doing jaap of Ram Ram Ram Ram four times in a manak. Still there remains a space for thought beyond the jaap. I was wondering how to plug the "thought leak" as I wanted Ram Ram Jaap in water tight compartments for long.*

*My love for Ram helped me to chance upon an idea.*

*In a manak OR manKa or bead we utter Ram 4 times. But when I started uttering as if am telling Ram Ram with utmost shraddha to other pair of Ram Ram. At the subtlest level two pair or Ram Ram creates a bridge amongst them and i dont know when it become interactive. So one mind with huge love utters Raaaum Raaaum then other pair further reciprocates raaaaaaum rrraaaaaum then one manka gets complete. This loving interaction of ram ram becomes so engrossing that my mind forgot to think or wonder as 100 percent mind attention is to do this jugal bundi of eternal melody. So my jaap became watertight with Ram Ram only.*

*If I am able to express its Gurujans kripa and if I fail then please excuse me as my personal failure. Ignore my epression as insane. But for my eternal love for Ram am expressing this thought.*

*JAI JAI RAAAAAAAUUUM.*

### **राम राम एक परस्पर संवादात्मक जाप**

मैं अज्ञानी हूँ और न ही इतना उत्साही साधक । और इतने दशकों के पश्चात जब मैं राम नाम का जाप राम राम राम राम चार बार करता हूँ हर मनके पर मैंने अपने मन को भटकते हुए ही पाया । पर जाप करते करते वहां फिर भी विचार के लिए जगह रह जाती है । मैं सोच में था की इस विचार के रिसाव को कैसे बंद किया जाए ताकि मैं राम जाप को लम्बे समय तक एक पानी के बंद डिब्बे में बंद रख सकूँ .

राम के लये मेरे प्रेम ने मुझे इस प्रस्तावना पर मदद की।

एक मनके पर हम राम चार बार उच्चारते हैं। पर जब मैंने उच्चारण इस प्रकार किया की जैसे मैं राम राम अति श्रद्धा के साथ दूसरे राम राम के जोड़े को कह रहा हूँ। एक सूक्ष्म स्तर पर दो जोड़े या राम राम एक पुल का निर्माण हो गया और मैं नहीं जानता की कब वह एक परस्पर संवादात्मक बन गया।

तो जब एक मन गाढ़ प्रेम के साथ राम राम का उच्चारण करता है तो दूसरा जोड़ा वापिस विनिमय राम राम करता है और तब एक मनका पूर्ण होता है।

यह प्रेम से भर पूर बात चीत राम राम की इतनी दिलचस्प हो गयी की मेरा मन सोचना ही भूल गया और शत प्रतिशत मन केंद्रित हो गया इस दिव्य राग की युगल बंदी के साथ। तो मेरा जाप कस गया राम राम के संग से ही।

अगर मैं अपने को व्यक्त कर पा रहा हूँ तो वह गुरुजनों की ही केवल कृपा से है। पर अगर नहीं तो ये मेरी व्यक्तिगत विफलता ही है। कृपया मेरी पागल अभिव्यक्ति को नजरअंदाज करें। पर मेरा राम के लिए अनंत प्रेम के कारण ही मैं ऐसा विचार व्यक्त कर रहा हूँ।

जय जय राम

\*\*\*

### **NEVER QUESTION MY RAAAUM!**

*SHREE RAAAAAUM  
My Raum  
The cosmic Naad  
And embodiment of formless  
Eternal jyoti...  
in HIS womb  
The cosmos exists and manifests!*

*All questions, fear and anxiety  
Are Maya manifestation.  
Well, all cease to exist when  
Our manas merges with Rama Tattwa.  
Shree Ram  
My Raaaauuum is unquestionable  
And beyond doubt!*

*Mortal high and low are our karma  
Ram my Ram provides an opportunity  
To correct our deed  
For a sure elevation.  
Our mortal situations are our creation  
Not HIS. He only salvages...*

*He can be reached with SHRADDHA  
And not through  
Bouts of reasoning  
Emiting from mortal ground.*

*His Guna can smear all  
Salvage all.  
Divine attributes is all pervasive.  
Ram is eternally powerful  
And allows Mukti.*

*Pray to Him in distress  
He is merciful.  
In Kashmir flood  
A Sadhika saw and heard Guru  
And seen how divinity intervened  
And rescued from clutches of death  
When she was marooned in flood.  
This is the dedication of sadhak  
My Raaum loves such soul..  
Such loving is Raaaum.*

*He is all merciful.  
Experince RAAUM with  
Total submission to Him.*

*He is final goal of  
Emancipation  
Experience Him  
While doing sadhana  
And get all your reasoning answered  
And get a taste of divine logic  
That runs the cosmos.*

*But question Him  
Not being a mortal being!  
Yet you can argue with Him*

*Talk to Him  
And even fight with Him  
He would still smile and love you  
As Mother does.  
So loving  
So affectionate is My Raam.*

*Feel Him  
Beget Him  
Through love and Bhakti  
And question never  
Your spiritual endeavour  
As HE RESIDES IN YOU.  
My Raaaaaaaaaaaauuuuuum.*

## **मेरे राम पर कभी प्रश्न नहीं करना**

*श्री राम*

*मेरा राम, एक लौकिक नाद*

*और निराकार की मूर्त*

*शाश्वत ज्योति अपने गर्भ में लिए*

*पूर्ण ब्रह्माण्ड उसमें प्रकट होता है*

*सभी प्रश्न, भय व चिंताएं*

*माया की घटनाएं हैं*

*हम सब का अस्तित्व मिट जाता है*

*जब हमारा मन राम तत्व में विलीन हो जाता है*

*श्री राम, मेरे राम निर्विवाद हैं*

और संशय से पार!

सांसारिक ऊँच नीच तो हमारे कर्मों की वजह से

राम मेरे राम तो अवसर देते हैं

अपने कृत्यों को सुधारने के लिए

एक निश्चित ऊंचाई के लिए।

हमारी सांसारिक स्थितियां हमारी ही उपज हैं

उसकी नहीं।

वह तो केवल कृपा ही करता है

वह श्रद्धा से पाया जा सकता है

नाकि तर्क वितर्क से

जो की नश्वर भूमि की उपज है।

उसके गुण तो सब पर कृपा का लेप लगा सकते हैं।

दिव्य गुण तो व्यापक हैं

राम सदा शक्तिशाली हैं

और मुक्तिदाता भी।

मुश्किल की घड़ियों में प्रार्थना कीजिये उनसे

वह कृपालु है

कश्मीर की बाढ़ में

एक साधिका ने गुरुदेव को देखा व सुना



जब वह बाढ़ में फंस गयी थी

और देखिये कैसे देवत्व ने हस्तक्षेप किया

और मृत्यु के पंजे से बचाया

यह है एक साधक की श्रद्धा

मेरे राम को ऐसी आत्माएं अति प्रिय हैं।

ऐसा प्रिय है राम।

पूर्ण कृपालु।

राम को अनुभव कीजिये पूर्ण समर्पण के साथ

वे ही मुक्ति के अंतिम लक्ष्य हैं।

अनुभव कीजिये उन्हें साधना करते समय

और अपने सभी प्रश्नों के हल पाइए

और एक दिव्य तर्क का स्वाद पाइए उनसे

जो यह सकल ब्रह्माण्ड चलाता है

करिये प्रश्न उनसे

पर एक नश्वर इंसान की तरह नहीं

पर फिर भी आप उससे बहस कर सकते हैं

करिये बात उनसे

बेशक लड़िये भी

वे फिर भी मुस्कराएंगे वे प्यार करेंगे

एक माँ की तरह

इतने प्यारे व स्नेही हैं मेरे राम.

महसूस कीजिए उन्हें, बुलाइये उन्हें

प्रेम व भक्ति के साथ

पर कभी प्रश्न नहीं करना

अपना आध्यात्मिक प्रयास

क्योंकि वे तुममें ही बसते हैं।

मेरे राम

\*\*\*

*GURU TATTWA is a UNIVERSAL ACTIVE ENERGY FIELD CREATED AND MAINTAINED BY PARAM  
GURU NIRAKAR JYOTI SWARUP RAM.*

*GURU TATTWA IS AWAITING TO BLESS AND SHOWER BLISS and ALSO SALVAGE YOU FROM  
MORTAL CONFLICTS*

*PROVIDED*

*We have DEEPEST SHRADDHA FOR GURU who is SUBTLY PRESENT  
ALL AROUND YOU AWAITING FOR A SINCERE CALL....*

*LIVE WITH GURU TATTWA*

*YOU WILL FIND YOURSELF IN RAMTATTWA*

*Await for Eternal merger! So why question HIM  
why fumble with mortal fear and doubts.*

*YOU ARE RAM SO ALL ARE.*

*JAI JAI RAM.*

*Raaaaauuuuuuuuuuuuum*

*गुरुत्व एक सार्वभौमिक सक्रीय ऊर्जा क्षेत्र है जो कि परम गुरु ज्योतिस्वरूप राम द्वारा अनुरक्षण की जाती है ।*

गुरु तत्व इंतज़ार कर रहा है सबको आशीर्वाद देने के लिए व आनंद बरसाने के लिए तथा सांसारिक द्वंद्वों से छुटकारा देने के लिए ।

केवल तभी

अगर हममें गाढ़ श्रद्धा है अपने गुरु के प्रति जो कि सूक्ष्म रूप से हमारे ओत प्रोत हैं और केवल एक सच्ची पुकार का इंतज़ार कर रहे हैं....

गुरु तत्व के साथ जीएँ

आप अपने को राम तत्व में पाएँगे

उस अनंत से मिलन का इंतज़ार कीजिए

क्यों प्रश्न उठाते हैं

क्यों सांसारिक भय व संशय में उलझते हैं

आप राम हैं और सभी भी वही हैं

जय जय राम

राम

\*\*\*

*How much we have achieved in Ram Naam Sadhana? Let's evaluate...*

*Answer these...*

- 1. Do you cry or feel like crying secretly for others who are in deep mortal pain or sufferings....*
- 2. Do you pray secretly for one soul every day and keeping them secret!*

3. How much Ram listens to your prayer! I mean what is your success rate for prayer. As this will go towards judging your acquired intensity of Ram Naam Prem Bhava.

If we can understand these and get positive answers then we can say we are progressing in Ram Naam Sadhana. A frank answer to self can set our sadhana on track. Jai Jai Ram.

राम नाम साधना से आपने कितना पाया है? चलिए मूल्यांकन करें...

इनके उत्तर दीजिए....

१. जो गहन पीड़ा व कष्ट में हैं क्या आप उनके लिए रोते हैं या गुप्त रूप से रोने का मन करता है?
२. क्या आप गुप्त रूप से किसी एक आत्मा के लिए प्रार्थना करते हैं व उसे गुप्त ही रखते हैं?
३. राम कितनी आपकी प्रार्थनाओं को सुनते हैं? कितनी प्रार्थनाएँ स्वीकार होती हैं? यह सब आपके राम के प्रति प्रेम भाव का मूल्यांकन करने में सहायक होगा।

यदि हम इन को समझ सकें और हमें सकारात्मक उत्तर मिलें तो हम कह सकते हैं कि हम साधना में प्रगति कर रहे हैं। स्वयं को एक स्पष्ट उत्तर हमारी साधना को रास्ते पर ला सकता है। जय जय रामममम

\*\*\*

### **AINA SIRAF SHARIR DEKHTA HAI! AATMAN NAHI.**

Aina hamarey drishti kon ko es sharir tak bandh deti hai. Ussey agey aina dhundla...  
Sharir ek muthi mitti ya rakh hai us pey hum kitna samay lagatey hain. Jeevan bita detey hain  
samay ko pakad rakh ney ka vritha chesta kartey hain. Marichika key taraha hum hamesha aina  
ke aur daud key atey hain. Lekin sab vritha.

Thoda socho atman ki pukar jo Raam Naam mey belin ho rakha hai. Aur jo amar hai.

Hum kitna samay apney atmik samaskar ko detey hain?

Esh sharir tattwa sey agey badna hai.

Ram dham pana hai. Atman ko parmatman tak le jana hai.

Ram Japo, Ram Bhajo, Simro Raaum  
Raaaauuuuum Raaum.

आएना सिर्फ शरीर देखता है! आत्मा नहीं।



*unveil the mystique  
yet remains cosmic enigma.*

*The lila of metaphysics  
comes into play  
internally touching  
the eternal chord.  
With Guru Kripa  
and constant akaran pyar  
sadhak hears  
the inaudible  
and experinces the naad  
of eternity.*

*This lila is the memorable  
mile stone in the journey  
of Ram Naam Sadhana.  
Keep realizing the secret.*

*Ram Tattwa when merges  
with you  
then you even see  
the invisible  
ecstasy beyond our vision world.*

*Guru kripa makes you feel  
the presence of eternal  
attributes right in this world.*

*Dynamics of unknown  
unknowable  
splash our mind with  
mystique wisdom  
with no worldly references.*

*Ram Naam sadhak  
questions not with Buddhi  
as Shraddha and Sadhana  
allows this celestial bliss.*

*Share not to those  
who question eternity  
or who has no idea of  
Ramamayeness or*

*ram naam sadhana.  
Mortal relations  
have nothing to do with  
these secret revelations.  
As this Lila unveils....  
Sadhak's lonesomeness  
is filled and facilitated by  
Shree Raaaam.  
This is sadhak's sadhana  
their spiritual savings.  
Do billions of Ram Naam Yagya  
realize the unknown and  
multiply your spiritual savings  
with nobody knowing anything  
of your Ram Naam Wealth..  
A passport for Vaikuntha the  
Ram Naam Dham...finally!  
Raaaaaaaaaaaauuuuuum.*

## **राम तत्व - एक गुप्त रहस्योद्घाटन**

*राम नाम*

*अनंत फव्वारा है*

*जो भीतर से उपजता है*

*अज्ञात की भोर को लाता है*

*रहस्यों का अनावरण करता है*

*पर फिर भी ब्रह्माण्ड की एक पहेली है।*

*तत्वमीमांसा की लीला सामने आती है*

*जो की अंदर से अनंत की तार को छू देता है।*

*गुरु कृपा व उनके अकारण प्रेम के कारण*

साधक अश्रव्य को सुन पाता है  
और अनंत नाद को भी अनुभव कर सकता है।  
यह लीला राम नाम की साधना की यात्रा में एक  
अविस्मरणीय स्तम्भ बन जाती है।  
इसका रहस्य अनुभव करते रहिये।  
राम तत्व जब आपमें लीन हो जाता है  
तब आप अदृश्य परमानंद को भी देख सकते हैं  
जो की दृश्य जगत के भी पार है।  
अनंत की उपस्थिति इस जगत में देख सकते हैं  
अज्ञात की गतिशीलता और अज्ञेय हमारे मन में  
रहस्यपूर्ण ज्ञान का छिड़काव करते हैं जिसका कोई भी  
सांसारिक क्रिया से सन्दर्भ नहीं है।  
राम नाम का साधक बुद्धि से नहीं अपितु श्रद्धा व भावना  
से इस दिव्य आनंद तो आने देता है।  
यह उनके साथ बांटना नहीं जो  
अनंत पर प्रश्न उठाते हैं या जिन्हे राम तत्व  
या राम नाम की साधना पर विश्वास नहीं।  
नश्वर संबंधो का इन रहस्यमय उद्बोधनों  
से कोई लेना देना नहीं।



जैसे इस लीला का अनावरण होता है

साधक का अकेलापन श्री राम से प्रेरित हो कर

श्री राम से ही भर जाता है।

साधक की यह साधना उसकी आध्यात्मिक कमाई है।

अरबों राम यज्ञ करिये और अज्ञात को अनुभव कीजिये

और अपनी आध्यात्मिक कमाई को बढ़ाइये।

न किसी को कुछ पता चलेगा आपकी राम नाम की कमाई का

और अन्तः आपका वैकुण्ठ के लिए पासपोर्ट तैयार !!!

राम

\*\*\*

SHRISTI Mey ESHTA hai.  
ESHTA Sey SHRISTI.  
SHRISTI mey Sukh aur KASHT hai.  
KASHT Mey MUKTI Hai  
MUKTI sey ESHTA hai.  
EASHT Nirakar Ati VISHISHT hai  
VISHISHT Mera RAM hai  
Jo mera Pyara sa ESHTA hai  
SHRISTI BHI Usey  
NISTAR bhi usey.  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuuuuuum.

सृष्टि में ईष्ट है

ईष्ट में सृष्टि ।

ईष्ट में सुख और कष्ट हैं ।



*As one chants  
Ram Ram Ram  
Atmosphere becomes pure  
And sacred.*

*As one does japa of  
Ram Naam  
It effaces mortal agonies  
Involuntarily.*

*Again with Simran  
Of Ram Naam  
Atman gets lightened  
With jyoti swarup Raam.*

*Ram Naam  
"Chira anandamayi  
Kripa swarup".  
Its so soothing  
That it breaks all walls of  
Birth and rebirth.*

*Ram Naam unveils  
Atmic wisdom of many lives  
And solace envelops our heart  
Anananda and chira ananda  
Smear our "maan mandir"  
As we swim in  
Sachitananda Raaaaaam.  
So loving is My Raaaaaaaam.  
Jai Jai Ram.*

**राम नाम -- दिव्य आनन्द**

*राम नाम*

*दिव्य नाद*

*ब्रह्माण्ड की अभिव्यक्ति पर गूँज करता है ।*

जैसे हम राम राम राम धुन गाते हैं  
वातावरण पवित्र व शुद्ध हो जाता है ।  
जब हम राम नाम का जाप करते हैं  
तब संसारी व्याधियाँ स्वयं ही दूर हो जाती हैं ।  
राम नाम के सिमरन से ज्योति स्वरूप राम के संग से  
आत्मा प्रकाशित हो जाती है ।  
राम नाम  
" चिर आनन्दमयी कृपा स्वरूप" ।  
वह इतना शांतिदायक होता है  
कि वह जन्म मरण की सभी दीवारें  
तोड़ डालता है ।  
राम नाम कितने जन्मों का आत्मिक ज्ञान  
के ऊपर से परदा हटा देता है  
और परम शांति हमारे हृदय का आवरण  
कर लेती है  
हमारा मन मंदिर  
आनन्द और चिर आनन्द  
से ओत प्रोत हो जाता है  
जैसे हम सच्चिदानंद राम में तैरते हैं ।

ऐसे प्यारे हैं मेरे राममममममममममम /

जय जय राम

\*\*\*

### **BHAJO RAM BHAJO RAM**

*Bhajo Ram, Japo Ram  
Jai Jai Ram  
Japo Ram inwardly  
Japo Ram outwardly  
Bhajo Ram eternally  
Ram Japo Ram Japo  
Jai Jai Raam.*

*Remember Ram  
Surrender to Ram  
Simro Ram  
Ram Naam Simro  
Simro Raam.  
Japo Ram  
All the time. Ram Ram  
While dreaming  
Or working  
Studying or teaching  
Cooking or feeding  
Walking or talking  
Japo Ram Japo Ram  
Simro Raam Simro Raam  
Jai Jai Raauum.*

*Jai Jai Ram Jai Jai Ram  
Think of Raam  
Look up for Ram  
Feel Raam  
See and Find Ram  
Talk of Ram  
Talk to Ram  
Be yourself be Raam  
All others are Raam*

*Live for Ram  
Live with Raam  
Bhajo Ram Japo Ram  
Simro Ram simro Ram  
Jai Jai Raauum.*

*Bhajo Ram Japo Ram  
Chitta Ram Chetna Ram  
Chaitnya Ram  
Heart sings only Raaum.  
Laugh with Ram  
Smile as Ram  
Hear Ram speak of Ram  
Eat with Ram  
Sleep with Ram  
Chant with Ram  
Maun with Ram  
Jai Jai Ram  
Bhajo Ram Bhajo Ram  
Simro Ram Simro Raum  
Jai Jai Ram  
Jai Jai Ram  
RAM RAM  
RAM RAM*

***भजो राम भजो राम***

*भजो राम, जपो राम*

*जय जय राम*

*भीतर से जपो राम*

*बाहर से जपो राम*

*शाश्वत रूप से भजो राम*

राम जपो राम जपो

जय जय राम ।

स्मरण करो राम का

समर्पण करो राम को

सिमरो राम

राम नाम सिमरो

सिमरो राम ।

जपो राम

हर पल । राम राम

स्वप्नों में, काम काज करते हुए,

पढ़ते हुए या पढ़ाते हुए

भोजन बनाते हुए या भोजन खिलाते हुए

चलते हुए या बात चीत करते हुए

जपो राम जपो राम

सिमरो राम सिमरो राम

जय जय राम ।

जय जय राम जय जय राम

चिंतन करो राम का

देखो राम को

महसूस करो राम को

देखो व खोजो राम को

बात करो राम की

बात करो राम से

स्वयं रहिए राम रहिए

अन्य सभी राम हैं

राम के लिए जीओ

राम के संग जीओ

भजो राम जपो राम

सिमरो राम सिमरो राम

जय जय राम ।

चित राम चेतना राम

चैतन्य राम

हृदय गाए केवल राम ।

राम संग हँसो



राम जैसा मुस्कराओ

राम को राम के बारे में बोलते सुनो

राम संग खाओ

राम संग गाओ

राम संग मौन

जय जय राम

भजो राम भजो राम

सिमरो राम सिमरो राम

जय जय राम

जय जय राम

राम राम

राम राम

\*\*\*

*I FATHOM ETERNITY on a DIVINE FLOAT when I cease to Question the the cause and effect of everything.*

मैं शाश्वतता को एक दिव्य नाव से मापता हूँ जब मैं हर कारण प्रभाव को प्रश्न करना छोड़ देता हूँ ।

\*\*\*

*Wealth of RAM NAAM worth the cosmos itself. So Ram Naam earning is the best one can accumulate.*

राम नाम की पूँजी ब्रह्माण्ड की कीमत के समान है । सबसे सर्वश्रेष्ठ पूँजी एकत्रित करने के लिए राम नाम की कमाई है ।

\*\*\*

*Be in BLISS and never waste time to question the BLISS. It gets fade away... ANANADA stays as long we don't do analysis of ANANADA. Beget BLISS and BE THERE.*

सदा आनन्द में रहिए और कभी आनन्द पर प्रश्न न लगाइए ... वह धुँधला जाएगा ... आनन्द तब तक रहता है जब तक हम उसका विश्लेषण नहीं करते । आनन्द को पाओ और वहीं रहो ।

\*\*\*

*Why expect from feeble mortals! If you are looking for love and care its DIVINE RAM that gives you because HE is PARAM DAYALU AND SARVASHAKTIMAN.*

कमज़ोर नश्वर व्यक्तियों से क्यों अपेक्षाएँ रखते हो ! यदि आप प्रेम व स्नेह चाह रहे हैं तो वह दिव्य राम आपको देते हैं क्योंकि वे परम दयालु और सर्वशक्तिमान हैं ।

\*\*\*

*Life is a MELA of Maya and Lila. So make HIM the shop keeper and also the SHOPPER so that business of life goes on with HIS name as ringtone of every mortal call.*

जीवन माया व लीला का मेला है । इसलिए परमेश्वर को दुकानदार बनाइए और ग्राहक भी ताकि जीवन का लेन देन उसके नाम के सहारे हो जो कि मनुष्य के फ़ोन की हर घंटी की तरह बन जाए ।

\*\*\*

*Life is a well composed piece of Music. But it becomes complete when the music is realized before the song gets over. So be quick and EAR everything.*

जीवन एक अच्छी तरह से रचित संगीत के समान है । पर वह पूर्ण तभी होता है जब गाना पूर्ण होने से पहले संगीत को यदि अनुभव कर लिया जाए । इसलिए जल्दी कीजिए और उस पर कान धरिए ।

\*\*\*

*REALIZING THE DIVINITY is all about finding melody of life.*

दिव्यता को अनुभव करने का तात्पर्य है कि जीवन के संगीत की खोज करना ।

\*\*\*

*Life is all about give and take and life never gets balanced. To balance life is to DO ALL DUTIES and EXPECT nothing as who expects nothing from world DIVINITY GIVES them automatically.*

जीवन लेन देन ही है और ज़िन्दगी में कभी संतुलन नहीं आता । संतुलन लाने के लिए सभी कर्तव्यों को निभाइए और किसी चीज़ की अपेक्षा न कीजिए क्योंकि जो संसार से अपेक्षा नहीं करते हैं दिव्यता उन्हें स्वयं ही देती है ।

\*\*\*

*Most wonderful divine attributes is when you smile AKARAN.*

दिव्यता के सबसे प्यारे गुण वह हैं जब आप बिना किसी कारण ही मुस्कुराते हैं ।

\*\*\*

*DOUBTS are gift of MAYA. Lesser you have closer you are to Absolute REALITY.*

संशय माया के उपहार हैं । जितने समीप आप परम सत्य के होते हैं उतने कम संशय होते हैं ।

\*\*\*

*PURITY or SAATVIK BHAV is always simple as if ETERNAL LIGHT that floats as illumination and ready to light up any life at anytime.*

पवित्रता या सात्विक भाव सदा सीधा साधा होता है जैसे कि दिव्य प्रकाश जो प्रदीप्ति के भाँति तैरता है और जीवन को किसी भी समय प्रकाशित करने के लिए तत्पर रहता है ।

\*\*\*

*DIVINE IS YOUR ETERNAL FRIEND. LOVE LIKE HIM AND LOVE AS HIM. ITS PURE AND SUBLIME and NOT PROPELLED OR DRIVEN BY NEED.*

दिव्यता आपकी शाश्वत मित्र है । उनसे प्रेम करिए और उनके जैसा प्रेम करिए । वह पावन व उदात्त है और ज़रूरत से वशीभूत या चलायमान नहीं है ।

\*\*\*

*Sometime mortal calling consumes our energy. Especially in good times we forget who GIFTED that time. So keeping proximity with DIVINE is actually negotiating the mortal world as well. Let us not do prayer to GOD out of FEAR or NEED let this be natural love for PRAKRITI and DIVINE.*

कई बार नश्वर कृत्य हमारी ऊर्जा ले लेते हैं । खासकर सुख के दिनों में हम भूल जाते हैं कि किसने हमें वह समय बक्शा है । कृपया हम परमेश्वर से प्रार्थना किसी भय या कामना से न करें अपितु प्रकृति व परमेश्वर के लिए एक स्वाभाविक प्रेम हो ।

\*\*\*

*Eternal Love does manifest in mortal world too. But that must be selfless love and wellness or good wish for others. Divine love spreads sublimity mortal love has its baggage. Choice is yours.*

दिव्य प्रेम नश्वर जगत में भी अभिव्यक्त होता है । पर वह निष्काम प्रेम होना चाहिए तथा दूसरों के प्रति सद्भावना से प्रेरित होना चाहिए । दिव्य प्रेम उदात्ता विस्तृत करता है नश्वर प्रेम के साथ कामनाएँ जुड़ी होती हैं । निर्णय आपके हाथ में है ।

\*\*\*

*Relations you respected and lived for is not the final frontiers. RELATIONS with DIVINE goes with you and for others you are just a 'memory'. So be with Memory of Divine than be a nostalgia of mortal and mundane.*

जिन भी संबंधों के लिए आप जीवित हैं या सम्मान किया, वे अंतिम गंतव्य नहीं हैं। परमेश्वर के साथ संबंध ही आपके साथ जाता है और दूसरों के लिए तो आप केवल स्मृति बन जाते हैं। परमेश्वर की स्मृति के संग रहिए न कि नश्वर व बेकार की चीजों को स्मरण करें।

\*\*\*

*Spiritualized life is all about putting a halt to mortal wants and desires. Immortal essence never resides in our mundane world. Be connected to the otherworld by means of diminishing the effects and affects of mortality in our life. YET DUTIES are must towards all but de-linking maya should be parallely exercised.*

आध्यात्मिक जीवन का तात्पर्य है कि हम अपनी नश्वर इच्छाओं व कामनाओं पर अंकुश लगाएँ। शाश्वतता हमारी नश्वर जीवन में नहीं रहती। नश्वर जीवन के प्रभाव व व्यवहार कम करके परलोक से संबंध स्थापित करिए। सभी के प्रति कर्तव्य कर्म तो अनिवार्य हैं किन्तु माया से अलगाव भी साथ साथ प्रयोग में लाना चाहिए।

\*\*\*

*I have learnt MOST about divinity when I got worstly treated by mortality. So we must smile when we suffer as anytime around there will be a knock of divinity that will make you realize the SUBLIME. Ram Ram.*

मैंने परमेश्वर के बारे में सबसे ज़्यादा तब जाना है जब मैं संसार द्वारा बहुत प्रताड़ित हुआ। इसलिए हमें सदा मुस्कराते रहना चाहिए जब भी हम पर कष्ट आएँ क्योंकि किसी भी समय परमेश्वर की दस्तक सम्भव है जो कि आपको उदात्त का अनुभव दे सकती है।

\*\*\*

## **VIRAT RAAUM.**

*Comos is Ram  
Cosmic is Ram.  
Eternity is Ram  
Tranquility is Ram.*

*Sublime is Ram  
Macro is Ram  
Micro is Ram.  
Manifestation is Ram.  
Unmanifest is Ram.  
Cause of all creation is Ram.  
Effect of Cosmic action is Ram.  
Karma if becomes Ram  
Karma kar ya karta is Ram.  
Ram is the doer and  
Saviour of all manifestations.  
Love is Ram  
Shraddha is Ram  
Submission is Ram  
Surrender to His name is Ram.  
Ram finds aaktiti of many  
Nirakar Ram resides in all.  
Ram is wealth and prosperity  
Ram is positivisism and Love  
Ram is Maya and Lila.  
Virat is Raam.  
Nirakar cosmos is Ram  
Universal mind is Ram  
Consciousness is Ram  
Divinity starts and ends in  
RAAAAAAUUUUUM.*

## **विराट राम**

*सकल ब्रह्मांड राम है*

*लौकिक राम है*

*अनंत काल राम है*

*प्रशांति राम है.*

*दिव्य राम है*

*विशाल राम है*

सूक्ष्म राम है

अभिव्यक्ति राम है.

अव्यक्त राम है.

सारी सृष्टि का कारण राम है.

लौकिक कार्रवाई का प्रभाव राम है

कर्म अगर राम बन जाता है

कर्म का करता राम है

राम ही कर्त्ता है और

सभी अभिव्यक्तियों के मुक्तिदाता

प्रेम राम है

श्रद्धा राम है

प्रस्तुत राम है

उसके नाम पर समर्पण राम है

राम की कई आकृति हैं

निराकार राम सब में विराजमान है

राम ही धन व् समृद्धि है

राम सकारात्मकता है व प्रेम है

राम ही माया है व लीला है

विराट राम है

*निराकार ब्रह्माण्ड राम है*

*विश्वव्यापी मन राम है*

*चेतना राम है*

*दिव्यता का आरम्भ व अंत है*

*राम*

\*\*\*

### ***Rama Consciousness***

*Who I am  
Tell me O Gurudev  
O my Ram.  
You are ME  
I am You  
We are consciousness.*

*O my Lord  
Your consciousness  
Are hidden beneath  
Unmanifest.  
But my consciousness  
Is Karma centric and  
Manifestive.*

*O my child  
You are ME.  
I remain unmanifestive  
Yet powered with  
Wish of lila  
I too Manifest  
And your Atman  
Travels  
Forms changes  
Time and space  
Create your own karmic lila.  
Consciousness  
Is progressive*



*And samskars the atman carry  
Are work towards  
Realized consciousness.  
This consciousness  
Bridges you and Me.  
Ramamayeness you feel  
In your body  
Is manifestive chetna  
Till you yourself become  
Chaitanya bhava  
AM THAT. RAM*

### **राम चैतन्य**

में कौन हूँ

बताइए गुरुदेव

ओ मेरे राम ।

तुम में हो

और मैं तुम हूँ

हम चेतनाएँ हैं ।

ओ मेरे प्रभु

आपश्री की चेतना

तो अनाभिव्यक्त के

नीचे छिपी हुई है ।

पर मेरी चेतना

तो कर्मों के मध्यस्थ है

तथा अभिव्यक्त है ।  
ओ मेरे बच्चे तुम में ही हो ।  
मैं अनाभिव्यक्त रहता हूँ किन्तु  
लीला की इच्छा के संग  
मैं भी अभिव्यक्त हो जाता हूँ  
और तुम्हारी आत्मा  
यात्रा करता है  
रूप बदलते हैं  
समय व क्षेत्र अपनी ही  
कर्माँ की लीला  
की रचना करते हैं ।  
चेतना प्रगतिशील है  
और जो आत्मा संस्कार लेकर जाता है  
वह परमअनुभव चेतना  
की ओर किए जाने वाले कृत्य हैं ।  
यह चेतना तुम्हारे व मेरे बीच सेतु  
का कार्य करती है ।  
राममय भाव जो तुम अपनी देह  
के भीतर महसूस करते हो

*वह अभिव्यक्त चेतना है*

*जब तक तुम स्वयं*

*चैतन्य भाव" वह हूँ" नहीं बन जाते।*

*राम*

\*\*\*

### **MAUN AND EGO**

*Maun Sadhana  
Leads to the self.  
Inner is known  
Deeper self is fathomed.  
Realization through  
Sedimentations of mind  
Empowers perception.  
Knowledge unknown  
Squares upon inner wisdom  
Based on higher spiritual  
Contemplation.  
Meditating on Self  
And mission to  
KNOW THYSELF  
At times empower our Ego  
That diminishes  
Sadhana tattwa.  
Ram Naam sadhana  
In Maun takes one  
Through self  
Yet it takes on the cosmic wisdom  
Where all knowledge  
Rests.  
The manifestation  
Of perception till the  
Unmanifest stage*

*Becomes journey of  
Paramatman within.  
Ram naam maun sadhana  
Melts the ego  
And all beget ramamayness  
Surely beyond mortal I.  
Ram is my identity be  
The mission of  
Maun sadhana  
And vanishing I  
Is BLISS of  
RAAAAAAAAAAAUUUUUM.*

## **मौन और अहंकार**

*मौन साधना  
आत्मा तक लेकर जाती है ।  
भीतर का ज्ञान होता है  
स्वयं को गहन में जाना जाता है ।  
मन के विभिन्न स्तरों से  
अनुभव प्राप्त करना  
अनुभूति को सशक्त करता है ।  
अज्ञात का ज्ञान  
उच्च स्तरिय आध्यात्मिक चिंतन  
के रूप में अंतर्मुखी ज्ञान बनकर आता है ।  
स्वयं पर ध्यान केंद्रित करना*

स्वयं को जानने का विशेष कार्य

कई बार हमारे अहंकार को सशक्त

कर देती है

जो साधना तत्व को गौण बना देता है ।

मौन में राम नाम साधना स्वयं को आत्मा

से अवगत करवाता है

पर फिर भी शाश्वत ज्ञान को ग्रहण

करता है

जहाँ परम ज्ञान विराजमान है ।

अनाभिव्यक्त स्तर तक

अनुभूति की अभिव्यक्ति

भीतर परमात्मदेव

की यात्रा बन जाती है ।

राम नाम मौन साधना

अहंकार को पिघला कर

राममय भाव को प्राप्त करवाती है

जो कि नश्वर में के पार है ।

राम मेरी पहचान है

यही मौन साधना का लक्ष्य बने

*और मैं का शून्य होना रामममममममम*

*का आनन्द है ।*

\*\*\*

### **RAAM NAAM ---THE VISION**

*Raam Naam the Quest  
Raam Raaam the reply  
Raam Naam the Lila  
Raam Raam the Maya  
Raam Naam the Riddle.*

*Life is Raaaaum  
Death is Raaaaum  
Karma is Raaaaum  
Dharma is Raaaaaum  
Bhakti is Raaaaum  
Upasana is Raaaaum  
Gyan is Raaaaaum  
Consciousness is Raaauum.*

*Raam Raaam Param Guru  
Raam Naam comes from Guru Kripa  
Raam Naam beames sublime eternity  
Raam Naam Gives us the Vision  
Raam Naam lights up inner Mission  
Raam Naam evokes eternal love  
Raam Naam purifies nature and character  
Raam Naam elevates life and soul  
Raam Naam bridges universal mind  
Raam Naam is mortal and spiritual zenith  
Raam Naam is salvation  
Raam Naam assures celestial merger with RAMAMAYENESS*

Raaaaaaaauum .

## राम नाम - एक दृष्टिकोण

राम नाम एक खोज है

राम नाम ही उत्तर है

राम नाम ही लीला है

राम नाम ही माया है

राम नाम ही पहली है

जीवन राम है

मृत्यु भी राम

कर्म राम है

धर्म भी राम

भक्ति राम है

उपासना राम है

ज्ञान राम है

चेतना भी राम है

राम राम परम गुरु

राम नाम गुरु कृपा से मिलता है

राम नाम मुस्कराता है तो एक दिव्य काल

का हमें दृष्टिकोण देता है

राम अंदर का लक्ष्य प्रकाशित करता है

राम नाम शाश्वत प्रेम जागृत करता है

राम नाम स्वभाव व चरित्र को पवित्र करता है

राम नाम जीवन व आत्मा को ऊंचा उठाता है

राम नाम विश्वव्यापी मन के साथ पुल जोड़ता है

राम नाम नश्वर व आध्यात्मिक चर्म सीमा है

राम नाम मुक्ति है

राम नाम दिव्य राममय भाव से साथ मिलन का आश्वासन देते हैं।

राम

\*\*\*

*Raam naam the Master key of atmik wisdom.*

राम नाम आत्मिक ज्ञान की कुंजी है ।

\*\*\*

*Amongst all the names Ram Naam is like sublime Ganga. Cleanses and purifies all the deeds of life and times. HE is refuge of all. HE is RAAAAAAUUM.*

सभी नामों में से राम नाम उदात्त गंगा के समान है । वह जन्मों जन्मों के कृत्यों को साफ़ करता व धो डालता है । वह सबकी शरण है । वह राममममममममम है ।



\*\*\*

*Ram is most merciful. Confess to HIM. HE will pardon as HE is most loving Nirakar sarvashaktiman Raaaum.*

राम सबसे करुणामई हैं । उनके आगे अपनी गलतियाँ स्वीकारो । वे क्षमा प्रदान करेंगे क्योंकि वे सबसे प्यारे निराकार सर्वशक्तिमान रामममममम हैं ।

\*\*\*

*Look at RAAAUM as looking Mirror. You will find most beautiful person in yourself.*

राम को देखिए एक आइने के भाँति । आपको अपने में एक बहुत ही सुंदर मनुष्य दिखाई देगा ।

\*\*\*

***Raam naam the eternal gift of Swamiji Maharajji.***

**राम नाम स्वामी जी महाराजश्री का एक दिव्य उपहार है ।**

*To appease Nirakar Raam you need not to have any ritual, any prashad, any flower to offer. HE looks for only pure intended bhaktimay Heart to takes His name RAAAUM. Ram is path, Ram is Mode, Ram is Goal. SUCH SUBLIME IS RAAM NAAM.*

निराकार राम को पाने के लिए आपको कोई धार्मिक गतिविधि, प्रसाद, फूल इत्यादि चढ़ावे की कोई आवश्यकता नहीं है । वे केवल पवित्र भक्तिमय हृदय देखते हैं जो उनका नाम राम लेने के लिए ही है । राम पथ है, राम साधन है , राम गंतव्य है । ऐसे उदात्त हैं राम नाम ।

\*\*\*

*Raam Naam if deeply contemplated and get even slightly connected with ramamayeness then one realizes the dynamic lotus of sublime Raam in a clock wise mode of swastika revolving as galaxy. RAAAAUUUM.*

राम नाम का यदि गहन रूप से चिंतन किया जाए और यदि थोड़ा सा भी राममय भाव के साथ संबंध स्थापित हो जाए तब उदात्त राम के गतिशील कमल को स्वस्तिक चिन्ह को घड़ी की भाँति चक्र लगाते आकाशगंगा के रूप में पाएँगे ।रामममममम

\*\*\*

*Realizing RAMATATTWA means travelling after complete surrender of atman tattwa to Guru tattwa. These are journey of CONSCIOUSNESS.*

राम तत्व को अनुभव करना मतलब कि ऐसी यात्रा जहाँ आत्म तत्व गुरुत्व पर सम्पूर्ण समर्पण कर दे ।यह यात्रा चेतना की यात्रा है ।

\*\*\*

*Whisper of Raam is heard in the deepest of Maun. Silent Mind hears it and ordinarily we miss that due to chaotic thoughts of so called unuttered maun state. Silencing the riot of thoughts is the desired level of Maun and not just "NOT TALKING"!*

गहन मौन में राम का धीमे से बोलना सुना जा सकता है ।शांत मन सुन सकता है और आमतौर पर हम उसे नज़र अंदाज़ कर देते हैं मन के अराजक विचारों के मध्य में जिससे हम न उच्चारण करने वाली मौन स्तर भी कहते हैं मन के अराजक विचारों को शांत करना ही मौन का वह स्तर है जिसकी आवश्यकता है केवल " न बोलना " ही नहीं !

\*\*\*

*To beget Divinity we must have SHRADDHA and path of Bhakti is unfolded by Lord Himself.*

दिव्यता को पाने के लिए हमारे भीतर श्रद्धा होनी चाहिए और भक्ति का पथ परमेश्वर द्वारा स्वयं ही खोला जाता है ।

\*\*\*

*All conflict ceases at the Lotus feet of Ram. His naam is the embodiment of truce and tranquility.*  
सभी द्वंद्व राम के चरणों में समाप्त हो जाते हैं ।उनका नाम संधि व शांति का प्रतीक है ।

\*\*\*

*There is nothing mine and thine it is HIS and HIS only. So our I must surrender to ETERNAL I of Ram.*

यहाँ कुछ भी नहीं मेरा या तेरा है ,सब आपका ही है केवल आपका। हमारी मैं को शाश्वतता की मैं के समक्ष समर्पण करना है ।

\*\*\*

*Ajapa jaap of Ram Ram Ram Ram is grace of Divine Supreme. It descends when we completely surrender our mind body and soul to HIM by constant remembrance or Simran of Ram Naam.*

राम राम राम राम का अजपा जप परमपुरुष परमात्मा की दिव्य कृपा है । वह तब उत्कीर्ण होती है जब हम अपना तन मन व आत्मा परमेश्वर को समर्पित कर दें सतत राम नाम सिमरन के संग ।

\*\*\*

*For me sleep is almost leaving the body as if dead. So everyday I slip into sleep with Ram Naam wave in mind and body so that who knows during sleep I can get the divine connect. RAAAAAAUUUUUUUUUM.*

मेरे लिए निद्रा ऐसी जैसे कि शरीर को मृत अवस्था में छोड़ना । हर रोज़ मैं निद्रा में मन व देह में राम नाम की लहर लिए जाता हूँ ताकि क्या पता नींद में ही मुझे कहीं दिव्यता के साथ संबंध स्थापित हो जाए ।

\*\*\*

*Name of RAAUMaa is Naad Brhman. It has Aum in it and it has Maa in it. Pranam Nirakar jyoti Swarup Ram.*

रामा का नाम नाद ब्रह्म है । इसमें ओऽम है और माँ है । प्रणाम निराकार ज्योति स्वरूप राम ।

\*\*\*

*In the journey of Dhyaan to Antar Dhyaan Ram flashes as Jyot be that is perceived by Atman or registered through third eye while experincing eternity .Raaaauumm bhava is journey inward for a comic outward. Raaaaaam.*

ध्यान से अंतर्ध्यान की यात्रा में राम जोत के रूप में आत्मा के समक्ष तीसरे नेत्र द्वारा दिव्यता को अनुभव करते हुए चमकते हैं। राम भाव भीतर की यात्रा है ब्रह्माण्ड के बाहरी जगत को देखने के लिए।  
रामममममममममममम

\*\*\*

*Lord of all Riddhi Siddhi is Maa bhava Nirakar Ram.*

ऋद्धि सिद्धि के स्वामी माँ भाव निराकार राम हैं।

\*\*\*

***Raam Naam is Jyoti Sarup Nirakar Ram.***

**राम नाम ज्योति स्वरूप निराकार राम है।**

*Swamiji Maharaj's greatest gift to our civilization and to us in particular. This jyot is not just the light its light of cosmic aakash Ganga which illuminates the Brahamanda. Its jyoti is eternal enlightenment such is the importance of Raam Naaam. SUCH SUBLIME ETERNITY RAAM JYOTI ASSURES TO ALL SADHAK.*

स्वामी जी महाराज का सबसे बहुमूल्य उपहार हमारी सभ्यता के लिए और हमारे लिए खासकर। यह ज्योत कोई साधारण प्रकाश नहीं अपितु आकाश गंगा का प्रकाश है जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है। यह ज्योति दिव्य प्रबुद्धता है, ऐसा महत्वपूर्ण है राम नाम। राम सभी साधकों को ऐसी उदात्त दिव्यता से आश्वस्त करते हैं।

\*\*\*

*Shree Ram Sharanam is no socio religious space created by Swamiji Maharji. Its space for ETERNAL REFUGE in Raaum (Ram Sharanam literally means Refuge in Raaum). Swamiji Maharaj has created a space and gateway to Shree RAAM for mukti from repeatation of Life and Death. His method for such a siddhi is just melting the self in the deepest form of Ram Bhava and surrender through jaap, simran to Shree Raam the eternal love and final destination of merging with Paramatman Parameshwar Raaauum. HEY RAAUM GIVE US YOUR ETERNAL REFUGE. Pranam Shree Ram Sharanam.*

श्री राम शरणम् ,स्वामी जी महाराज द्वारा रचा , कोई सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र नहीं है। यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ राम की अनंत शरण में जाते हैं ( राम शरणम् मतलब राम की शरण में ) स्वामी जी महाराज का ये ऐसा स्थान व श्री राम का द्वार है जहाँ से जीवन मृत्यु के आवागमन से मुक्ति मिलती है । ऐसी सिद्धि के लिए उनका ढंग है केवल राम नाम के भाव में अपने आप को पिघला कर तथा जाप, सिमरन द्वारा समर्पण करके , श्री राम से शाश्वत प्रेम करके तथा अंतिम पड़ाव परमात्मा परमेश्वर राम से मिलन है। हे राम हमें अपनी दिव्य शरण दीजिए। परम श्री राम शरणम्

\*\*\*

### **RAM KRIPA and NAVARATRA**

*Raam is the celestial Naad empattern it within.*

*All Creation begins and ceases in Ra AuM.*

*Most mangalik is Raam Naam*

*Kripa of Ram bestows upon us once we surrender our ego to HIM completely.*

*Resonance of sound and silence even beyond body perception is Ram the riddle.*

*Innerself experiences ANANDA*

*Paap taap He absorbes as he is most Merciful Raaaum*

*Auto correction of deeds and purification of karmik self gets a pious space beneath HIS feet.*

*Namman to MAA the etheral Shakti starts with invocation by Shree RAM*

*All negations are washed by Maa as sadhak confesses to Her for mercy.*

*Vichar or thought process gets purified with Ram Naam simran that creates the eternal connect with MAA.*

*Attributes of Ram begets the rup of Shakti and all evils are diminished within such is Navaratra upasana and Siddhi.*

*Reason of materialism and its trauma are realized in Ram Naam Jaap in time space of Matri aradhans. As nothing is more important than Shakti of Cosmos the MAA.*

*AARADHYA, ARADHAK and ARADHANA unifies in eternal sublime Maa.*

*Treasure trove of Matriittwa shanti and sharan of RAAUM... the Nirakar Ram provides.*

*Rreasoning ceases as divinity is tasted and jouney of eternity starts with holding the eternal rope of Raam Naam.*

*All are Raaum and all are mirror refelctions of Maa if realized and acted thereafter by us means our Navaratra Upasana has yielded ramamaye results.*

Jai jai Maaaa  
Jai jai Raam.

## राम कृपा और नवरात्रा

राम ब्रह्माण्डीय नाद है, भीतर इसे स्थापित कीजिए ।

हर रचना रा ओऽम से आरम्भ होकर इसी में विलीन होती है ।

राम नाम अतिशय माँगलिक है ।

राम की कृपा हम पर बरसती है जब हम अपना अहंकार सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर पर समर्पित कर देते हैं ।

ध्वनि की गूँज व मौन देह के पार भी इसकी अनुभूति होना राम का रहस्य है ।

अंतरात्मा आनन्द अनुभव करता है ।

वे पाप ताप सब अवशोषित कर लेते हैं क्योंकि वे कृपालु राम हैं ।

कृत्यों का स्वतः सुधरना व कर्मों का पवित्रीकरण होने से

परमेश्वर के श्री चरणों में एक पावन स्थान मिलता है ।

श्री राम के आह्वान से दिव्य शक्ति माँ को नमन आरम्भ होता है ।

जब साधक क्षमा याचना करता है तो सभी नकारात्मकताओं का नाश हो जाता है ।

राम नाम सिमरन द्वारा विचारों का पवित्रीकरण हो जाता है

जो माँ के साथ दिव्य संयोजक की रचना कर देता है ।

राम के गुण शक्ति का रूप प्राप्त कर लेता है और सभी दुष्ट भाव भीतर न्यून हो जाते हैं

ऐसी है नवरात्र की उपासना व सिद्धि ।

मैत्रेय आराधना में भौतिकता का कारण व उसका आघात राम नाम जाप से अनुभव किया जा सकता है।  
इस ब्रह्माण्ड की शक्ति माँ से सर्वोच्च कुछ भी नहीं।

दिव्य उदात्त माँ में आराध्य, आराधक व आराधना को एकता प्राप्त होती है।

मैत्रीतत्व जो शांति व राम की शरण का निधिकोष है.. यह निराकार राम प्रदान करते हैं।

सभी तर्क समाप्त हो जाते हैं, जब दिव्यता का रसपान होता है

और राम नाम का दिव्य सेतु पकड़ने से यात्रा आरम्भ होती है।

सभी राम हैं और सभी माँ के प्रतिबिम्ब हैं, यदि इसकी अनुभूति हो जाए और उसके पश्चात हम उसपर चल  
सकें तो समझें कि नवरात्री की उपासना ने राममय फल प्रदान किए हैं।

जय जय माँ

जय जय राम

\*\*\*

*Halt for a while and try to visualize these words.*

*Ram, Shree Ram is sitting and meditating.*

*Shree Raam is taking HIS own name lovingly ..... raaaauuuum....  
raaaaauuuum...raaaaauuuum.*

*After some time we don't see the physical entity of Shree Raam instead you see millions of  
scripted raam in whole of His body contours symbolically depicting Nirakar Raam and musical  
Raam Raam is emitting in vibration and in naad . ...*

*Then those millions scripted raam multiplies into billions of ram ram and spreads in space and  
floats in gravity less zone to take Virat Rup and in whole cosmos those script flows with naad of  
ram ram ram all pervading.....raaaaaaum ...raaaaaaaauuummm.....*

*(An artist's impression of Virat Nirakar Raaaauum)*

जरा कुछ समय के लिए रुकिए और इन शब्दों को दृष्टिगोचर करिए...

राम, श्रीराम बैठे हैं व ध्यानस्थ हैं।

श्री राम अपना नाम प्रेम पूर्वक उच्चार रहे हैं .... राओऽम..... राओऽम..... राओऽम.....

कुछ समय पश्चात हम श्री राम का भौतिक रूप नहीं देखते बल्कि उनके सम्पूर्ण देह में करोड़ों राम लिखे हुए जान पड़ते हैं, निराकार राम को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाते हुए तथा राम नाम की मधुर धुन गूँज के रूप में विस्तृत हो रही नाद में ....

और तब करोड़ों राम खरबों राम में परिवर्तित हो जाते और अंतरिक्ष में फैल जाते और बिना गुत्वाकर्षण में तैरते हुए विराट रूप धारण कर लेते और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और वह लिखित रूप सर्वव्यापी राम राम राम के साथ बहता है..... राम... राम

( एक चित्रकार का विराट निराकार राम की धारणा)

\*\*\*

## **ETERNAL MAA and SHREE RAM DURBAR**

Hey Maa Prakriti

I bow to thee.

You are eternally manifestive Maa.

You are Naad Prakriti.

Hey Param Guru Ram

Atmik pranam to YOU

O my Eternal Jyot.

You are Sadhak Shree Ram

You are Sadhana O My Ram

You beget Siddhi O my sakha Ram

You have been blessed

With eternal and divine Naad Prakriti

--The Jyotirmay Maaaaa.

Hey Raam your name has since

Became Naad of Maa

You are siddhi of all

Sound and silence.

You are fabric of cosmic Ether



*You are our Eternal Maa  
Your are our Nirakar Raauum.*

*To Swamiji Maharaj Shree  
You gave darshan  
As eternal sound, script in space  
And cosmic light around  
Thus Swamiji Maharajji  
Lighted our path  
To beget You through Siddhi  
Of Naam Sadhana  
Encapsulated in Shree Adhistanji  
The mangalic cosmos image  
And placed it in Shree Ram Durbar.  
Naad Prakriti of RAAAUUUM  
Is our path and goal  
To merge with Shree Raaum  
Nirakar Naad swarup Raaaaaum  
Our Maa Prakriti  
We breathe and live for eternal salvation  
At thy feet O my Raaum.*

*Shree Ram Durbar is sacred space  
Where Naad Prakriti resides  
As Raaaaaum presides in eternal silence  
And vibrates in Ram Dhun n jaap  
To purify sadhaks and assures siddhi  
In Ram Naam Sadhana.  
Such pious space is  
Shree Ram Durbar  
Gifted by our beloved  
Swamiji Maharaj Shree.*

*Raaum echoes in silence  
Refract in melodious Sound  
In our Shree Ram Durbar.*

*Shree Ram Durbar is  
Mahatirtha  
Whereby lighted  
Akash Ganga streams  
And Sadhaks chant in ecstasy  
Then bathe in spiritual sound  
To purify the self*

*Such loving cosmic space is  
Shree Ram Durbar.*

*Shree Ram Durbar  
Needs no flower or ritual  
No complicated mantra or posture  
Only pure bhava to offer  
Intention to surrender the self  
And allowing Naad Prakriti  
To play up all the cords of  
Eternal wisdom and  
Respite from mortal ills and suffering  
Such pure is Shree Raaaum Durbar.*

*Param Guru RAAAUUUM  
All our Gurujans Reside  
In Shree Raam Durbar  
Echoes in your bhav sagar  
Pray and call upon them  
Cry before Maa  
Naad prakriti will provide  
Salvation for sure  
Such loving is our Raaaaaauum.  
Pranam Hey Raam Durbar  
Pranam O My Naad Mata Shree  
At your feet ever O My Guru Dev jans  
O my beloved Raaaaauum.*

## **शाश्वत माँ और राम दरबार**

*हे माँ प्रकृति*

*मैं आपके चरणों में सीस झुकाता हूँ।*

*आप शाश्वत प्राकृत्य माँ हैं।*

*आप प्रकृतिका नाद हैं।*

*हे परम गुरु राम आपको मेरा आत्मिक प्रणाम।*

हे मेरे शाश्वत ज्योतिस्वरूप श्री राम  
आप ही साधक हैं व आप ही साधना  
मेरे सखा राम आप ही सिद्धि पैदा करते हैं  
और आप धन्य हुए हैं शाश्वत व दिव्य ज्योतिर्मय माँ  
को पाकर जो प्रकृति का नाद हैं।

हे राम तभी से आप श्री का नाम माँ के नाद पर पड़ा।  
आप ध्वनि व मौन की सिद्धि हैं  
आप ब्रह्माण्डीय व्योम की रचना हैं  
आप ही हमारे निराकार राम हैं।

आपने पूज्य श्री स्वामीजी महाराज जी को  
लौकिक प्रकाश एवं दिव्य ध्वनि व लिपि के रूप में  
अंतरिक्ष में दर्शन दिए  
तभी स्वामीजी महाराज ने हमारा मार्ग प्रकाशमय किया  
ताकि हम आप श्री को नाम साधना की सिद्धि द्वारा पा सकें  
जो की उन्होंने श्री अधिष्ठान जी में एक  
परम मांगलिक ब्रह्माण्ड के चित्र के रूप में  
श्री राम दरबार में स्थापित की ।

राम की प्रकृति का जो नाद है

वह हमारा मार्ग व लक्ष्य है

जिससे हम श्री राम, निराकार नाद स्वरूप राम, जो माँ प्रकृति हैं

उसमें में विलीन हो जाएं।

आप श्री के श्री चरणों में ही हम

अनंत मुक्ति के लिए श्वास लेते हैं व उसी ले लिए जीते हैं।

श्री राम दरबार एक ऐसा पावन स्थल है

जहाँ प्रकृति का नाद निवास करता है।

राम शाश्वत मौन का आधिपत्य करते हैं

तथा राम धुन व जाप में कम्पन करते हैं

ताकि साधकों को पावन कर सकें और

राम नाम की साधना द्वारा सिद्धि का आश्वासन दे सकें।

हमारा श्री राम दरबार ऐसा पवित्र स्थल है

जो हम सब को परम पूज्य श्री स्वामीजी महाराज

ने उपहार में के रूप में दिया।

हमारे श्री राम दरबार में

राम मौन में प्रतिध्वनि करता है

व मधुर ध्वनि को सीधे रास्ते से मोड़ देता है।

श्री राम दरबार महातीर्थ है

जो की आकाश गंगा की धारा से प्रकाशित है

और साधक गण जब भाव विभोर

हो कर नाम उच्चारण करते हैं तो वे

आध्यात्मिक ध्वनि में स्नान करके

अपनी आत्मा का पवित्रीकरण करते हैं।

ऐसा प्यार ब्रह्माण्डीय स्थल है हमारा राम दरबार।

श्री राम दरबार में फूल या अनुष्ठान

या जटिल मंत्र या मुद्रा की आवश्यकता नहीं

बल्कि पवित्र भाव व अपने आपको समर्पण की नियत

ही काफी है

तथा प्रकृति के नाद को शाश्वत ज्ञान

से क्रीड़ा करने की अनुमति देकर

नश्वर जगत की पीड़ा व दुःख से राहत दिलवाना

ऐसा पवित्र है श्री राम दरबार।

परम गुरु राम में हमारे सभी गुरुजन  
निवास करते हैं।  
श्री राम दरबार में  
आपके भाव जो सागर की तरह उमड़ते हैं  
उनकी प्रतिध्वनि होती है  
प्रार्थना कीजिये व पुकारिए उन्हें  
माँ के आगे रुदन कीजिये  
प्रकृति के नाद द्वारा आपको अवश्य मोक्ष प्राप्त होगा,  
ऐसे प्यारे हैं हमारे राम।

मेरा राम दरबार को कोटिशेय प्रणाम  
मेरी नाद माता श्री को कोटि कोटि प्रणाम  
सदा आपश्री के चरण कमलों में ओ मेरे गुरुदेवगण  
ओ मेरे प्यारे राम

\*\*\*

**Shree NAAD ESHWARI RAAM**

*Hey Naad  
Hey Eshwari Maa  
Hey Prakriti shree  
O My Raam  
Pranam to Thee  
You are one  
The Eternal Universality  
Sarvashaktiman O my Raam.*

*Nirakar Shakti  
Nirakar Raam  
Jyoti swarup shabdik naad  
Hey paramdayalu Maa.  
O my eshwar  
I give name to you  
With sheer love O my Maa on  
This Navaratra----  
Naadhshwari Raam.  
Accept our naad bhav prarthana  
On this conjunction hour of  
Shree Shree Navaratra.  
On your Nine manifestive  
Swarupa  
Which unites all  
And diminishes evil  
Please accept our salutation  
As we know no mantra  
Never learnt Tantra  
But with tears in eyes  
Bhav in heart  
Shree naad in mind  
worship you in your days of  
Pious avataram.*

*Raaam is your eternal sound  
Resound n echoes  
As embodiment of power.  
You are Shakti  
You are Raam  
So O Ramashakti  
Bow unto your lotus feet.  
You remain  
Eternally Nirakar  
That vibrates across cosmos*

*And do manifest as Prakriti  
You are Shree Naad  
The Naad Brahma  
You are Naad Shakti Maa  
Your unattached lila  
Links and attaches all  
In the dynamic journey of  
Salvation  
Beyond the cause and effect of  
Birth and rebirth.*

*All creative action  
Passes through you O maaa  
---The Para Shakti.  
You are my Raaam  
Merciful Raaum  
Who is lilamaye eternally  
With a bliss of enlightenment  
Awaiting to bestow Ram Kripa  
To sadhak who finds Him  
In Shree Shakti, Shree Naad  
As all pervading Raaaaauuum.  
Aatmik Raaaaaaaauuum  
Aatmik Maaaaaaaaaaaaa.  
O my Raaaaaaaauuum*

## **श्री नाद ईश्वरी राम**

हे नाद

हे ईश्वरी माँ

हे श्री प्रकृति

मेरे राम

आप सभी को प्रणाम

आप सब एक हैं

अनंत सार्वभौमिक



सर्वशक्तिमान मेरे राम

निराकार शक्ति

निराकार राम

ज्योति स्वरूप शाब्दिक नाद

हे परम दयालु माँ

ओ मेरे इश्वर

मैं अथाह प्रेम से भरपूर

आप श्री को इस नवरात्र पर

नादेश्वरी राम

कह कर सम्बोधित करता हूँ।

हमारी नाद भाव से भरपूर प्रार्थना

कृपया स्वीकार करें, श्री श्री नवरात्र के

इस संयोजक पल पर।

आपश्री के नौ प्राकट्य स्वरूप

जो सबको संयुक्त करते हैं

व बुराई का नाश करते हैं

कृपया हमारी वंदना स्वीकार कीजिये।

हमें कोई मंत्र नहीं पता

न किसी तंत्र का ज्ञान है

पर इन अश्रु पूर्ण नेत्रों से

व हृदय से भरपूर भावों से

मन में श्री नाद को लिए

आपके इन पावन अवतरण दिवस पर

आपश्री का पूजन करते हैं।

राम आपकी शाश्वत ध्वनि है

जो शक्ति के रूप में प्रतिध्वनि करती है

आप शक्ति हैं

आप राम हैं

ओ मेरी रामशक्ति

आपश्री के चरण कमलों में

मेरी नतशिर वंदना

आप अनंत निराकार के स्वरूप में रहती हैं

जो समस्त ब्रह्माण्ड में गूँज पैदा करती है  
और आप प्रकृति के रूप में भी प्रकट होती हैं

आप श्री नाद हैं

नाद ब्रह्म

आप ही नाद माँ शक्ति हैं।

ओ माँ पराशक्ति-

आप की निर्लेप लीला

जनम व पुनर्जन्म के परे,

मोक्ष की गतिशील यात्रा में,

सभी को जोड़ती व बांधती है

व सभी रचनात्मक क्रिया आप ही से संभव है।

आप मेरे राम हो

करुणामय राम

जो अनंत लीलामय हैं

प्रबुद्धता के आनंद में

सदा राम कृपा बरसाने की प्रतीक्षा में,

उस साधक पर,

जो परमेश्वर को

श्री शक्ति व श्री नाद में श्री राम ही सर्वव्यापी हैं

ऐसा मानता है।

आत्मिक राम

आत्मिक माँ

ओ मेरे राम

\*\*\*

*Navaratra is a celestial conjunction for a rare antariksh Yagya. Deepest bhav in extreme silence of atman becomes ahuti in this Eternal Jyot of Maa ...unseen but felt everywhere. Pranam Hey Shakti... Para Shakti....*

एक विरल अंतरिक्ष यज्ञ के लिए नवरात्र एक ब्राह्मणीय संयोजक है । गहन भाव में आत्मा का नितान्त मौन दिव्य जोत में आहुति बन जाती है ... अनदेखी पर हर तरफ महसूस की गई... प्रणाम हे शक्ति ... परा शक्ति ...

\*\*\*

### ***Dousing the Flame of Cravings through Silence***

*Desire drives the craving instincts. This is a state of mind acts as "irresistible craving" and work at both d levels thought and action. This represents a chaotic sound (thought) within the silence of mind. This sound thought is like white ant which destroys the persona and changes the Karma and drives one to stoop low to appease the cravings of lower order. Craving makes us a victim of lust and lure which in turn brings pain and pathos to ruin our entity. Thus, in Maun Sadhana one is involuntarily trained to counter the "Craving mind". It alters our focus of attraction from body and brings us on soul plane. The cravings do come also from depravity but one learns through*

*Maun that "deprivation" is just a mind game and solutions embedded within waiting to be explored and unearthed. Over emphasizing self-appeasement and desirous fire of "More need" make us a stooge of our mortal entity and chance of mending Karma pattern is lost in the process. Cravings for luxurious food; craving for very high living; craving for sensuous pleasure of variety; craving for power and money are the common traits of mortals. Maun Sadhana clears this froth of craving as happiness is mortal and ananda or bliss is immortal are realized in the hours of silence. Eternal nectar or bliss is so intoxicating that the lure of outer world cannot penetrate. Shunning the cravings of mortal kind is not so tough if we have complete trust in Param Guru and ultimate faith in Guru. Because if one practises Maun Sadhana and turn the mind towards Guru or being Gurumukhi then the mortal "ills" like cravings fade away for sure. Because bliss lies beyond our body and that has been the destiny birth after birth. So, act now to silence the cravings for good.*

## राम नाम के मौन द्वारा लालसाओं की अग्नि को बुझाना

कामना लालसाओं को बढ़त देती है। लालसा एक ऐसी मानस स्थिति है जहाँ हम 'स्वयं को न रोक सकने' के क्षेत्र में रहते हैं। मन के मौन में यह एक आरकजकता का विचार का प्रतिनिधित्व करता है। यह ध्वनि सफ़ेद चींटी की भाँति है जो व्यक्तित्व व कर्म बदल देती है और और हम इतने नीचे गिर जाते हैं कि हम नीचे वर्ग की लालसाओं को पोषण करने लगते हैं।

लालसा हमें काम व प्रलोभन का दास बना देती है जिससे हमें दुख व पीडा का सामना करना पड़ता है और वह हमारे व्यक्तित्व को नष्ट कर देती हैं।

मौन साधना में हमें अनैच्छिक तौर पर लालसाओं से परिपूर्ण मन को जूझना आता है। यह हमारा ध्यान देह की बजाए आत्मा पर केंद्रित कर देता है। लालसाएँ हमें किसी कर्म की वजह से भी होती हैं पर हम जानते हैं कि यह सब मानस खेल हैं और इन सब के समाधान भीतर ही निहित हैं।

और ज़्यादा चाह की कामना हमें अपने नश्वरता की गुलाम बना देती है जिससे अपने कर्मों को सुधारने का कार्य बीच में ही कहीं गुम हो जाता है। शानदार भोजन की लालसा, बहुत आलीशान रहन सहन, विभिन्न प्रकार के कामुक रस, पद प्रतिष्ठा की लालसा हम इंसानों के आम चिन्ह हैं।

मौन साधना यह सब साफ़ करके .. सुख नश्वर है पर आनन्द अनश्वर ...इसकी अनुभूति मौन के द्वारा होती है। दिव्य आनन्द इतना नशीला होता है कि बाहरी जगत का आकर्षण इसे लुभा नहीं सकता। यदि हमें परम गुरु राम पर पूर्ण श्रद्धा व विश्वास है तो इन नश्वर लालसाओं को छोड़ना कठिन नहीं। यदि हम मौन साधना साथे और मन को गुरुमुखी करें तो यह कामनाएँ अवश्य दूर हो सकती हैं। आनन्द शरीर के पार है और यही नियति हर जन्म में रही है। सो इन लालसाओं को सदा के लिए शांत करने के लिए जुट जाइएगा।



*These are not just intellect or buddhi  
But eternal consciousness  
that rules the law of Divine  
I realize this O My Maa.*

*My karma is flower of your blessings  
my buddhi is the thread of your  
Intellectual garland  
which offer at your feet maa as  
Atmik bhakti o my maa.  
Allow me to live with love  
Teach me how to be merciful  
Train my attributes so that  
I work on behalf of you  
to spread compassion all around.  
Hey Naad Eshwari  
Teach me eternal love  
and modes of bringing peace  
whatever and wherever I see or reach.  
O karuna mayi Maa  
Accept my tears as naibidya  
my bhaava as argha  
me my self as arapan  
sacrifice unto you  
Hey Maa, Hey Naad, Hey Raaaaaauuum.*

## **नाद ईश्वरी शक्ति राम**

*हे नाद श्रीराम*

*आप श्री परम शक्ति हैं इस सकल ब्रह्माण्ड के*

*आप इश्वर हैं माँ*

*समस्त बीजों में से आपश्री सबसे शक्तिशाली बीज हैं*

जो समता के नियम के रूप में अंकुरित होती है

आप ही हमारे कर्म, चिंतन, भक्ति हैं

आप हमारी प्रबुद्धता की अनुमति बुद्धि द्वारा देती हैं

जो शाश्वतता को पार करने का ही आत्मा भाव है, ओ मैया

मेरे राम

मेरी भक्ति आप श्री के दिव्य गुणों का एहसास करना सिखाती है

जैसा कि परम पूज्य स्वामीजी महाराज

ने उद्घोषणा की है कि आप परम दयालु राम हैं

और आप सबसे करुणामयी हैं माँ

हे मेरे प्राण नाथ श्रीनाद

कर दीजिये मेरी बुद्धि को प्रकाशित

मेरे कर्मों को ठीक कर दीजिये

हमें भी प्रेम से परिपूर्ण व करुणामय होना है

माँ के गुणों के अनुसार ही कृत्य करने हैं

सभी सप्राण व निर्जीव प्राणियों के लिए एक सी अनंत करुणा रखनी है

सभी प्रकृति का ही स्वरूप हैं, ओ मेरी नादेश्वरी माँ



प्रेम, करुणा व दयालुता

ब्रह्माण्ड का समन्वय करते हैं

ऐसा मैं आपश्री के श्रीचरणों में बैठ के सीखता हूँ, हे नाद।

मुझे इस बात का एहसास होता है माँ

कि यह केवल ज्ञान या बुद्धि नहीं हैं

पर शाश्वत चेतना है, जो दिव्य नियमों का आधिपत्य करती है।

मेरे कर्म आपश्री की कृपा के पुष्प हैं

मेरी बुद्धि आपश्री की बौद्धिक माला का धागा है

जो आपश्री के श्रीचरणों में आत्मिक भक्ति के रूप में अर्पित है माँ।

मुझे प्यार से जीने की अनुमति दीजिये

मुझे कृपया करुणामय होना सिखाइये

मेरे गुणों को सिद्धा दीजिये

ताकि मैं आपकी ओर से सभी तरफ करुणा का संचार कर सकूँ

हे नानादेश्वरी मैया

मुझे शाश्वत प्रेम सिखाइये

और जो भी मैं देखूँ व जहाँ भी देखूँ

वहाँ शांति लाने के विभिन्न ढंग भी बताइये।

ओ करुणामयी माँ

मेरे अश्रुओं को कृपया नैवेद्य स्वीकार कीजियेगा

मेरे भावों को अर्घा के रूप में स्वीकार कीजियेगा

और मैं स्वयं को बलिदान के रूप में आपश्री को अर्पण करता हूँ।

हे माँ, हे नाद हे, हे राम

\*\*\*

*Aradhana for Maa in Navaratri are full of enigma and mysticism. Shakti is huge power for worshipping. The path is tough and challenging as Shakti aradhana means inviting power and imbibing in mind and body. Thus there are lots of challenges. So be aware of lure, conflicts, and diversions from aradhana. Its testing time friends. But Shakti is most loving and she surely empowers her upasaks.*

नवरात्रों में माँ के लिए आराधना गूढ़ पहेली व रहस्यवाद से भरपूर होता है। पूजा के लिए शक्ति एक विशाल सत्ता का स्रोत होती है। मार्ग मुश्किल व चुनौतीपूर्ण अवश्य है क्योंकि शक्ति आराधना का तात्पर्य है शक्ति को मन व देह में आमंत्रित करना। आराधना में लालसाएँ, संघर्ष व दिक् परिवर्तनों के लिए सजग रहिएगा। यह इम्तिहान का समय है। पर शक्ति अति प्रिय है और वे ज़रूर अपने उपासकों को सशक्त करती हैं।

\*\*\*

### **MANGALIK SHREE SHREE NAAD**

*Hey Maa*

*you are the lord of all Lila*

*you are Maya and you only*

*Remove all the ignorance*

*you unveil the absolute truth*

*O my Maa O my Raam.*

*You are Param Satya*

*the Eternal Naad... hey eshwar!*

*You gave us only Mantra  
Raaaaaaaauuuumm  
the Tarak Mantra  
For our coursing through life and times  
and seek salvation  
such is Maangalik Raam  
the Eternal Naad.*

*In the time and space of  
Sacred Navaratra  
you crystalize the eternal Naad  
and simple sadhak becomes  
Ram Naam yogis  
such loving you remain  
O my Maa  
O my Raaaaaam.*

*As we are coursing through  
Navaratra  
A realization dawns...  
You Shree Shree Naad  
becomes a swift mechanism  
To purify our soul  
And  
Improve our sadhanna  
Such compassionate you are  
O my Raaaaaauum.*

*Maa O maa  
as we worship you  
we need no riddhi and siddhi  
Just we want to become  
SADHAK of Ram Naam  
Worth its name nothing else  
O my Raaam.*

*Hey Naad  
Banish our ego forever  
Mash us as idol maker mash  
Mound of earth  
to create an Idol anew.  
Make us realize we are just dust  
And you make us what  
People refer us as... this and that*

*I remain mrrittika or soil  
Waiting to be shaped by you  
O my Mother.*

*Treat us as iron smiths do  
Burn n smash the rude ore.  
Be a sculptor to knife out a form  
what you wish me to be!  
Burn our avagun clean us  
as gold smith does  
to get the touch of kundan.  
All these  
Eternal naad do.  
So purify our soul  
mend our deeds  
So that Ram Naam remains only  
Path, mode and Goal  
HEY SHREE NAAD.*

*O MAA  
we do vandana  
only make us sadhak pure sadhak  
of eternal naad sadhana.  
Raam naad purifies one and all  
We cry O Maa  
Let Eternal Naad make us Humane  
Let Eternal Naad make our Character  
Let Eternal Naad make us selfless bridge  
Let Naad bhakti becomes  
Naad Bhava of love eternal love of Soul.  
Let your Eternal Naad  
Disillusion us  
about ever increasing maya  
And want we are lured and provoked always.  
Let Shree Naad make us realize  
That all are Raam  
All Reflects Maa  
And its their eternal shakti  
The pious and sacred Naad can undo  
Our aberrations  
And rescue from the mundane whirlpool  
Of mortality  
And salvage us from cyclic karma and its effects.  
Let we all get purify by Shree Naad*

*O my Maa, O my Eshwar, O my Raam,  
We pray  
we wish  
you will make us Sadhak  
And sadhana  
with complete surrender and  
shraddha becomes fruitful  
Hey Maaaaaaaaaaaa.*

*O my Raam Shree Shree Naad  
Kripa karo  
Kripa karo  
Kripa karo  
Hey Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

## **माँगलिक श्री श्री नाद**

*हे माँ*

*आप समस्त लीलाओं की परमेश्वर हैं*

*आप माया हैं और केवल आप ही*

*अज्ञानता मिटा कर*

*परम सत्य से परदा हटा सकती हैं*

*ओ मेरी माँ ओ मेरे राममममम ।*

*आप परम सत्य हैं*

*दिव्य नाद .... हे ईश्वर!*

*आपश्री ने हमें रामममममम मंत्र दिया*

*तारक मंत्र*

अनंत जन्मों से गुज़रते हुए

मुक्ति की चाह में

ऐसे हैं माँगलिक राम

दिव्य नाद ।

पावन नवरात्री के समय व क्षेत्र में

आप दिव्य नाद को उभारते हैं

और एक साधारण साधक

राम नाम योगी बन जाता है

ऐसी प्यारी आप रहती हैं

ओ मेरी माँ

ओ मेरे राममममममम ।

जैसे हम नवरात्रों में से गुज़रते हैं

एक अनुभूति की भोर होती है ...

आप श्री श्री नाद

एक तीव्र प्रक्रिया बनकर

हमारी आत्मा को पवित्र करके

और साधना में सुधार करती हैं

ऐसी करुणामयी हैं आप

ओ मेरे राममममममम ।

माँ ओ माँ

जब हम आपकी उपासना करते हैं

हमें कोई ऋद्धि या सिद्धी नहीं चाहिए

हम तो केवल राम नाम के साधक बनना चाहते हैं

उनके नाम के काबिल

और कुछ नहीं

ओ मेरे रामममम ।

हे नाद हमारे अहंकार

को सदा के लिए निर्वासित कर दीजिए

हमें मूर्तिकार जिस तरह मिट्टी को रौंधता है

एक नई मूर्ति का निर्माण करने के लिए ।

हमें यह अनुभूति करवाइए कि

हम केवल धूलि हैं

और आप हमें बना देते हैं

जो लोग हमें सम्बोधित करते हैं... ऐसा और वैसा

पर मैं तो धूलि ही रहता हूँ

इसी इंतज़ार में कि आप मुझे आकृति दोगी

ओ मेरी माँ ।

हमारे साथ ऐसा व्यवहार करिए

जैसे लोहार करते हैं  
जलाते हैं, तोड़ते हैं लोहे को  
एक मूर्तिकार के भाँति चाकू से  
आकृति रचिए, जैसे आप मुझे  
बनाना चाहती हैं!  
जला दीजिए हमारे अवगुण  
सुनार की भाँति धो डालिए  
कुंदन का स्पर्श लेने के लिए।  
यह सभी कार्य दिव्य नाद करते हैं।  
हमारी आत्मा सोपान कीजिए  
हमारे कृत्यों को सुधारिए  
ताकि केवल राम नाम ही  
हमारा पथ, साधन व गंतव्य रह जाए  
हे श्री नाद।  
ओ माँ  
हम वन्दना करते हैं  
हमें केवल साधक पवित्र साधक  
दिव्य नाद साधना के बना दीजिए।  
राम नाद एक व सभी को पावन कर देता है।



हम रोते हैं माँ

दिव्य नाद हमें करुणामई बना दें

दिव्य नाद हमारा चरित्र बना दें

दिव्य नाद हमें निष्काम सेतु बना दें

नाद भक्ति प्रेम का नाद भाव

आत्मा का दिव्य प्रेम बन जाए।

आपश्री का दिव्य नाद

हमें बड़ती हुई माया से निराशा दे

और कामनाओं की लालसा व प्रलोभनों से सदा ही हम

जकड़े रहते हैं।

हमें श्री नाद से यह अनुभूति हो कि सब राम हैं

सब माँ को प्रतिबिम्बित करते हैं

और यह उनकी दिव्य शक्ति

पावन व पवित्र नाद ही हमारे दोषों को

क्षमा कर नश्वरता के बेफजूल भँवर

से रक्षा प्रदान कर सकती हैं

और कर्मों के चक्कर से छुटकारा

दिला सकती हैं।

हम सब श्री नाद द्वारा पवित्र हो जाएँ

ओ मेरी माँ, ओ मेरे ईश्वर, ओ मेरे राम,

हम प्रार्थना करते हैं

हम इच्छा करते हैं

कि आप हमें साधक बनाएँगे

और सम्पूर्ण समर्पण के संग साधना करवाएँगे

ताकि हमारी श्रद्धा फलित हो जाए ।

हे माँ

ओ मेरे राम श्री श्री नाद

कृपा करो

कृपा करो

कृपा करो

हे राममममममममममममम

\*\*\*

## MY OWN QUOTES

*I relish the darkest part of the night which is just few minutes away from a break of dawn.*

*Moon is beautiful when seen at Night.*

*Divinity gives Ananda because it is beyond give and take of mortal world.*

*God is my Eternal friend and S/HE is epitome of a very cosy relation. Because God does not demand anything from me and I don't need to be formal to upkeep my Divine Love.*

*When mortally I suffer worst I realize I am nearer to my God yet alone; and not that lonely I felt  
while suffering mortally where nobody I found beside me.*

*Spiritualism is a journey in solitude and realization in isolation and then living in seclusion and  
aspiring for silent oneness with God.*

## **मेरे स्वयं के उद्धरण**

*मुझे रात्रि का गहरा अंधकार पसंद है जो भोर से कुछ ही क्षणों की दूरी पर होता है ।*

*चंद्रमा रात्रि में ही सुंदर लगता है ।*

*दिव्यता आनन्द प्रदान करती है क्योंकि वह संसार के लेन देन के पार है ।*

*परमेश्वर मेरे शाश्वत मित्र हैं और वे एक बहुत ही सुखकर संबंध के सार हैं । वह इसलिए कि परमेश्वर मुझसे  
कुछ अपेक्षा नहीं रखते और मुझे भी उनके साथ अपना दिव्य प्रेम अभिव्यक्त करने की औपचारिकता नहीं  
है ।*

*जब संसारी तौर पर मुझे क्षति पहुँचती है मैं अनुभव करता हूँ कि मैं अपने परमेश्वर के निकट हूँ पर अकेला;  
पर इसका मतलब यह नहीं कि मैंने अपने आप को अपनी पीड़ा के दौरान अकेला महसूस किया जब मैंने  
किसी को अपने संग नहीं पाया ।*

*आध्यात्मिकता शांति में एक यात्रा है और प्रबुद्धता एकांकी में और अलग रहकर परमेश्वर के साथ मौन  
साक्षात्कार ।*

\*\*\*

## **SHREE NAAD---The HEALER**

*Hey Maa  
you are source of all Naad  
you are Shakti Hey Maa.  
Again you are eternal solace  
Raaaaaaaaaauum.*

*You create and manifest  
Tell me how Shree Naad Heals  
Tell me O my Maa, O my Raaum  
You are Healer  
You mend and you salvage!.*

*I was told in following lines by Maa.*

*Eternity of sound and silence  
If you want to discover  
Then you need to utter in  
Sound and silence together  
and in one flow.  
It's not strange....  
Now you utter Ram  
RaaaaaaaaaaaaauM.  
Now realize  
you have uttered Ra Aum M  
In one stretch of sound.  
And utterance ended with Ma..  
Now in silence  
Maaaaaaaaaaaaaa is uttered  
in its constant flow starting from  
Sound to silence.  
Thus Shree Naad is like  
Ardhanarishwar  
Where silence is consort of Sound.*

*Together RaaaaauumMaa.....  
works at creative and manifestive  
Eternal Naad and coated  
With Mantrik power of sublime order.  
This is Shree Naad Maa and Raaum.  
Eternally they are healer of the cosmos.*

*Maa awakens the eternal thread  
within sadhaks atman  
as we do Her Aahovan.  
Upasana of Maa in Naad Shakti  
Perspectives  
Awakens Atman Tattwa  
That first do dusting of karmik entity  
then unveils the universality of  
Atmans Shakti...the eternal healer.*

*Maa rescues all and she is refuge  
for all ailing.  
Her healing Naad  
Ramamaye Bhava prays for all,  
without self interest.  
It heals all souls who are suffering  
through sound and silence through  
Light and ether Shakti.  
Such is Naadeshwari Raaam.*

*In this Navaratra  
Hey Maa O mere Raaum  
Give me power to realize your bliss  
Let I be instrument to heal all  
In my isolation and in my secrecy.*

*O Lord of all Lords  
Nirakar Shree Naadswarup  
RaaaaaaaauuuM  
Please make us realize  
That our life is to be creative healer  
For all and those be our karma  
And eternal sublime Healer  
To work within for serving all  
Known, unknown as you  
On behalf of Guru  
O my Maa.  
Yet I be blessed with EGOLESS  
Naad pratibimba  
And I be a silent healer  
And make all sattvik beings  
a healer of cosmic kind.  
Hey RaaaaaaaaaaaauuuM  
At your karunamaye Naad shree Charan  
we remain.  
Hey Maa beyond the healing  
And in Naadamay Attma tattwa  
you play with your Lila  
and you love all your creations  
such sublime you are O my Maa  
Such blessed we are Hey Maa.  
Aatmik pranam  
Accept our naad aahovan*

*our bandana Hey Maa.  
Give us Salvation O my Maaaaa.*

## **श्री नाद- वैद्य**

*हे माँ*

*आप ही हर नाद का स्तोत्र हैं*

*आप शक्ति हैं हे माँ*

*आप अनंत सांत्वना प्रदान करने वाली हैं*

*राम*

*आप रचती व अभिव्यक्त करती हैं*

*कृपया मुझे बताइये श्री नाद की आप*

*आरोग्यता कैसे प्रदान करती हैं*

*बताईये माँ, बताईये मेरे राम*

*आप आरोग्यता देती हैं*

*आप सुधारती हैं व उबारती हैं!*

*मुझे निम्नलिखित पंक्तियाँ माँ ने बतायीं।*

*अनंत की ध्वनि व मौन*

*अगर आप खोजना चाहते हो*

तो आपको ध्वनि व मौन में  
और एक धार के साथ उच्चारण करना होगा।  
यह अजीब नहीं है ....  
अब उच्चारिये राम  
राम  
अब एहसास कीजिये  
आपने रा ओम म  
को ध्वनि की एक ही सीध में उच्चारण है।  
और उच्चारण का अंत माँ से हुआ ....  
अब शान्ति में माँ का उच्चारण करिये  
एक सतत धारा के परवाह का आरम्भ होता है  
ध्वनि से लेकर मौन तक।  
श्री नाद अर्धनारेश्वर की भांति हैं  
जहाँ मौन ध्वनि की अर्धांगिनी हैं  
एकसाथ राममा  
जो इकट्टे रचनात्मक व प्रकाट्य स्तर पर  
अनंत नाद व उसकी मंत्र की शक्ति से ओत प्रोत  
एक दिव्य कार्य करते हैं।

यही हैं श्री नाद माँ और राम।

शाश्वत रूप से यह ब्रह्माण्ड के रोगहरता हैं।

माँ साधक के आत्मा में शाश्वत धागे

को जागरूक करती हैं

जैसे हम उसका आहवाहन करते हैं।

माँ की उपासना नाद शक्ति के रूप में

आत्मा तत्व को जगा देती है

जो की सबसे पहले कर्मों की धूलि को झाड़ते हैं

और फिर सार्वभौमिकता स्वरूप से

आत्मा शक्ति का अनावरण होता है --- शाश्वत रोगहारिणी ।

माँ सभी की रक्षा करती हैं और सब रोगियों की शरण हैं.

उनका स्वास्थ्यप्रद नाद रामाय भाव के साथ

सब के लिए निष्काम प्रार्थना करता है।

वे सभी तड़पती आत्माओं को

ध्वनि व मौन के साथ

प्रकाश व व्योम शक्ति के साथ

रोगरहित करती हैं।

ऐसी हैं नादेश्वारी माँ।



इन नवरात्रों में

हे माँ ओ मेरे राम

मुझे शक्ति दीजिये की मैं

आपकश्री के परमानंद का एहसास कर सकूँ

मुझे अपना यन्त्र बना लीजिये

अपने पार्थक्रय व गोपनीयता में

सबको निरोग्य करने के लिए।

हे शंशाहों के शहंशाह

निराकार श्री नादस्वरूप

राम

कृपया हमें यह एहसास दिलाइए

की हमारा जीवन सभी के प्रति एक

रचनात्मक आरोग्यसाधक

बनने के लिए कर्म हैं

एक शाश्वत दिव्य वैद्य हैं

जो भीतर से सबकी सेवा करे

परिचित या अपरिचित

जैसे आप

गुरु की ओर से करती हैं

ओ मेरी मैया।

मुझे अहंकार रहित होने का आशीर्वाद दीजिये

नाद प्रतिबिम्बा

में एक गुप्त वैद्य बनूँ

और सभी सात्विक प्राणियों को भी

दिव्य स्वरूप का वैद्य बनूँ।

हे राम

हमें अपने करुणामयी नादश्रीचरणों में सदा रखिये

हे माँ आरोग्यता व नादमयी आत्मतत्त्व के पार

आप अपनी लीला खेलती हैं

आप अपनी सभी रचनाओं को प्यार करती हैं

ऐसी दिव्य हैं आप ओ मेरी मैया

और ऐसे सौभाग्यशाली हैं हम हे मैया।

आपश्री को आत्मिक प्रणाम

कृपया हमारा नाद आह्वान स्वीकार कीजियेगा

और हमारी वंदना भी, हे माँ

हमें मुक्ति दें ओ मेरी माँ।

\*\*\*

*When we WISH good for others secretly and selflessly we serve nirakar Jyotishwarup Ram. Eternal jyot Heals.*

जब हम दूसरों के लिए गुप्त व निष्काम भाव से अच्छा सोचते हैं हम निराकार ज्योतिस्वरूप राम की सेवा तर रहे होते हैं। दिव्य ज्योत आरोग्य करती है।

\*\*\*

*When we pray for others actually we elevate ourselves.*

जब हम दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं तब हम स्वयं का ही उत्थान करते हैं।

\*\*\*

*Swamiji Satyanandji Maharajji Shree gave us maxim of life to do silent n constant sewa of praying for others. He actually transformed us empowered us with Ram Naam Shakti. SUCH GRACEFUL IS OUR LOVING SWAMIJI MAHARAJJI.*

स्वामीजी सत्यानन्दजी महाराजजी श्री ने हमें जीवन का सिद्धान्त दिया- प्रार्थना के रूप में दूसरों के लिए मौन व सतत सेवा करना। उन्होंने असल में हमारा रूपान्तरण करके हमें राम नाम शक्ति से सशक्त कर दिया। ऐसे हैं हमारे प्यारे सुश्री स्वामीजी महाराजजी।

\*\*\*

*Everybody lives for self and loved ones. Can you live just five minutes of your day with unknown and even with a plant and tree! They BLESS you eternally you powerfully.*

सभी अपने लिए व अपने प्रियजनों के लिए जीते हैं। क्या आप केवल पाँच मिनट दिन के किसी अज्ञात के लिए और पेड़ पौधों के लिए जी सकते हैं? वे आपको दिव्य व शक्ति रूप से आशीर्वाद देंगे।

\*\*\*

*A compassionate look can change life of others. Your eyes if powered with naam sadhana can emit blessings for those who are not so fortunates. Give blessings to others by a loving sublime look. It's a secret sewa. It bridges universal mind of Prakriti.*

एक करुणामयी नज़र दूसरों का जीवन परिवर्तित कर सकती है । यदि आपके नेत्र नाम साधना से सशक्त हैं तो वे उन सब के लिए जो इतने भाग्यशाली नहीं हैं , उनके लिए कृपा विस्तृत कर सकते हैं । अपनी प्यार भरी उदात्त दृष्टि के संग दूसरों को आशीर्वाद दीजिए । यह एक गुप्त सेवा है । यह प्रकृति का सार्वभौमिक मन को संयुक्त कर देती है ।

\*\*\*

*Patience is the pivotal hinge where upon Ram Naam Sadhana propels. Don't expect miracles rather create miracles by sadhana and tapasya.*

धैर्य वह निर्णायक काज है जहाँ राम नाम साधना प्रेरित करती है । चमत्कारों की अपेक्षा की बजाए साधना व तपस्या से चमत्कार रचिए ।

\*\*\*

*Ram Naam Consciousness is not looking at Nirakar Jyoti Swarup Raam from socio religious order. Rather we should look at the world from the stand point of Shree Ram and find HIS TATTWA in all. So that we can literally do find Ram all around. This is Ramamayeness.*

राम नाम चेतना निराकार ज्योति स्वरूप राम को सामाजिक धार्मिक दृष्टिकोण से देखना नहीं है । बल्कि हमें संसार को श्री राम की दृष्टि से देखना चाहिए और उनका तत्व सब में पहचानना चाहिए । इस तरह हम असल में राम को हर तरफ पा सकते हैं । यही राममय भाव है ।

\*\*\*

***Raam replaces "Me And Mine" as HE and HIS.***

*Shree Swamiji Maharajji Shree gave us path and destiny with one simple looking Mantra RAAM which can even transform the cosmic order such dynamic remains this word Ram, though very simple looking word. As a student of Maharishi Swami Dr Vishwa Mitteeji Maharaj Shree I learnt what self minus "I" means! Though bening Guru He did Raam Sewa as " Servant" and had been saying n practising whatever is being done its Swamiji Maharaj Shree is doing. Such is the concept of Surrender of "I" He taught, practised and preached.*

*In Ram Naam Sadhana only one "I " exist that is Raam. Sadhak put his all might or sadhya and sadhan to be on Sadhana path by means of complete surrender and constant remembrance of Ram Naam and siddhi is only when we loose I the Ego--" I The entity " "karma of I".*

*How to handle the ego which brings all the aberrations of life. Look I have a body so am given a name. That name courses through experinces of life and we create our I as if this I have done everything...! Think bit beyond. We do say our karma of past birth has brought the present and deliverables of present I will be creating path for future life. Now realize we have moved out of the "I" of our this body entity as I was there and I will be there after death also. So from our body entity we have already very easily travelled to Atmik I.*

*Now this aatman moves in time n space and many I or physical entities come to the fore life after life. Then we come to realize I of this body is just a point of temporary reference and it will go with the wind of time. So for a sadhak undermining I and transforming to I of Ram becomes achiveable. But to beget" I "of Ram we have to travel by "I" of Aatman tattwa.*

*An evolved soul realizes that its source is Paramatman and destiny is param guru Ram. So Realized soul easily surrenders the Atmik "I "to Ram Tattwa or Supreme "I".*

*Again this is possible when Guru Tattwa do the dusting of our karma and purify our deeds and brings about ATMANBODH. This realized Atman finds the functional meaning of universal mind of Paramatman.*

*Thus 'I ' of Sharir Tattwa must realize its only Aatman tattwa whoes samaskar one is follwing birth after birth.*

*Guru Tattwa blesses the Atman Tattwa n purifies its coating of deeds gathered over many births. Then" I "of Atman Tattwa surrenders to Ram Tattwa.*

*The realization of Ram Tattwa immediately lifts the Entity to His lap and one can easily destroy the baloon effect of Sharir Tattwas.*

*For all this Swamiji Maharaj shree told us to merge with Ram by means of complete surrender to Param Guru Ram. And mode He gave us--- Constant Remembetance of Ram Naam. This awakens the non attacking calm ego of Rama Tattwa which cleanses our mortal ego and absorbs all our deeds to give us a space in HIS EGO of Saguna Eternal Nirakar Jyoti Swarup Raaaaaum.*

*So we need not to engage ouself in a battle to win over our ego but we need only to live breathe and act on behalf of Ram and relish the self less Self.*

## राम 'में और मेरे' को 'उस और उसके' में परिवर्तित करता है

पूज्य स्वामीजी महाराजजी श्री ने हमें पथ व नियति दी केवल एक साधारण से दिखने वाले मंत्र राम से जो की ब्रह्माण्डीय नियम को भी बदल सकता है, ऐसी गतिशीलता राम शब्द में पायी जाती है , जो देखने में सर्वसाधारण शब्द लगता है। महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराज श्री का शिष्य रह कर मैंने यह सीखा कि स्वयं से "में " को निकालने का क्या अभिप्राय है ! गुरु रूप में वे राम काज एक दास / नौकर की भांति ही करते और कहते की जो भी कार्य हो रहा है वह सब स्वामीजी महाराजजी की ही करनी है। ऐसा " में" के समर्पण का भाव उन्होंने सिखाया , सिद्धाया व प्रचार किया।

राम नाम की साधना में केवल एक ही "में " का अस्तित्व है वो है राम। साधक अपनी पूर्ण शक्ति लगा देता है साधना के पथ पर सम्पूर्ण समर्पण व राम नाम के सतत सिमरन द्वारा और यह सिद्धि भी तभी प्राप्त होती है जब हम अपने अहंकार "में " , कार्मिक "में" को खो देते हैं।

इस अहंकार को कैसे काबू करें जो इतनी उलझनें ज़िन्दगी में लाता है। देखिये , मेरा शरीर है तो मुझे नाम दिया गया है। वह नाम ज़िन्दगी के विभिन्न अनुभवों से गुज़रता जाता है और हम अपने में की ऐसी रचना कर डालते हैं जैसे मैंने ही सब कुछ किया है.... ! इसके पर सोचिये। हम यह ज़रूर जानते हैं की हमारे पिछले जन्मों के कर्मों ने हमें यह वर्तमान का जीवन दिया तथा वर्तमान के कर्म भविष्य निर्धारित करेंगे। अब अनुभव कीजिये की हमने इस में को अपने शरीर से बहार कर दिया है, जैसे यह मैं पहले भी था और मृत्यु के पश्चात भी रहेगा। हमने अपने शरीर तत्व से बड़ी आसानी के साथ आत्मिक में तक की यात्रा कर ली !

अब यह आत्मा समय व क्षेत्र में विचरता है और बहुत शरीर तत्व इसके सम्मुख आते हैं जीवन पर्यन्त जीवन। तब हम यह अनुभव करते हैं की शरीर का मैं तो केवल क्षण भर का ही केंद्र बिंदु है और वह समय के

बहाव के साथ चला जायेगा। सो वह साधक जो स्वयं की मैं को राम की मैं में लय कर लेता है वही सफलता प्राप्त करता है। पर राम की मैं को पाने के लिए हमें आत्मा तत्व की मैं से गुज़ारना होगा।

एक विकसित आत्मा यह अनुभव करता है की उसका स्रोत परमात्मा है और नियति परम गुरु राम। तो प्रबुद्ध आत्मा आसानी से आत्मिक मैं को राम तत्व या सम्पूर्ण मैं में समर्पण कर देता है।

पर यह तभी संभव है जब गुरु तत्व द्वारा कर्मों की धुलाई कर दी जाती है व कृत्यों का पवित्रीकरण हो जाता है और तब वे आत्मबोध का आगमन करवाते हैं। यह प्रबुद्ध आत्मा तब परमात्मा के सार्वभौमिक मन का कार्यात्मक अर्थ ढूँढ लेता है।

शरीर तत्व के "मैं" को केवल आत्मा तत्व का अनुभव करना है जिसके संस्कार जन्मों जन्मों से चले आ रहे हैं।

गुरु तत्व आत्मा तत्व पर कृपा बरसाते हैं तब कई जन्मों के कृत्यों की धूल को धो डालते हैं व पवित्र कर देते हैं। तब आत्मा तत्व का "मैं" राम तत्व में समर्पण कर देता है।

राम तत्व की अनुभूति एक दम उस अस्तित्व को अपनी गोद में ले लेता है और शरीर तत्व के प्रभाव बहुत आसानी से नष्ट हो जाते हैं।

इस सब के लिए पूज्य श्री स्वामीजी महाराजजी ने हमें राम में विलीन होने को कहा, परम गुरु राम पर सम्पूर्ण समर्पण के साथ। और रास्ता उन्होंने बताया राम नाम का सतत सिमरन। यह राम तत्व की शांत मैं को जगाता है जो हमारी नश्वर अहंकार का पवित्रीकरण करती है और सारे कृत्यों को अवशोषित कर लेती है , ताकि हमें उस सगुन शाश्वत निराकार ज्योति स्वरूप राम में स्थान मिल सके।

इसलिए हमें उस युद्ध में नहीं पड़ना की हम अपने अहंकार के ऊपर विजय प्राप्त कर सकें अपितु हमें केवल राम की ओर से जीना, व स्वास लेना है और निष्काम स्वयं का रास पान करना

\*\*\*

### ***Shree Naad---The PURIFIER***

*O Maa  
sitting beneath your feet  
I do charan vandana.  
Hey Raaam Heey Naad  
Purify us  
Rescue us from our Deeds  
Salvage us O Naath  
O Maa please  
Manifest in us  
O karunamayi Maa  
O Naadeshwari Shaki --Maa.*

*Hey Shree Param Naad  
O Param Guru Ram  
we are fallen souls  
we have accumulated  
all the sins days after days  
Life after life  
as we suffer.  
Our buddhi has become our ego  
we have become shrewed  
to defend our karma and thought  
and we pretend to be high  
yet we are fallen souls.*

*Our mind is crooked  
as we suffer from our own deeds  
we survive like insects  
and swim in the drain  
where jealousy and conspiracy rule.*

*We are fallen soul  
O my Maa  
Desire lust and unending wish  
Runs our heart and  
Oils our body  
And we hide behind the idea of  
Rajaswik Guna  
But we are embodiment of Tamas.*

*O my Ram Paramdaylu Ram  
we know all this but*



*you have to rescue us  
as we are too feeble in karmic path.  
O maa please hold our Hands  
And give refuge in your Naad.*

*O Maa your eternal Naad  
Can awaken our Atman Tattwa  
Your wish can become  
Blessings of Guru Tattwa  
Your glance at us  
Can wash our deeds for good  
You are Akash Ganga  
O naad.  
Your cosmic acoustics  
Can light up the eternal light  
And enlighten our soul.*

*Hey Raam  
Kripa Karo Kripa karo  
and salvage us  
from our negations and  
Negative attributes.  
Allow bathing in your  
Eternal light  
So that we mend and improve  
and walk towards Sattvik Bhava.*

*O Shree Naad  
You are nirakar sound and silence  
You are eternal embodiment of  
Shree Gyan or Wisdom  
Do bless us  
So that we paddle towards  
Pure Ram Bhava  
Which makes me love all  
Hate none  
And wish universal good.*

*O maa  
with your hidden acoustic codes  
Let bliss be energised  
and we are enveloped  
by your grace.  
We become tool of benefic*

*in this world  
such be your blessings.  
Let we hurt none  
yet reduce our mortal instincts  
and serve you O Maa.*

*Ram Naam Tarak mantra  
Remains Universal Healer  
it manifests to adopt  
Divine attributes.  
So bless us O Ram  
that all Ram Naam Sadhak  
Must realize the influences  
Of Eternal Shakti Maa.  
It helps self and all to diminish  
Worldly cravings  
and help us to crash our Egoes.*

*O Naad O Maa O Ram  
Give us righteous character  
And purify our Karma  
As you are our Eternal  
ARADHYA  
and we only look upto you  
For purification and mukti  
O my loving Raaaaaaaaaaaauuuuuum.*

### **श्री नाद- शोधक**

*ओ माँ*

*आपके श्री चरणों में मैं चरण वंदना करता हूँ।*

*हे राम हे नाद*

*हमें पवित्र कीजिए।*

*हमें हमारे ही कृत्यों से रक्षा कीजिये।*

*ओ नाथ हमें ऊबारिये*

ओ माँ हममें प्रकट होईये

ओ करुणामयी माँ, नादेश्वरी शक्ति माँ

हे श्री परमं नाद ओ परम गुरु राम

हम गिरी हुई आत्माएं हैं

हमने कितने ही पाप दिनों दिन

व हर जीवन में एकत्रित कर लिए हैं

इसलिए हम पीड़ित होते हैं।

हमारी बुद्धि हमारा अहंकार बन गयी है

अपने कर्मों व विचारों की रक्षा करने में हम चालाक बन गए हैं

हम उच्च होने का नाटक करते हैं पर हैं गिरी हुई आत्माएँ

हमारा मन विकृत है

और जैसे हम अपने ही कृत्यों से पीड़ित होते हैं

हम कीट की भांति जीवित रहते हैं

और नालों में तैरते हैं जहाँ ईर्ष्या व षड्यंत्र एक नियम है।

ओ माँ हम गिरी हुई आत्माएं हैं

तृष्णा, कामनाएं व कभी न खत्म होने वाली इच्छाएं

हमारे हृदय को चलाती हैं व शरीर को तेल देती हैं  
और हम राजसिक गुण की ओढ़ में छिपे हैं जब की तमस की मूर्त हैं।

ओ मेरे राम परमदयालु राम  
हमें ये सब पता है पर  
आपश्री को हमारी रक्षा करनी है  
क्योंकि हम कर्मों के पथ पर बहुत कमजोर हैं।  
ओ माँ कृपया हमारा हाथ पकड़ लीजिये  
और अपने नाद में शरण दीजिये।

ओ माँ आपका अनंत नाद  
आत्मा तत्व को जागृत कर सकता है  
और आपश्री की इच्छा गुरु तत्व की कृपा बन सकती है  
आपश्री की दृष्टि हमारे कृत्यों को सदा के लिए धो सकती है  
आप आकाश गंगा हैं ओ नाद !  
आपश्री की के ब्रह्माण्डीय ध्वनियाँ  
शाश्वत प्रकाश को जगा कर  
हमारी आत्मा को प्रबुद्ध कर सकती है।

हे राम

कृपा करो कृपा करो

और हमें नकारात्मकता व दुर्गुणों से उबारो

हमें अपने शाश्वत प्रकाश में स्नान करने की अनुमति दें

ताकि हम ठीक व सुधर सकें और सात्विक भाव की तरफ चल सकें।

ओ श्री नाद

आप निराकार ध्वनि व शांति हैं

आप ही शाश्वत ज्ञान का अवतार हैं

हम पर कृपा कीजिये

कि हम पवित्र राम भाव की ओर चल सकें

जिससे हम सभी से प्रेम और किसी से घृणा न कर पाएं

और सार्वभौमिक अच्छाई की प्रार्थना कर सकें।

ओ माँ

हमारे गुप्त ध्वनिओं के संग

कृपया आनंद को सक्रीय करें

और आपकी कृपा से ओत प्रोत

इस संसार में हम भलाई करने का यंत्र बन सकें।

ऐसी कृपा करें।

हम किसी का हृदय न दुखाएं

और नश्वर इच्छाओं को कम करके

आप श्री की सेवा करें।

राम नाम तारक मन्त्र है और सार्वभौमिक आरोग्यकर्ता

व प्रकट होते हैं दिव्य गुणों को अपनाने के लिए।

ओ राम हम पर कृपा करो

कि हर राम नाम का साधक

शाश्वत माँ शक्ति

के गुणों के प्रभाव को अनुभव कर सके।

हमारी मदद कीजिये

सभी सांसारिक लालसाएं कम करने के लिए

तथा अहंकार का दमन करने के लिए

क्योंकि हम आपश्री को ही पुकारते हैं

अपने पवित्रीकरण व मुक्ति के लिए

ओ मेरे प्यारे राम

\*\*\*

*SKILL Management is in the Air. But the "Skill of Self Management" is most important and its safety requirement of human being. 'Self Management' is like Seat Belt that assures safety in case of crash as Life is very vulnerable. Spiritualism and Culture are important sectors of self and to remain safely rooted. GENERATION NEXT must have its EDGE.*

प्रवीणता प्रबंधन का आजकल ज़ोर है। पर 'स्वयं के प्रबंधन' में प्रवीणता सबसे महत्वपूर्ण है और वह मानव के लिए एक सुरक्षा आवश्यकता भी है। 'स्वयं का प्रबंधन' गाड़ी की सीट बेल्ट की तरह है जो गाड़ी की दुर्घटना के समय सुरक्षा का आश्वासन देती है, जीवन में बहुत जल्दी घायल होने की सम्भावना होती है। स्वयं के लिए तथा जड़ से सुरक्षित रहने के लिए आध्यात्मिकता और संस्कृति बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। अगली पीढ़ी के पास इसकी बढ़त होनी चाहिए।

\*\*\*

### **17 Ss of my Guru Aradhana**

*Samaskar, Sanskriti, Shruti, Smriti, Shabd, Shanti, Sannidhya, Santushti, Sanjyog, Samarpan, Sneha, Sankalpa, Suchintan, Suchita, Samabhava, Shreejan and Samvad.....*

*I AM SEARCHING GURU TATTWA THROUGH 17 Ss... THAT BLESSES A SADHAK FOR REALIZING RAMA TATTWA OR ESHWAR TATTWA.....*

*At the feet of Param Guru Ram.*

### **मेरी गुरु आराधना के १७ 'स/श'**

संस्कार, संस्कृति, श्रुति, स्मृति, शब्द, शांति, सानिध्य, संतुष्टि, संयोग, समर्पण, स्नेह, संकल्प, सुचिंतन, शुचिता, सम्भावना, सृजन और संवाद ... में गुरु तत्व की खोज इन १७ स/श द्वारा कर रहा हूँ ... जो साधक को आशीर्वाद देते हैं राम तत्व या ईश्वर तत्व को अनुभव करने हेतु ...

परम गुरु के चरणों में

\*\*\*

### **Experiencing Devi Shakti**

*Hey Param Guru Ram  
O my enlightened Nirakar  
Ramatattwa  
Do descend in your  
Eshwariya element  
Let O Lord of Lord Devi Tattwa  
Comes to all as  
Divine Avataram.*

*Hey Guru..the eternal Guru Tattwa  
Please guide us  
And make the celestial thing happen  
And please facilitate us  
To experience Devi Shakti.*

*O Guru dev.. how we beget  
This divine Experience.. Tell us  
O Maharishi...*

*"O my Child navaratra  
is just not some divine days  
Its a time of Celestial Conjunction  
A Divya Sandhya where Shakti  
Pervades in active mode  
All over the Space.*

*Ram Ram the Ram Naam  
the Naad sutra that connects this  
Maa Shakti of Energy field  
to be powered and empowered.*

*But dump your mortality aside  
For the moment  
Its not lila or maya  
Its not happiness or just mortal smile.*

*O vatsa the body remains impure  
keep that aside for this  
Celestial conjunction.*

*Raam naam and matri shakti  
Aradhana can purify our manas  
Pray desperately Pray so that*



*Even for few seconds  
You are not victim of maya and illusion.*

*You have had thousands of body buddhi  
And ego in hundreds of births  
But nothing you could hold on.*

*Realizing Atman tattwa  
is no easy o Sakha.  
Jeeva Tattwa... and sharir tattwa  
Are enveloped with karma and its effect  
Suffering illusion maya make you blind.*

*Be in Raamamaye Bhava  
Its not emotion of sharir tattwa  
Its Manas getting Connected  
With Universal Manas  
To give you spark of  
Enlightenment and wash off ignorance  
Our body and buddhi carry  
As ego only make us even feel divine.*

*Say I am nothing  
I have no one not even the body  
as mine.  
This state of Functional Manas  
not just a sporadic belief  
can open up a window of consciousness  
Equivalent to head of a pin.*

*Bhav in worldly patterns  
Are sukhad or dukhad  
But Maa Bhava Shakti Rup  
is beyond state of emotive feelings.*

*This Bhava is divine bhava  
It resides in Manas or eternal content  
Of Atma Bhava  
And has nothing to do with our emotions  
and heart as mortal relates.*

*Devi Shakti is all pervading  
in this time of conjunction*

*Relate it as if it is being experienced  
by atma tattwa...*

*Aatman under the control of  
Guru Tattwa  
Make the realization dawn  
That we will move away from  
Sharir Tattwa which is just a  
Temporal space created by maya.*

*Jeeva tattwa elevates  
As deeds are cleaned  
After it experiences  
Maa shakti ...the pure cosmic  
Energy field.*

*Our senses do not perceive it  
and it's beyond touch taste smell  
Or acoustics.  
Its AKARAN BHAVA  
That creates physical disconnect  
And cosmic connect  
And huge elevation  
The Manas experiences in its  
Cloud like float and  
sachitananda remains the  
Last residue of manas memory  
The body knows  
As rest of it is beyond  
Your body perception  
O Vatsa.*

*Maa the eternity is always around you  
so He the Param Guru Ram  
But our mayajal of dogmas doctrines  
Rituals and toil of body  
and luggage of karma distances all.*

*Let every milimeter of brain  
Know nothing but Ram  
Every space in your body is filled  
By Maa Shakti then  
we can realize the concept of  
Simran and complete surrender*

*Even for your mortal 5 minute  
O my son.*

*Preparing self for experincing Maa  
Takes many hundred births  
But Ram naam can shorten  
the process of Realizing  
RAMATATTWA  
and ensuring salvation for sure.*

*So O my child do your karma  
Do your dharma or duty  
but know it as pure MAYA and  
scripted Lila a trap like illusion as well.  
But pure Ram Bhava  
Brings shine in Atman  
And allows merger. He wishes this only  
beyond the karma.....*

*Get Disillusioned about  
on going all around  
Hold the hand of Maa  
And Maa only  
To beget her love  
To get over this Bhavsagar*

*Eternal Ram Cosmic Mother  
Its here in You  
Yet why search elsewhere  
No one nothing is purest pure  
Other than Our Ram our maa.  
Experince this bliss.....  
Maa nirguna Shakti  
what she was before SHE wished  
To create cosmos.....*

**देवी शक्ति का अनुभव**

*हे प्ररम गुरु राम*

*ओ मेरे प्रबुद्ध निराकार राम तत्व*

अपने ईश्वारिये स्वरूप में

कृपया उतरिये

कृपया देवी तत्व के शहंशाहों के शहंशाह

दिव्य अवतरण के रूप में हम सब के पास आएं।

हे गुरु .... शाश्वत गुरु तत्व

कृपया हमारा मार्ग दर्शन करें

और वह दिव्य

अनुभूति देवी शक्ति को अनुभव

करने दीजिये।

ओ गुरुदेव ...

हम कैसे इस दिव्य अनुभूति

को अनुभव कर सकें...

कृपया हमें बताएं ओ महर्षि

"ओ मेरे बच्चे,

नवरात्र केवल कोई आम ही दिव्य दिन नहीं है

वे दिव्य संयोग का समय है,

एक दिव्य संध्या

जहां शक्ति अपने सक्रीय भाव

में सम्पूर्ण क्षेत्र पर व्याप्त होती है।

राम नाम का राम राम

यह नाद सूत्र संचालन व अधिकार हेतु

माँ के ऊर्जा क्षेत्र

से जोड़ देता है।

पर अपनी नश्वरता

को एक पल के लिए त्याग दो

यह कोई लीला या माया नहीं

नहीं खुशी व केवल नश्वर मुस्कराहट

ओ वत्स्य,

शरीर तो सदा अशुद्ध ही रहता है

उसे एक तरफ रख दो इस दिव्य संयोग के लिए।

राम नाम और मैत्री शक्ति की आराधना

हमारे मन को पवित्र कर सकती है।

गाड़ तड़प के साथ प्रार्थना करो

की केवल कुछ क्षणों के लिए भी

तुम माया और भ्रम के वशीभूत न हो जाओ

तुम्हारी हज़ारों शारीरिक बुद्धियाँ

और अहंकार

कितने ही जन्मों से संग रहे हैं

पर तुम कुछ भी न पकड़ पाये।

आत्म तत्व को अनुभव करना

कोई आसान कार्य नहीं है, मेरे सखा!

जीव तत्व और शरीर तत्व कर्मों

व उसके प्रभाव से ओत प्रोत हैं

माया व भ्रम से ग्रस्त ये तुम्हें अँधा कर सकते हैं।

राममय भाव में रहो

यह शरीर तत्व की भावनाएं नहीं हैं

यह मन उस सार्वभौमिक मन से मेल कर रहा है तुम्हें

प्रबुद्धता की झलक देने के लिए

अज्ञानता को धो डालने के लिए

हमारा अहंकार तो केवल शरीर व बुद्धि

को लेकर परमात्मा को ही महसूस करवाता है।

कहो मैं कुछ नहीं हूँ मेरा कुछ नहीं,

यह शरीर तक नहीं मेरा

यह केवल कोई छूट पुट विश्वास नहीं

बल्कि कार्यात्मक मानस है

जो कि चेतना की खिड़की

एक सुई के सर जितनी खोल सकता है।

सांसारिक स्वरूप में भाव

सुखद या दुखद होते हैं

पर माँ भाव का शक्ति रूप

इन सब भावात्मक अनुभूतियों के पर है।

ये भाव दिव्य भाव है

यह मानस या आत्मा तत्व की शाश्वत सामग्री में निवास करता है

और हमारी नश्वर भावनाओं व हृदय से

इसका कुछ लेना देना नहीं।

देवी शक्ति सर्वव्यापक है

इस संयोग की घड़ी में इससे

ऐसे सम्बंधित हों की

यह सब आत्म तत्व ही अनुभव कर रहा है

आत्मा जो गुरु तत्व के नियंत्रण में है

ऐसे अनुभव का आरम्भ करें

की हम शरीर तत्व से दूर जा रहे हैं जो

की माया का रचा हुआ एक लौकिक क्षेत्र है।

जीव तत्व उभरता है

जैसे कृत्य पवित्र होते हैं

तब वह माँ शक्ति के

पूर्ण पवित्र शाश्वत ऊर्जा क्षेत्र को अनुभव करता है

ओ वत्स.

हमारी इन्द्रियाँ इसे अनुभव नहीं कर सकती

यह सुगंध व् स्पर्श व ध्वनि के पार है।

यह अकारण भाव है

जो भौतिकता से अलग हो कर

दिव्य सम्बन्ध जोड़ता है।

मानस भारी ऊंचाई अनुभव करता है

अपने बादल जैसे नाव में

और केवल सच्चिदानंद ही

इस शरीर की मानस स्मृति में अंतिम निचोड़ की तरह रह जाता है

और बाकी सब तो शरीर के अनुभव के पार होता है।

माँ, शाश्वतता सदा तुम्हारे अंग संग हैं

ऐसे ही परम गुरु राम पर हमारी माया जाल

के सिद्धांत व नीतियां शरीर के

विभिन्न अनुष्ठान व कर्मों के बोझों सदा इनसे दूर कर देते हैं।

ओ मेरे बच्चे

हमारे मस्तिष्क के हर मिलीमीटर

को केवल राम के इलावा कुछ न पता हो



हर क्षेत्र इस शरीर का केवल माँ शक्ति से परिपूर्ण हो

तब हम सिमरन के विचार को समझ सकते हैं

सम्पूर्ण सम्पर्पण के हेतु

केवल पांच मिनट के लिए ही सही।

माँ को अनुभव करने के लिए

कितने सौ जामों की तैयारी लग जाती है

पर राम नाम रामतत्व को अनुभव करने के लिए

सारी क्रिया छोटी भी कर सकता है

और मुक्ति का आश्वासन भी देता है।

सो मेरे बच्चे

अपने कर्म करो

अपने धर्म निभाओ

पर यह जानो की वह पूर्ण माया ही है

और लिखित लीला ऋम का जाल ही है।

पर पवित्र राम भाव आत्मा में चमक लाता है

और विलीनता की अनुमति देता है।

उसकी यह इच्छा होती है कर्मों के पार...

जो कुछ तुम्हारे आस पास हो रहा है

उससे उदासीन हो जाओ माँ का

और केवल माँ का हाथ थामो  
उसका प्यार पाने के लिए  
इस भवसागर से पार उतरने के लिए।  
शाश्वत राम जो दिव्य माँ हैं  
वे यहीं तुममें हैं  
क्यों कहीं और ढूढ़ते हो  
कोई भी कुछ भी पवित्र से पवित्र नहीं है  
हमारे राम हमारे माँ के इलावा  
यह आनंद अनुभव  
करो माँ निर्गुण शक्ति को  
वह क्या थी इस इस ब्रह्माण्ड  
की रचना की इच्छा करने से पहले..

\*\*\*

### ***Bhavsagar sey paar hai Maa key Divya Dwar.***

*Jeeva aur ye tan maya va mohamahey hai yeh adhyatmik manas ko sankuchit karta hai.*

*Maya ke star sey upar uthkey Aadhatmik MAA ko pana hai.*

*Ayeye es tan ko Maa ji Key mandir Banaye.*

*Es maan ko Raam Matra saff karey.*

*Maa Ke AKARAN KRIPA ko anubhav karey. RAM RAM*

जीहवा और यह तन माया व मोहमाया है , यह आध्यात्मिक मानस को संकुचित करता है ।

माया के स्तर से ऊपर उठकर आध्यात्मिक माँ को पाना है ।

आइए इस तन को माँ जी का मंदिर बनाएँ ।

इस मन को राम मंत्र साफ़ करे ।

माँ की अकारण कृपा को अनुभव करे । राम राम

\*\*\*

*Eshwar leen hona hai to jeevan key har maya aur es sambandho ke Lila jaal sey upar uthna hai.  
Eshwar ekak aur siraf akeley ke anubhut hain.*

*Aap aur Eshwar....ekakak aur ekant.*

ईश्वर लीन होना है तो जीवन की हर माया और इन संबंधों के लीला जाल से ऊपर उठना है ।

ईश्वर एक और सिर्फ अकेले एक अनुभूत हैं ।

आप और ईश्वर .... एकाएक और एकांत

\*\*\*

### **Maun Sadhana ek Adbhut GHATANA.--Abhi Abhi Pata Chala**

*Just I am told that a sadhak doing Maun sadhana and while doing Naam jaap he found Shree Shree Swamiji MAHARAJ' Sloka automatically being recited within and in continuous fashion. The following lines were being recited within while the naam jaap was being done by Sadhak consciously.*

*This eternal mantra be read as a special meaning on this Navaratran Maun SADHANA and its epitome of Divine message that visits sadhak.*

*I recall while interviewing sadhaks I have met people who had alukik experiences during Maun Sadhana. Sadhak do experience this INVOLUNTARY RECITATION OF Cosmic Power Mantra emitting from within as SHABDA FAWARA OR SOUND FOUNTAIN. To my understanding this is*

*the state when Sadhak gets connected with INAUDIBLE Sound which flows as Jyoti in cosmos all the time. Swamiji Maharaj Shree is indicating all that today.*

*Ram is ultimate benevolent swarup and formless form. Ram naam is ultimate for eternal welfare of all and for all we must bow to this eternal Shakti of ram who is not only mangalik but most powerful of all the power that runs the cosmos. He assures salvation from mortality for sure.*

*BE IN THIS BHAVA and realize this recitation experience of Sadhak as an indication to all Sadhaks by Swamiji Maharaj Shree. Such loving is our guruan and Param guru Ram.*

*What a Naad Yagya is Maun Sadhana gifted to us by our PARAM DAYALU*

## मौन साधना एक अद्भुत घटना -- अभी अभी पता चला

अभी पता चला कि मौन साधना के दौरान जब एक साधक नाम जप कर रहा था उसने अनुभव किया कि श्री श्री स्वामी जी महाराजश्री का श्लोक स्वयं ही अपने आप गाया जा रहा था एक सतत रूप में। निम्न लिखित पंक्तियाँ भीतर गाई जा रही थी जब नाम जप चेतन अवस्था में किया जा रहा था ...

सर्वशक्तिमते परमात्मन् श्री रामाय नमः

यह सनातन मंत्र एक विशेष महत्व के साथ इस नवरात्रि मौन साधना में करना चाहिए और इसका दिव्य संदेश साधक के समक्ष आता है। मुझे स्मरण आ रहा है कि मौन साधना के दौरान जब मैं साधकों से भेंटवार्ता कर रहा था, जिन्हें आलौकिक अनुभूतियाँ हुई थी। साधकों को ऐसी अनुभूति होती है जब स्वयमेव दिव्य शक्ति द्वारा मंत्र भीतर से ही एक शब्द फ़व्वारे या ध्वनि फ़व्वारे के रूप में गाया जाता है। मेरी समझ के अनुसार यह वह स्तर है जहाँ साधक न सुनने वाली ध्वनि से जुड़ जाता है जो ब्रह्माण्ड में सदा ज्योति के रूप में बहती रहती है। स्वामी जी महाराजश्री यही आज संकेत कर रहे हैं। राम सर्वोच्च करुणामय स्वरूप हैं और निराकार रूप। राम नाम सर्वोच्च दिव्य सद्भावना हैं सभी के लिए और सभी की ओर से हमें इस राम की दिव्य शक्ति के समक्ष नतमस्तक होना चाहिए जो कि ना केवल माँगलिक है पर उन सभी शक्तियों से शक्तिशाली जो ब्रह्माण्ड में गतिशील हैं। वे नश्वरता से मुक्ति का आश्वासन देते हैं।

इस भाव में रहिए और अनुभव कीजिए कि यह स्वयमेव साधक का मंत्र उच्चारण होना एक संकेत है सभी स्वामी जी महाराजश्री के साधकों के लिए। ऐसे प्यारे गुरुजन हैं हमारे और परम गुरु राम।

क्या नाद यज्ञ यह मौन साधना के रूप में हमारे परम दयालु ने हमें उपहार में दी है।

\*\*\*

*Where there is thoughtlessness there exists thought too. Empty mind is the desired state.*

*जहाँ विचार होंगे वहाँ निर्विचारता भी होगी । शून्य मानस ही इच्छित स्तर है ।*

\*\*\*

*Vision of life is not seeing upto the horizon but perceiving the coming of the unseen.*

जीवन का दृष्टिकोण क्षितिज तक ही देखना नहीं बल्कि अनदेखे को महसूस कर लेना है ।

\*\*\*

*Will you be diplomatic with your own self? Then why pretend before God can't we just surrender to HIM.*

क्या आप स्वयं के साथ भी कूटनीति करेंगे ? तो परमेश्वर के समक्ष क्यों ढोंग करते हैं, क्या हम परमेश्वर पर पूर्ण रूप से समर्पण नहीं कर सकते ?

\*\*\*

*Where impact of sorrow ends happiness ceases to function. Attachment fades and only VIRAHA for Supreme remains. Then it means your mind space has merged into cosmic space.*

जहाँ दुख का प्रभाव समाप्त हो जाए और खुशी की अहमियत खत्म हो जाए.. आसक्ति धुँधला जाए और केवल परमेश्वर के लिए विरह रह जाए तो समझिए कि आपका मानस क्षेत्र ब्रह्माण्ड के क्षेत्र में विलीन हो गया है ।

\*\*\*

*Consciousness beyond the relativity of truth is CHAITNYA BHAVA.*

चेतना सत्य की सापेक्षता के पार चैतन्य भाव है ।

\*\*\*

*Samajh ney pey baat hai  
ya  
baat mey samajh na!*

समझने पर बात है

या बात में समझना !

\*\*\*

*The gross reflection of  
divine is seen  
in the beauty of nature,  
beautiful feathered birds,  
myriad of colour and forms of animals,  
aesthetically divinely created colourful fishes  
and finally human being.  
Stroke of artistic excellence  
are created by divine.  
God is in every life form and  
even in lifeless nature of manifestation.  
Divinity awaits  
the beholder to see and experience the mystique.*

*परमेश्वर का सकल प्रतिबिम्ब*

*प्रकृति की सुंदरता, पक्षियों के सुंदर पंखों*

*असंख्य रंगों व रूपों वाले पशु*

*दिव्य सौंदर्य द्वारा रति गई रंग बिरंगी मछलियाँ*

और अंततः मनुष्य में देखा जाता है ।

कलात्मक उत्कृष्टता की रचना परमेश्वर

करते हैं ।

परमेश्वर हर जीव जन्तु में विराजमान हैं

और जड़ वस्तुओं की अभिव्यक्ति में भी ।

दिव्यता इंतजार करती है इस रहस्य को उपासक देखे

व अनुभव करे ।

\*\*\*

*Maya is Gross and subtle is the divine play.*

माया सकल व सूक्ष्म रूप से दिव्यता की क्रीड़ा है ।

\*\*\*

*Ram Naam is Nirakar Naad Eshta which with bliss is seen by saints with many hues of eternal light some of them are seen in dhyana bhava. It creates Lila: it mani...fests with many constructs and deconstructs; this is eternal destiny for mortality and begins a journey for immortals too.  
Raaaaauuuuuuummm*

राम नाम निराकार नाद ईष्ट हैं जो आनन्द स्वरूप में संतों द्वारा ध्यान भाव में विभिन्न दिव्य प्रकाश के संग दृष्टिगोचर होते हैं । वे निर्माण व विध्वंस की अभिव्यक्तियों में लीला रचते हैं; यह दिव्य नियति हैं नश्वरता के लिए और अनश्वरता की यात्रा का आरम्भ होता है । "राम"

\*\*\*

*When aberration, addiction, jealousy, enmity or anger make you slave then remember Raam Naad Bhav aradhana with 24 x7 simran and constant Jaap provides you a na...ad pugdandy so that you can walk upto Raam despite of many mortal ills. RAM is Maa waiting to pardon us once we submit ourself to HER with complete Shraddha.*

*Naad Shree Ram can mend our karma if we do Naam jasp with utmost shraddha and complete submission. It has the power of auto correction.*

*Purest form of Prem Bhava comes from sumiran or unuttered "Raam Raaam" naad that goes towards eternal silence.*

*Purest energy source comes from Naad Brahmand. Jaap with immense Raam Bhava gives you the eternal CONNECT in this Mortal body. Such is Ram Naad Naam Aradhana Swamiji Msharaj Shree prescribed for us. Raaaaaaaaaaaauuuum*

जब पतन, व्यसन, ईर्ष्या, शत्रुता व क्रोध आपको गुलाम बना देता है , तो राम नाद भाव को स्मरण कर , 24x7 सिमरन व सतत जाप आपको नाद पगडंडगी प्रदान करता है जिससे आप नश्वरता से व्याधिग्रस्त होने के बावजूद राम तक जा सकते हैं ... ।राम माँ इंतज़ार कर रही हैं क्षमा करने के लिए ... एक बार यदि हम सम्पूर्ण श्रद्धा से यदि समर्पण कर दें ।

नाद श्री राम हमारे कर्मों को सुधार सकते हैं यदि हम सम्पूर्ण श्रद्धा व समर्पण के साथ नाम जाप करें । उनके पास स्वयं को सुधारने की शक्ति है ।

सबसे पावन प्रेम भाव सुमिरन से आता है या बिना उच्चारण किया गया " राम राम " नाद जो दिव्य शांति की ओर अग्रसर होता है ।

सबसे पवित्र शक्ति का स्रोत नाद ब्रह्माण्ड है । गहन श्रद्धा के साथ जाप आपका दिव्य संबंध इसी नश्वर देह में जोड़ देगा । ऐसी राम नाम आराधना स्वामी जी महाराजश्री ने हमारे लिए निर्धारित की है ।

"राम"

\*\*\*

*Pran spandan is pulses of Naad. Ram Naam is core of Anhad.*

प्राण स्पंदन नाद की कंपन है । राम नाम अनहद का मूल है ।

\*\*\*

*Constant remembrance of Raam Naam enlivens a chord called Naad bhava which is purest Sumiran of Raaam Anhad Naad.*



राम नाम का सतत सिमरन नाद भाव की तार को सजीव कर देता है जो कि राम के अनहद नाद का सबसे पवित्र सिमरन है।

\*\*\*

*Naad bhava is communication process that reaches to the needy as Ram Naad Prarthana heals. More intensive is jaap the quicker is the healing.*

नाद भाव ऐसी संचार की प्रक्रिया है जो ज़रूरतमंद के पास पहुँचती है वैसे ही राम नाद प्रार्थना उसे आरोग्य कर देती है। जितना जाप गहरा होगा उतनी ही जल्दी घाव भरते हैं।

\*\*\*

*Naam saatwik uccharan purifies the space. Naad mandir of Ram is built in the body of Naam Sadhak.*

सात्विक नाम उच्चारण क्षेत्र को पावन कर देता है। नाम साधक के शरीर में नाद मंदिर का निर्माण हो जाता है।

\*\*\*

*Ram Naam aradhana is all about exploring sound and silence that finally lights up as jyot which is higher frontier of realization of Naam Sadhana.*

राम नाम आराधना ध्वनि और मौन की खोज ही है जो अन्तः ज्योति के स्वरूप में प्रकाशित होता है , जो नाम साधना की उच्चतर सीमांत का अनुभव है।

\*\*\*

*Ram Naam Sadhak creates Naad Rangoli in mind space as the row of naad mala takes inner coiling circle with naad and anhad to rediscover the self the atmaik consciousness that merges as greater consciousness of cosmos until merges wit Paramatman.*

राम नाम साधक, मन के क्षेत्र में नाद रंगोली की रचना करता है जैसे ही नाद माला की पंक्ति भीतर ही भीतर नाद से लेकर अनहद तक एक चक्र बना कर, आत्मा की चेतना को पुनः खोज निकालती है जो ब्रह्माण्ड की अधिक बड़ी चेतन शक्ति में विलीन हो जाती है जब तक अंततः परमात्मा में लीनता न पा ले।

\*\*\*

*Jaap is bhav aradhana which makes us closer to Rama bhava as we grow with our melodiousness Raaaaaaaaaaaauuuum.*

जैसे जैसे हम अपने मधुरमय राम के संग बड़ते जाते हैं, जाप-भाव आराधना हमें राम भाव के समीप ले कर जाती है।

\*\*\*

*Love in Maun is Simran of Ram Naam. Bhakt and Bhakti merges in soundlessness.*

राम नाम सिमरन और कुछ नहीं अपितु मौन में प्रेम है। मौन में भक्त और भक्ति का ऐक्य हो जाता है।

\*\*\*

*The sweetest Naad Aradhana becomes sublime when Ram dhun travels like whisper of naad while doing jaap in silence.*

मधुरतम नाद आराधना दिव्य बन जाती है जब शान्ति में जाप करते हुए राम धुन नाद की एक धीमी सी आवाज़ में यात्रा करती है।

\*\*\*

*Maun Sadhana and simran is like counting gems of Raam in Pranalaya where Shree Raam resides within.*

मौन साधना और सिमरन ऐसे जैसे राम के मोती की प्राणालय में गिनती कर रहे हों जहाँ श्री राम विराजमान हैं।

\*\*\*

*Maun with Raam naad on Silent space sketches the path for bhaav upasana. This brings awareness of Ramatattwa.*

राम नाद का मौन, शांत क्षेत्र में भाव उपासना का मार्ग प्रशस्त करता है। यह रामतत्व की अनुभूति लेकर आता है।

\*\*\*

*A Sadhak when does Ram Naam Simran, Jaap or Dhyan s/he actually connects with anhad of Ramamaye silence that opens up third eye or dasham dwar. Shree Naad in jyoti rup opens the celestial window of dasham Dwar which is highest in meditative contemplation.*

साधक जब राम नाम सिमरन, जाप व ध्यान करता है तो वह असल में राममय मौन के अनहद नाद से जुड़ जाता है जिसके कारण तीसरा नेत्र या दशम द्वार खुल जाता है। श्री नाद, ज्योति के स्वरूप में दशम द्वार की दिव्य खिड़की खोल देते हैं, जो कि ध्यानावस्था का उच्चतम मनन है।

\*\*\*

*Nirakar Raam becomes Jyoti swarup beyond Anahd naad.*

अनहद नाद के पार निराकार राम ज्योति स्वरूप बन जाते हैं।

\*\*\*

*Ram naam Jaap and Simran are counting jewels of Aradhya Naad tarang or frequency which connects the supreme consciousness.*

राम नाम जाप और सिमरन अराध्य नाद तरंग के मोतियों की गिनती है जो परमपुरुष की चेतना से जोड़ देता है।

\*\*\*

*Bhava, bhakti and vandana unite at Raam Naad Shree.*

भाव, भक्ति और वंदना राम नाद श्री में एक हो जाते हैं।

\*\*\*

*Raam naad mala is created and offered at the feet of Param Guru Raam with every mala is done by Ram Naam Sadhak.*

राम नाद माला की रचना होती है और उसे हर माल के साथ साधक द्वारा परम गुरु श्री राम के चरणों में अर्पण किया जाता है।

\*\*\*

*Naad Shree is mode; Ram Shree aradhya in Naam Sadhana.*

*Shree Naad is Shree Ram of Naam Jaap Aradhana.*

नाद श्री साधन है; नाम साधना में राम श्री आराध्य हैं।

श्री नाद नाम जाप आराधना के श्री राम हैं ।

\*\*\*

*Shree Raam empowers Ram Naam sadhak with His eternal Shakti.*

*Feel him within and face the outer with His Chaitanya Shakti.*

श्री राम, राम नाम साधक को अपनी दिव्य शक्ति से सशक्त करते हैं । उन्हें भीतर महसूस कीजिए और बाहरी जगत का उनकी चैतन्य शक्ति से सामना कीजिए ।

\*\*\*

*Ram is pinnacle of Solace and tranquility. Anant Jaap allows proximity to this state.*

राम शांति व धैर्य के शिखर हैं । अनंत जाप इस स्तर का सानिध्य दे सकता है ।

\*\*\*

*Eternal Raam resides in brilliance of cosmic light and Ram Naam sadhak becomes a deepak of that sublimity.*

दिव्य राम ब्रह्माण्ड के प्रकाश के तेज में विराजते हैं और राम नाम साधक इस उदात्ता का दीपक बन जाता है ।

\*\*\*

### ***Sublime Eternity is My Raaam***

*O My mangalik Ram  
You are the Chetana  
You are Chitanya  
Residing in my Manas Mandir  
Hey My loving Raaaaaum.*

*Your Name Sublime is My  
Consciousness O my Ram  
As you are my Jaap and  
you are Tapasya*

*And you are only company of my  
Sadhna satsang of life beyond.*

*You are source of all resources  
that energises the cosmos  
and with your own bhava  
you beam chaitanya frequency  
for celestial bliss  
Which attracts the manas  
Bring appreciations  
Of your presence and eternity.  
O Ram you are the core of beauty  
You are melody of all the music  
You are the cause and effect of atmik  
Manifestation.  
You are bhava murti  
You are aradhya supreme  
You are my Chaitanaya Manas  
Raaaaaaaaaaaaauuum.  
Keep all of us at your feet  
Hey Param Guru Hey Raaaum.*

### **अनंत दिव्य स्वरूप हैं मेरे राम**

*ओ मेरे माँगलिक राम  
आप चेतना हैं  
आप ही चैतन्य  
मेरे मन के मंदिर में विराजमान हैं  
हे मेरे प्यारे राम ।*

*आपश्री का दिव्य नाम  
मेरी चेतना शक्ति है  
क्योंकि आप ही मेरे जाप हैं  
और आप ही तपस्या  
और आप ही मेरे परलोक के साधना सत्संग*

के मेरे संगी साथी हैं ।

आप ही सभी साधनों के आधार हो  
जो इस ब्रह्माण्ड को शक्ति प्रदान करता है  
और आप अपने भाव से  
चैतन्य तरंग की किरण दिव्य आनंद  
प्रदान करने के हेतु चमकते हैं  
जो कि मन को आकर्षित करके  
आपकी अनुभूति व अनश्वरता  
का रस पान कराता है ।

ओ राम आप सौंदर्य का सार हैं  
आप सर्वस्व संगीत के स्वर माधुर्य हैं  
आप प्रत्यक्ष आत्मा के कारण और प्रभाव हैं ।

आपश्री भाव मूर्ति हैं  
आप ही पूर्ण पुरुष आराध्य हैं  
आप मेरे चेतन मन हैं

राम

हम सब को अपने श्री चरणों में रखिएगा  
हे परम गुरु हे राम!

\*\*\*

### **RAM INSTALLS HIMSELF IN SADHAK'S HEART**

O my Raaaaum  
You are epitome of love  
You are bhakti and you are bhakta

*You are param dham  
Of Pavan Prem.  
You only allow bhav Sadhana  
O my Raaum.  
You are the icon of eternal love  
You yourself install your bhava murti  
In Sadhak  
Such loving you are O my Raaum.  
Wherever you are seated  
You make that your own Temple  
Of Bhava Aradhana.  
Such loving sadhana you become  
O my param punya prem pratima  
Hey My Raauum.*

**राम स्वयं ही अपने आपको साधक के हृदय में स्थापित करते हैं**

*ओ मेरे राम*

*आप सर्वोच्च्य प्रेम के प्रतीक हैं*

*आप ही भक्ति और आप ही भक्त हैं*

*आप पावन प्रेम के*

*परम धाम हैं।*

*ओ मेरे राम*

*आप केवल भाव साधना को अनुमति देते हैं।*

*आप शाश्वत प्रेम की मूरत हैं*

*आप स्वयं ही अपनी भाव मूर्ती साधक में स्थापित करते हो।*

*ऐसे प्यारे हो आप ओ राम*

जहाँ भी आप विराजमान होते हैं

वहाँ ही अपना भाव आराधना का

मंदिर बना लेते हैं

इतनी प्रेममयी साधना आप स्वयं बन जाते हैं

ओ मेरे परम पुण्य प्रेम प्रतिमा

हे मेरे राम

\*\*\*

### **ETERNAL LOVE IS MIRRORED**

*O my Sakha, O my Raaaum  
Amongst all the things I love  
You are the highest of my Prem  
And me possessive about you  
As am your possession of Param Bhava.  
You are so dear and loving  
O my Raam  
I see you in mirror  
As am not there... its you and you only  
O my Raam.  
Param prem, Hey Param Guru  
Reflects in me as  
Am your love bhava of eternity  
Only reflecting as your reflections  
Which is you and your grace  
O my love, O my Raaauum.*

**अनंत प्रेम हुआ प्रतिबिंबित**



ओ मेरे सखा, ओ मेरे राम  
जिन भी चीजों से मुझे प्रेम है  
उनमें से सबसे उत्कृष्ट प्रेम आप से है  
और मेरा आपके लिए स्वामीगत (possessive ) भाव है  
क्योंकि मैं आपके प्रेम भाव के अधिकार में हूँ  
ओ मेरे राम  
मैं आपको आइनेमें देखता हूँ  
पर मैं वहां नहीं हूँ..... वहां आप और केवल आप हैं  
ओ मेरे राम  
परम प्रेम, हे परम गुरु  
मुझ में ऐसे प्रतिबिंबित होइए  
जैसे कि मैं आपके शाश्वतता का प्रेम भाव हूँ  
केवल आपकी परछाई को ही प्रतिबिंब कर रहा हूँ  
जो आप ही हैं और आपकी कृपा  
ओ मेरे प्रेम,, ओ मेरे राम

\*\*\*